सम्पादक :
डा० हारून रशीद सिद्दीकी
सहायक :
मु० सरवर फ़ारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय :
**मासिक सच्चा राही!**
मजलिसे सहाफ़त व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 787250
फैक्स : 787310
e-mail : nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि :

| | |
|---|---|
| एक प्रति | रु० 9/- |
| वार्षिक | रु० 100/- |
| विशेष वार्षिक | रु० 500/- |
| विदेशो में (वार्षिक) | 25 US डालर |

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा, लखनऊ - 226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित किया।

हिन्दी मासिक

# सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

अगस्त 2002 वर्ष 1 अंक 6

## भलाई के कामों में जल्दी

हुजूर (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने फरमाया कि सात चीज़ों से पहले भलाई के कामों में जल्दी करो : – कहीं ऐसी ग़रीबी न आ जाए जो सब कुछ भुला दे, ऐसा धन न आ जाए जो उद्दण्ड (सरकश) बना दे, ऐसा रोग न लग जाए जो निकम्मा करके रख दे, ऐसा बुढ़ापा न आ जाए जिसमें बुद्धि भ्रष्ट हो जाए, कहीं मौत न आ जाए (और सब धरा रह जाये), या दज्जाल आ जाए या क़ियामत आ जाए जो बड़ी भयानक है।

(हदीस)

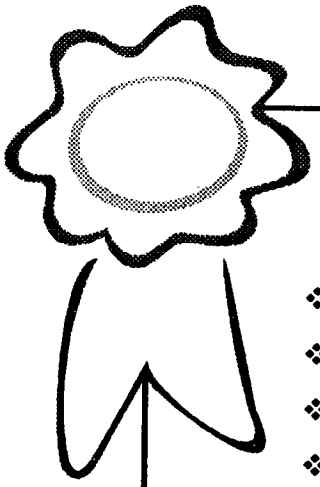

# विषय सूची


| | | |
|---|---|---|
| ❖ निषिद्ध ऊँच नीच | – सम्पादकीय | 3 |
| ❖ कुर्आन की शिक्षा | – मुहम्मद उवैस नदवी रह० | 5 |
| ❖ प्यारे नबी की प्यारी बातें | – अब्दुल हयी हसनी रह० | 6 |
| ❖ ग़ज़ल | – हफ़ीज़ मेरठी | 7 |
| ❖ दो रास्ते | – सय्यद अबुलहसन अली नदवी | 8 |
| ❖ आल इण्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड का उद्घाटन भाषण | – नाज़िम नदवतुल उलमा | 11 |
| ❖ सरापा रहमत | – अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी | 13 |
| ❖ आदर्श शासक | – अब्दुस्सलाम क़िदवाई | 16 |
| ❖ ख़राबियां कहां से आ रही हैं | – मुहम्मदुल हसनी | 18 |
| ❖ आपकी समस्याएं और उनका हल | – मु० सरवर फ़ारूक़ी | 20 |
| ❖ माहौल की सुरक्षा | – अब्दुर रहमान | 21 |
| ❖ स्वतंत्रता आन्दोलन में मुसलमानों की भूमिका | – प्रो० शान्तिमय राय | 23 |
| ❖ क़रीन, हमज़ाद और भूत | – अबू मर्ग़ूब | 25 |
| ❖ सब्ज़ी खाने वाले होशियार | – अबू सारिम | 27 |
| ❖ माँ का दूध ख़ुराक भी दवा भी | – डा० एम०ए०आर० सिद्दीक़ी | 28 |
| ❖ इस्लाम तलवार से नहीं, | – सैय्यिदा फ़रीदा नुज़हत | 29 |
| ❖ सूज़ान | – मु० जावेद अशरफ़ नदवी | 30 |
| ❖ ईमान प्यारा या जान प्यारी | – अमीनुद्दीन शुजाउद्दीन | 32 |
| ❖ सैलानी की डायरी | – मुहम्मद हसन अन्सारी | 34 |
| ❖ याक़ूब अलैहिस्सलाम के बाद | – अहमद अली नदवी | 35 |
| ❖ आओ उर्दू सीखें | – इदारा | 37 |
| ❖ नारी का कर्तव्य | – मुसअब उसमान क़ुरैशी | 38 |
| ❖ भ्रष्टाचार एक कलंक | – मुहम्मद अली जौहर | 39 |
| ❖ अंतर्राष्ट्रीय समाचार | – मुईद अशरफ़ नदवी | 40 |


❑❑❑

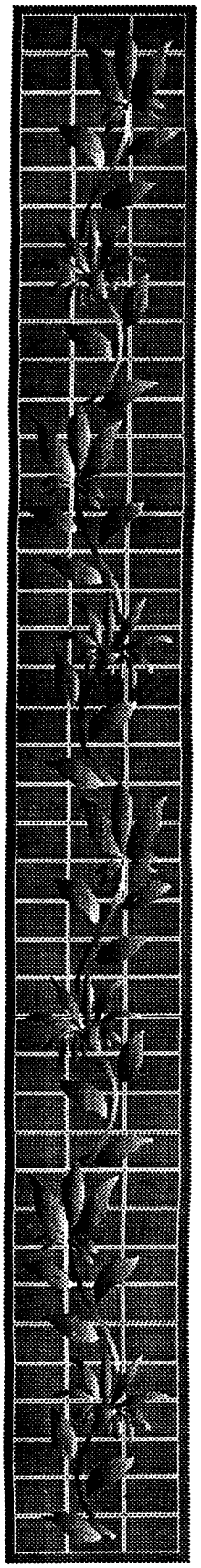

# निषिद्ध ऊँच नीच और छुवा छूत

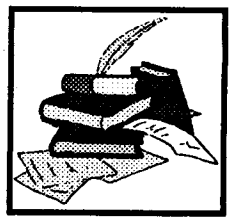

*डा० हारुन रशीद सिद्दीक़ी*

पिता का आदर पुत्र के लिये अनिवार्य है। गुरु की सेवा शिष्य का कर्त्तव्य है। बड़े भाई का सम्मान छोटे भाई का धर्म है। माँ बेटी से कहीं ऊँची है। पौत्री दादी से कहीं नीची है। तो क्या यह ऊँच–नीच निन्दनीय है? कदापि नहीं। क्या मंत्री तथा संत्री, अधिकारी तथा कर्मचारी, कर्मचारी तथा चपरासी, श्रमिक तथा प्रबन्धक के बीच ऊँच–नीच नहीं है? अवश्य है। क्या इनके श्रम में, कार्य सरलता और कठिनाई में, वेतन में, सम्मान में अंतर नहीं है? अवश्य है। फिर क्या यह ऊँच–नीच और सामाजिक अंतर निषिद्ध नहीं है? कदापि नहीं। क्या क्षय रोग के रोगी के जूठे बरतन में पानी न पीना, खाना न खाना उसके कपड़े प्रयोग न करना, खुजली वाले से दूर रहना, मद्यप (शराबी), बीड़ी, सिगरेट तथा तम्बाकू प्रयोग करने वाले के पिये गिलास में पानी न पीना छुवा–छूत नहीं है? अवश्य है। तो क्या यह छुवा–छूत निषिद्ध है? कदापि नहीं। एक व्यक्ति को पागल कुत्ता काट लेता है, दो सप्ताह पश्चात् वह व्यक्ति पागल सा हो जाता है, डाक्टर कहता है कि ख़बरदार अब कोई इसे छुए नहीं, इसको जंगलेदार कमरे में बन्द कर दो, इसके बरतन अलग कर दो, इसको दूर से भोजन परोस दो, तो क्या यह छुवा–छूत निषिद्ध नहीं है? कदापि नहीं। तो फिर समाज का वह कौन सा ऊँच–नीच है जो निषिद्ध है, और वह सामाजिक समानता के विरुद्ध है? और वह कौन सा छुवा–छूत है जो बुद्धिजीवियों के निकट निन्दनीय है?

एक मनुष्य अपने पिता का आदर करता है अपने भाई का सम्मान करता तथा अपने हर बड़े का आदर करता है। इसी प्रकार वह अपने छोटों से आदर पाता है, इस आदर तथा सम्मान में मनुष्य को अपमान का ख़याल भी नहीं आता, अपितु उसे गर्व का आभास होता है, तथा इससे वह आनन्दित होता है। यह मनुष्य की प्रकृति है। इसी प्रकार सामाजिक तथा सांस्कृतिक आवश्यकताओं के अंतर्गत एवं विभिन्न योग्यताओं के कारण ऊँचे–नीचे पदों तथा विभिन्न व्यवसायों पर जो लोग दिखाई देते हैं यह ऊँच–नीच भी निन्दनीय नहीं बल्कि अभीष्ट है। इस ऊँच–नीच से कुछ लोगों को कुछ फ़ील तो हो सकता है, परन्तु वह फेल होने वाले विद्यार्थी की भांति दुखी तो होते हैं लेकिन पास होने वाले को स्वीकार कर लेते हैं, वह जानते हैं कि न हर व्यक्ति मंत्री बन सकता है न संत्री के बिना मंत्री का काम चल सकता है, अतः यह ऊँच–नीच न निन्दनीय है न निषिद्ध, वास्तव में वह ऊंच नीच निषिद्ध है जिसका संबंध जन्म से जोड़ा जाता है कहते हैं इसने पासी, या हरिजन आदि के यहाँ जन्म लिया है इसलिए यह नीच है। यह पंडित के यहाँ जनमा है अतः यह ऊँच है। मुसलमानों में भी यह रोग घुस आया है जिसका सुधार आवश्यक है।

इसी प्रकार जिस छुवा–छूत का संबंध रोग आदि से है वह निषिद्ध नहीं है, अपितु वह छुवा–छूत निषिद्ध है जिसका संबंध जन्म से हो। जैसे कोई कहे कि यह हरिजन घर में पैदा हुआ है यह हमारा बरतन नहीं छू सकता, यह दलित के यहाँ जन्मा है, यह जिस वस्तु को छू ले उसे हम खा नहीं सकते इसी प्रकार की बीसियों मिसालें हैं। निःसंदेह यह छुवा–छूत वर्जित है। इस छूत–छात को दूर करने

की बड़ी कोशिशें की गईं, कानून बनाया गया महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने स्वयं इसके विरोध में झाड़ू देने वालों के साथ खाया। जिनको नीच समझा जाता था उनको ऊँचे पद दिये गए और बड़ी सीमा तक यह बुरी प्रथा दूर हुई परन्तु देहातों में यह कुप्रथा अब तक शत प्रतिशत विद्यमान है। नगरों में कम अवश्य हुई है परन्तु मौजूद है। आप किसी सफाई मजदूर के हाथ से किसी मंदिर के पुजारी को मिठाई खिलवाकर या शरबत पिलवा कर देखिए अन्दाज़ा हो जाएगा।

क्या यह कलंक का टीका भारत से दूर न होगा? अवश्य दूर होगा लेकिन इसकी जड़ें बहुत गहराई तक हैं, इसीलिए इसके दूर होने में बहुत देर है। आज यूरोप के देशों में, अरब देशों में, अमरीका में, जापान में, आस्ट्रेलिया में जाकर देखिए इस छूत–छात का कहीं पता नहीं, और अगर कहीं हो भी तो अत्याचार है मानवता की तौहीन है। दुर्भाग्य की बात है कि इस्लाम ने अ़रबी, अ़जमी और काले, गोरे के भेदभाव को समाप्त करने की घोषणा की थी और करके भी दिखाया परन्तु वही इस्लाम जब भारत में आया तो यहाँ के ब्रह्मणों से प्रभावित होकर रहा। सन् 1950 के आस पास की बात है, एक जल्से को सम्बोधित करते हुए जगजीवन राम जी ने कहा था कि "दुर्भाग्य की बात है कि समानता का आदर्श प्रस्तुत करने वाले मुसलमान जब हमारे पंडितों के बीच कुछ समय रहे तो आज उन की यह दशा हो चुकी है कि अगर कोई घुनिया किसी सय्यद से कहे कि मेरी बेटी का निकाह अपने बेटे के साथ कर लीजिये तो असम्भव नहीं कि वह घुनिया के मुख पर थप्पड़ मार दे। मुसलमानों में छूत–छात तो आज भी नहीं है परन्तु ऊँच–नीच का दोष मौजूद है। भारतीय समाज से इस दोष को दूर करने में मुसलमान अच्छा रोल अदा कर सकते हैं।

❑❑❑

## टीपू सुल्तान के विषय में महात्मा गाँधी की टिप्पणी

महात्मा गांधी की वह टिप्पणी भी पठनीय है जो उन्होंने अपने अखबार 'यंग इंडिया' में 23 जनवरी, 1930 ई० के अंक में पृष्ठ 31 पर की थी। उन्होंने लिखा था कि –

"मैसूर के फ़तह अ़ली (टीपू सुल्तान) को विदेशी इतिहासकारों ने इस प्रकार पेश किया है कि मानो वह धर्मान्धता का शिकार था। इन इतिहासकारों ने लिखा है कि उसने अपनी हिन्दू प्रजा पर जुल्म ढाए और उन्हें ज़बरदस्ती मुसलमान बनाया, जबकि वास्तविकता इसके बिल्कुल विपरीत थी। हिन्दू प्रजा के साथ उसके बहुत अच्छे सम्बन्ध थे। ..... मैसूर राज्य (अब कर्नाटक) के पुरातत्व विभाग (Archaeology Department) के पास ऐसे तीस पत्र है, जो टीपू सुल्तान ने श्रृंगेरी मठ के जगद्गुरु शंकराचार्य को 1793 ई० में लिखे थे। इनमें से एक पत्र में टीपू सुल्तान ने शंकराचार्य के पत्र की प्राप्ति का उल्लेख करते हुए उनसे निवेदन किया है कि वे उसकी और सारी दुन्या की भलाई, कल्याण और खुशहाली के लिए तपस्या और प्रार्थना करें। अन्त में उसने शंकराचार्य से यह भी निवेदन किया है कि वे मैसूर लौट आएँ, क्योंकि किसी देश में अच्छे लोगों के रहने से वर्षा होती है, फसल अच्छी होती है और खुशहाली आती है।"

❑❑❑

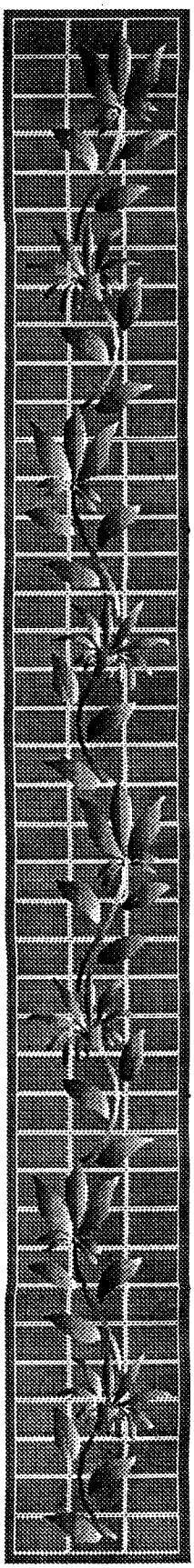

# क़ुर्आन की शिक्षा

– मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी(रह०)

### ज़कात:

**व आतुज़्ज़कात।** (और ज़कात देते रहो) **(बक़र आयत 83)**

अल्लाह तआ़ला ने जो माल दिया है, यदि वह ज़रूरत से अधिक हो तो साल़ में एक बार उसमें से एक नियत मात्रा अल्ला की राह में ख़र्च करने को ज़कात कहते हैं। ज़कात देने से माल कम नहीं होता है बल्कि पाक और बरकत वाला हो जाता है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़र्माया है कि **"सद्का लोगों का मैल है"** (बुखारी) अर्थात यह उन के तमाम मैल और गन्दापन को छाँट कर पाक व साफ़ बना देता है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़र्माया कि "जो आदमी सोने चान्दी की ज़कात नहीं देता है, क़ियामत में उसके माल की तख़्तियाँ बना कर उस का माथा और बग़ल दागे़ जाएंगे। माल को साँप बना दिया जाएगा, वह साँप उसको डसता रहेगा। जो लोग जानवरों की ज़कात नहीं देते उनके जानवर क़ियामत में उनको काटते और रौन्दते होंगें। (मुस्लिम)

ज़कात के सिवा जबभी अवसर मिले आदमी सदक़ा ख़ैरात ज़रूर करे। हज़रत अबू मसऊद अंसारी (रज़ि०) बाज़ार में मज़दूरी करते थे और जो कुछ मिलता था उसको अल्लाह की राह में सदक़ा करते थे। हज़रत सलमान फ़ार्सी (रज़ि०) मदाइन के हाकिम थे, पांच हज़ार दीनार (सालाना) वेतन था, जब यह रक़म मिलती तो ख़ैरात कर देते और ख़ुद चटाई बुनकर खाने पीने का सामान पैदा करते। (तबक़ात इब्ने सअ़द 4 : 87)

### रोज़ा:

**या अय्युहल्लज़ीन आमनू कुतिब अ़लैकुमुस्सियाम (2 : 87)**

ऐ मुसलमानों रोज़ा तुम पर फ़र्ज़ किया गया है। साल भर में एक महीना रमज़ान का आता है, अल्लाह तआ़ला का हुक्म है कि मुसलमान इस महीने में रोज़ा रखें, रोज़ा रखने का मतलब यह है कि दिन भर न कुछ खाएं न पियें। ज़बान से बुरी बात भी न निकाले, दूसरी रोकी हुई चीज़ों से भी रुकें।

अल्लाह तआ़ला ने कहा है कि रोज़ा रखने से पाकी पैदा होती है। रसूलुल्ललाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने कहा है कि रोज़ा दोज़ख से बचाव की चीज़ है। (बुखारी)

सहाबा (रज़ि०) को रोज़ा रखने का इतना शौक़ था कि जब ज्ञात होता कि घर में खाने की तंगी है तो कहते आज मैं रोज़े से हूँ। (बुखारी)

सहाबी औरतें इतने रोज़े रखती थी कि उनके शौहरों को तकलीफ होती थी, आख़िर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आदेश दिया कि कोई औरत अपने शौहर की आज्ञा बिना नफ़्ल रोज़ा न रखे।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया कि रोज़ेदार को चाहिए कि ख़राब बातों से बचे, अगर काई उससे झगड़ा करे या गाली दे तो उससे कह दे कि मैं रोज़े से हूँ गाली का जवाब न दूँगा।

रोज़ेदार के मुँह की हल्की गन्ध अल्लाह के निकट मुश्क कस्तूरी की सुगन्ध से उत्तम है।

### ह़ज्ज:

**व लिल्लाहि अ़लन्नासि हिज्जुल बैति**
(आलि इम्रान 97)
*(और अल्लाह का ह़क़ है लोगों पर उस घर का ह़ज्ज करना)*

अ़रब देश में एक नगर है "मक्का" यह वही नगर है जहाँ हमारे रसूल मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) पैदा हुए थे। इस नगर में एक घर का नाम काबा है उसको अल्लाह का घर कहते हैं। मक्के में और भी बरकत वाली (शुभ) जगहें हैं। मुसलमान यहाँ जाते हैं और अल्लाह के कुछ अहकाम (आदेश) पूरे करते हैं, इसी का नाम ह़ज्ज है। रसूलुल्लाह सल्ललाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिस शख़्स के पास ह़ज्ज के सफ़र का सामान है और वह मक्के तक पहुँच भी सकता है लेकिन फिर भी ह़ज्ज नहीं करता तो उसको अधिकार है कि वह यहूदी होकर मरे या नसरानी बन कर (तिर्मिज़ी 812) अर्थात उसने इस्लाम से अपना सम्बन्ध तोड़ लिया। (अनुवादक)

फ़रमाया कि ह़ज्ज और उमरा गुनाहों को इस प्रकार धो देते हैं जिस प्रकार भट्टी लोहे, सोने और चान्दी के मैल और खोट को साफ कर देती है।

*(तिर्मिज़ी 810)* ❑❑❑

# प्यारे नबी की प्यारी बातें

*अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी (रह़०)*

**दुन्या का जाल :**

हज़रत मुसव्विर बिन मख़्रिमा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया खुदा की क़सम मैं तुम्हारे लिए फक्र व फाका से नहीं डरता लेकिन मुझे डर है कि तुम्हारे लिए भी दुन्या उसी तरह न फैला दी जाए जैसे तुमसे पहले के लोगों पर फैला दी गई थी, तो तुम उससे महब्बत करने लगो जिस तरह कि वह महब्बत करने लगे थे, और जैसे उन को (आखिरत से) ग़ाफ़िल किया तुमको भी कहीं ग़ाफ़िल न कर दे।

**(बुख़ारी)**

**दुन्या से महब्बत करने वाले का हालः**

ह़ज़रत अबूहुरैरा रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है फरमाते है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया : दीनार व दिरहम का बन्दा (अर्थात रुपये पैसे का चाहने वाला) तबाह व बरबाद हुआ, अगर उसको दिया जाए तो खुश और अगर न दिया जाए तो नाराज़ होता है।

**इन्सान की तमन्नाएं ख़त्म नहीं होतीः**

हज़रत अनस बिन मालिक और हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि अगर इन्सान को सोने की एक खान मिल जाए तो वह चाहेगा कि उसको दो खाने मिल जाएँ, उसके मुंह को मिट्टी ही भर सकती है। (अर्थात उसकी तमन्नाएं जब तक मौत न आ जाए ख़त्म नहीं हो सकती) अल्लाह तआ़ला तौबः करने वाले की तौबः कुबूल करता है।

**(बुखारी, मुस्लिम)**

**कियामत में चार सवाल :**

हज़रत अबू बरज़ा अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया किसी बन्दे के कदम न हटेंगे जब तक चार बातों के संबंध में न पूछ लिया जाएगा।

**हज़रत इब्ने मस्ऊद रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया कि तुम में से कौन ऐसा है जिसको उसके वारिस का माल अपने माल से ज़ियादा महबूब हो सहाबा रजियल्लाहु अन्हुम ने अर्ज़ किया अल्लाह के नबी हम में से हर शख़्स को उसका माल ज़ियादा महबूब है, आप (सल्ल०) ने फरमाया, उसका माल तो वही है जो उसने अल्लाह की राह में खर्च कर दिया, और उसके वारिस का माल वह है जो उसने छोड़ा।**

1. उसकी उम्र के संबंध में कि कैसे गुज़ारी।
2. इल्म के संबंध में कि उससे क्या काम किया।
3. माल के संबंध में कि कहां से कमाया और कहां खर्च किया।
4. जिस्म (शरीर) के संबंध में कि कैसे प्रयोग किया।

**बिना मांगे मिलने वाले माल के लेने में कोई हर्ज नहीं:**

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स रज़ियल्लाहु अन्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को हदिया दिया करते थे हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु अ़र्ज़ करते ऐ अल्लाह के रसूल (सल्ल०) मुझ से ज़ियादा जो मुहताज हो उसको दे दें, आप (सल्ल०) इर्शाद फरमाते कि इसको ले लो अपनी मिलकियत बना लो या इसको सदक़ा कर दो, और जो माल तुम को बिना मांगे और बिना लालच के मिल जाए उसको ले लो, और जो इस तरह न हासिल हो उसके पीछे अपने को न थकाओ।

**(मुस्लिम)**

**सामान ज़रूरत भर हो :**

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया, कि खुशनसीब वह है जो इस्लाम लाया, और जरूरत भर सामान रखता है, और जो कुछ अल्लाह ने इसको दिया है उस पर वह सन्तुष्ट रहता है।

**(मुस्लिम)**

**दुन्या में मुसाफ़िर की तरह ज़िन्दगी गुज़ारो :**

हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उमर रजियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने मेरा शाना (भुजा) पकड़ कर फ़रमाया, दुन्या में इस तरह रहो जैसे एक मुसाफिर राहगीर रहता है।

**अपने माल में इन्सान का अस्ली हिस्साः**

हज़रत अबू हुरैरा रजियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया कि आदमी कहता है मेरा माल, मेरा माल, उस का माल तो तीन ही चीज़े हैं, जो उसने खाया फना किया जो पहना पुराना किया या सदक़ा किया, तो उसको आखिरत के लिए जखीरा बना लिया इसके अलावा जो कुछ है वह चला जाएगा और लोगों के लिए छोड़ जाएगा।

**हक़ के रास्ते में खर्च होने वाला माल उसका माल है :**

हज़रत इब्ने मस्ऊद रजियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया कि तुम में से कौन ऐसा है जिसको उसके वारिस का माल अपने माल से ज़ियादा महबूब हो सहाबा रजियल्लाहु अ़न्हुम ने अ़र्ज़ किया अल्लाह के नबी हम में से हर शख़्स को अपना माल ज़ियादा महबूब है, आप (सल्ल०) ने फ़रमाया, उसका माल तो वही है जो उसने अल्लाह की राह में खर्च कर दिया, और उसके वारिस का माल वह है जो उसने छोड़ा।

**(बुखारी)**

हज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने रिवायत करते हुए फ़रमाया कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने इर्शाद फ़रमाया जिस शख़्स ने एक खजूर के बराबर भी पाकीज़ा कमाई से सदक़ा किया, और अल्लाह तआ़ला भी पाकीज़ा को ही कुबूल फरमाते हैं और उसको दाहिने हाथ से कुबूल फरमाता है फिर (सदक़ा करने वाले के लिए) उसको बढ़ाता है, जिस तरह तुम में से कोई शख़्स घोड़े के बच्चे को (पालकर) बड़ा करता है यहां तक कि वह (बड़ा हो जाता है) पहाड़ के बराबर हो जाता है।

**(बुख़ारी, मुस्लिम)**

हज़रत अस्मा बिन्त अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया, बुख़्ल (कन्जूसी) न करो, कि तुम्हारे साथ भी बुख़्ल किया जाय, एक रिवायत में है कि ख़र्च करो, दो, दिलाओ, गिन–गिन कर न रखो, कि तुम्हारे लिए भी गिना जाए, हिसाब न लगाओ कि तुम को भी हिसाब से दिया जाय।

**सदक़े से माल कम नहीं होता :**

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया सदक़ः माल को कम नहीं करता है, और मुआ़फ़ करने से अल्लाह तआ़ला बन्दे की इ़ज़्ज़त बढ़ाता ही रहता है और जो भी अल्लाह के लिए इन्किसारी (झुकता है) करता है अल्लाह तआ़ला उसको ऊँचा करते है।

**सबसे अच्छा सदक़ा :**

हज़रत अबूहुरैरा रज़ियल्लाहु अ़न्हु से रिवायत है, कि एक शख़्स रसूलुल्लाहि (सल्ल०) के पास आया और उसने अर्ज़ किया कि ऐ अल्लाह के नबी (सल्ल०) कौन से सदक़े में सबसे ज़ियादा अज्र मिलेगा। आप (सल्ल०) ने फरमाया तुम इस तरह सदक़ः करो, कि तुम तन्दुरुस्त हो, माल का शौक़ व लालच हो, फ़क्र (भुखमरी) का खटका हो, मालदार रहने की उम्मीद हो, और ख़र्च में टाल मटोल न करो, कि जब मौत का वक़्त आ जाए, तो वसीयत करने लगो कि फलाँ का इतना हिस्सा, फुलाँ का इतना हालांकि वह फुलाँ का हो चुका है।

**(बुखारी व मुस्लिम)**

**खाने की बरकत :**

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, एक आदमी का खाना दो आदमियों के लिए काफी हो जाता है, और दो आदमियों का खाना चार आदमियों के लिए काफी हो जाता है और चार का खाना आठ के लिए काफ़ी हो जाता है।

**(मुस्लिम)**

□□□

## ग़ज़ल

✍ *हफ़ीज़ मेरठी*

बेसहारों का इन्तिज़ाम करो
यानी इक और क़त्ले–आम करो

ख़ैरख़्वाहों[1] का मशवरा ये है
ठोकरें खाओ और सलाम करो

दबके रहना हमे नहीं मंज़ूर
ज़ालिमो ! जाओ, अपना काम करो

सरफिरों में अभी हरारत[2] है
इन जियालों[3] का एहतिराम करो

मेज़बानों में हो जहाँ अनबन
ऐसी बस्ती में मत क़याम[4] करो

आप छट जाएँगे हवस वाले
तुम ज़रा बेरुख़ी को आम करो

ढूंढ़ते हो गिरे–पड़ों को क्यों
उड़नेवालों को ज़ेरे–दाम[5] करो

बद्दुआ देके चल दिया वो फ़क़ीर
कह दिया था कि कोई काम करो

ये हुनर भी बड़ा जरूरी है
कितना झुककर किसे सलाम करो

साँप आपस में कह रहे हैं 'हफ़ीज़'
आस्तीनों का इन्तिज़ाम करो

*लिप्यतरण : मुहम्मद इलियास हुसैन*

1. भलाई चाहने वालों 2. गर्मी 3. बहादुरों 4. निवास 5. वश में वशीभूत।

□□□

# दो रास्ते

— सय्यद अबुल हसन अली हसनी नदवी रह०

**खिला हुआ चमन :**

आप हज़रात बहुत से बाग़ों में गये होंगें। पहले शहरों में कम्पनी बाग़ों का चलन था और यूं भी लोगों के यहां अपने ज़ाती बाग़ भी होते थे। आपने चमन खिला हुआ देखा होगा। आप प्रसन्न हुए होंगे क्योंकि पैदा करने वाले अल्लाह तआ़ला ने सबको सुन्दरता से लाभ उठाने की योग्यता दी है, परन्तु जब मैं इस चमन को देखता हूं जो मेरे सामने इस समय खिला हुआ है, मैं आपके कपड़ों की वेराइटी को नहीं कह रहा हूं। यह तो बहुत मामूली दर्जे की बात है, लेकिन जिन–जिन वर्गों से आपका संबंध है, जिन–जिन धर्मों से और विचारधाराओं से आप का संबंध है, उनको जब मैं देखता हूं कि एक बहार है, मेरे सामने फूलों का एक गुलदस्ता है जिसमें हर रंग के फूल हैं तो मेरा दिल बाग़–बाग़ हो जाता है और मुझे इस बाग़ का खिलना और इतने फूलों का एक साथ होना, यह भी भाता है, ख़ुश करता है और इनफूलों के रंग की जो भिन्नता है यह भी मुझे प्रसन्न कर रही है। मैं इसको भी बाग़ की एक बहुत बड़ी ख़ूबी समझता हूं कि फूल भी हों और फूल विभिन्न रंग और सुगन्ध के हों। ज़ौक़ (एक उर्दू कवि) ने कहा था–

**गुलहा–ए–रंग, रंग[1] से है ज़ीनते[2] चमन।**
**ऐ ज़ौक़ इस चमन को है ज़ेब[3] इख़्तलाफ़[4] से।।**

मैं अपने सामने इंसानी बाग़ खिला हुआ देखता हूं, दिल बाग़–बाग़ हो जाता है और इस देश के बारे में निराश नहीं हूं और मुझे बड़ी ताक़त प्राप्त होती है। यदि आप एक आवाज़ पर एक ऐसे आदमी के नाम पर जिससे आप परिचित नहीं, केवल भरोसे पर और एक इंसान के अन्दर दूसरे इन्सान के साथ अच्छा ख़याल क़ाइम करने की जो शक्ति है उसके आधार पर आप इस ठंड में आ जाते हैं। यदि इस देश में इतनी बात भी है तो इस देश से निराश होने की कोई ज़रूरत नहीं। यह बात भी जिस दिन समाप्त हो जाएगी कि बुलाने पर भी आप न आएं जबतक कि इसके साथ कोई सांसारिक या राजनीतिक लाभ न हो, यदि देश की यह दशा हो गई (ख़ुदा न करे, हमारी ज़िन्दगी में तो न हो) तो फिर इस देश से निराश होना पड़ेगा और इतने भाई, इतने बड़े भाई, इतने समझदार भाई एक आवाज़ पर इकट्ठा हो जाएं अरबी मदरसे में (यहां हमारे ग़ैर मुस्लिम भाई और दोस्त भी हैं) केवल इस ख़याल से कि कोई अच्छी बात कही जाएगी, हमारे एक मेहमान आए हैं उनकी बात सुनी जाएगी, उस समय तक इस देश का भविष्य अन्धकार मय नहीं कहा जा सकता। यह बात उत्साह बढ़ाती है और इतमिनान दिलाती है।

**दो रास्ते :**

मेरे भाईयो ! बात बहुत हो चुकी और रात बहुत हो चुकी और आप बहुत देर से बैठे हुए हैं। आपके सामने संक्षिप्त रूप से कुछ कहना चाहता हूं कि इस संसार में दो रास्ते हैं। एक रास्ता है प्रेम का, अस्वार्थता का, विश्वास का और एक रास्ता है नफ़रत का, बदला लेने का, दुर्भावना और ख़ुदग़रज़ी का। यह दोनों रास्ते आज़माए जा रहे हैं। इन दोनों रास्तों के रेकार्ड, इन दोनों रस्तों पर चलने के नतीजे भी हमारे सामने हैं। इतिहास इसका बेहतरीन रेकार्ड है लेकिन अफ़सोस है कि दूसरे रास्ते का रेकार्ड इतना सुरक्षित नहीं है।

हमारा इतिहास बादशाहों राजा महाराजाओं का इतिहास है। शक्तिशाली लोगों और शासकों का इतिहास है। उन लोगों का इतिहास है जो आँधी पानी की तरह उठे और पूरी दुन्या पर छा गए। यहां से वहां कबड्डी खेलते हुए गये, खेतों को जलाते हुए, शहरों को बेचिराग़ बनाते हुए और दुकानों और संस्कृति को ढेर करते हुए वह एक जगह से दूसरी जगह गुज़र गए। उनका इतिहास आज संसार मं सुरक्षित है। आप किसी बादशाह के बारे में जानकारी चाहें तो आपको मिल जाएगी और ऐसे विस्तार से मिलेगी कि उनका उठना बैठना, खाना–पीना सब मिलेगा परन्तु दयालु लोगों की बातें, महब्बत वालों की बातें, शुद्ध हृदय वालों की बातें बहुत कम सुरक्षित की गई हैं। उनका रेकार्ड बहुत थोड़ा है लेकिन है। ऐसा नहीं है कि बिल्कुल न हो।

अब आप दोनों रास्तों को देख लीजिये। दूसरे रास्ते पर चलने वालों को क्या मिला? इसके नतीजे में उनको फूट मिली, साज़िशें (षड्यंत्र) मिलीं, गालियां मिलीं, एक न समाप्त होने वाली लड़ाई मिली। बादशाहों का यह हाल था, उनसे बढ़ कर ताक़त किसके पास थी। पद की ताक़त उनके पास लेकिन **रात को मीठी नींद नहीं सो सकते थे।** आप विश्वास मानिये कि शायद ही कोई ख़ुदा का बन्दा ऐसा

1. रंग बिरंगे फूल, 2. सजावट 3. शोभा 4. विभिन्नता।

रहा हो जो लम्बीतान कर मीठी नींद सोता रहा हो, पांव फैला कर, चिन्ता मुक्त होकर। घरवालों से वह डरता था, अपने बच्चों से वह डरता था, अपने अधिकारियों से वह डरता था। हर एक को दुर्भावना व शक से देखना, यह क्या मुसीबत है ? आप मुझे शक से देखें, मैं आपको संदेह के साथ देखूं। धिक्कार है ऐसे जीवन पर, जीवन का मज़ा क्या? बाप को बेटे पर भरोसा न हो, बेटे को बाप पर भरोसा न हो।

मैं देशों का नाम नहीं लेता इसलिए कि मैं राजनीतिक व्यक्ति नहीं हूं लेकिन संसार के कई देश ऐसे हैं जहां किसी को किसी पर भरोसा नहीं और यह कहते हैं "दीवार के भी कान होते हैं।" फ़ारसी की पुरानी कहावत थी परन्तु कभी इसकी ऐसी तस्वीर सामने नहीं आई जैसी आज सामने आई है। भाई भाई से दिल की बात नहीं कह सकता। आदमी बात करता है तो चारों तरफ़ देखता है कि कोई सुन तो नहीं रहा है। बच्चे तो नहीं सुन रहे हैं और फिर इसके बाद भी उस की बात सुन ली जाती है। लोग घड़ियां लगाए हैं वह रेकार्ड करती हैं।

आप देखिये शासन में जो परिवर्तन आते हैं और आ रहे हैं। आज भी कितने देशों में रात को सोए तो कुछ दशा थी और सुबह उठे तो कुछ नहीं, मालूम हुआ कि तख़ता उलट गया। अमुक लोकतंत्र का तख़ता उलट गया, अमुक हुकूमत का तख़ता उलट गया, अमुक पार्टी का तख़्ता उलट गया। चुनाव के रास्ते से भी यही हो रहा है। एक पार्टी दूसरी पार्टी को बर्दाश्त नहीं कर सकती और एक आदमी दूसरे को बर्दाश्त नहीं कर सकता।

संसार कैम्पों में बटा हुआ है। पहलवान अखाड़े में उतरे हुए हैं। भाई ज़िन्दगी क्या इसी पहलवानी का नाम है। कुश्ती लड़ने का नाम है। पूरा जीवन क्या इसी कुश्ती में व्यतीत होगा ?

अभी एक वर्ष चन्द महीने हुए कि मैं अमरीका की यात्रा पर था। वाशिंगटन में मेरा एक प्रोग्राम रखा गया वहां के इस्लामिक सेंटर में। सच्ची बात यह है कि मेरे दिल में एक बुख़ार था जैसा कि दिल में बुख़ार होता है कि ख़ुदा मुझे वहां पहुंचाए जहां मैं अपने दिल की बात कह सकूं और जो ऊँचे से ऊँचा दरबार है वहां तक मेरी बात पहुंच सके। मैं जानता था कि अमरीका का राष्ट्रपति (सदर) मेरी बात नहीं सुन रहे हैं। उनको कहां फ़ुर्सत? मेरी यह हैसियत कहां? मुझे तो अपने दिल का बुख़ार निकालना था। वह भाषण रेकार्ड है। अंग्रेजी में आ गया है और उर्दू में भी आ गया है। मैं ने वहां कहा :–

मैं व्हाइट हाऊस (White House) की दीवार के नीचे बैठ कर इस समय कह रहा हूं और ख़ुदा का शुक्र अदा कर रहा हूं कि ख़ुदा ने मुझे यहां तक पहुंचाया। मैं अपना कर्तव्य समझता हूं कि यह कहूं (कोई सुने या न सुने) कि अमरीका, जो संसार के कई देशों को खिलाता है, पेट भरता है, हथियार अलग देता है, दुश्मन से सुरक्षा करता है, उसका कोई सच्चा दोस्त नहीं। इसलिए कि उसके अन्दर खुलूस नहीं। जो कुछ करता है ख़ुदा के लिए नहीं करता है। वह इसलिए नहीं करता कि उत्पीड़ितों का साथ दे इसलिए नहीं करता कि ज़ालिम का हाथ पकड़े। इसलिए नहीं करता कि उसका नैतिक कर्तव्य है। इसलिए नहीं करता कि धर्मविधान (शरीअत) का तक़ाज़ा है, मर्दानगी का तक़ाज़ा है, ताक़त का यह टेक्स है बल्कि वह इसलिए करता है, इसलिए खिलाता है, इसलिए रुपये–पैसे की रेलपेल करता है ताकि संयुक्त राष्ट्र में वह देश उसको वोट दें, उसका साथ दें। उस के विरोधी रूस के हमले से उसको बचाएं। संसार में जो उस का दबदबा है वह क़ाइम रहे। मैंने कहा कान खोल कर अमरीका सुनले कि उसका कोई जिगरी दोस्त नहीं। किसी दिल में उसके लिए सच्चा प्रेम नहीं। वह अरब हो या अरब के बाहर का संसार, वह मध्यपूर्व एशिया के देश हों या सदूर पूर्व के देश हों यह सब धोका देते हैं। सब आप से लेते हैं। मज्लिसों में उनकी बातें सुनिए सौ बातें अमरीका को सुनाते हैं।

मैंने कहा यह किसका नतीजा है ? यह इस बात का नतीजा है कि वह शुद्ध हृदयता से ख़ाली है और ख़ुदग़रज़ी पर निर्भर है। ख़ुदग़रज़ी की क़िस्में हैं। एक मामूली अनपढ़ जाहिल आदमी की ख़ुदग़रज़ी है। जिस हैसियत का वह है वैसी ही उसकी ख़ुदग़रज़ी है। एक राजनीतिक पार्टी की ख़ुदग़रज़ी है, एक जनतंत्र की ख़ुदग़र्ज़ी है। एक संसार की बड़ी शक्ति की ख़ुदग़रज़ी है। वह उसके स्तर की होगी लेकिन ख़ुदग़रज़ी, ख़ुदग़रज़ी में कोई अन्तर नहीं। वह भी ख़ुदग़रज़ी यह भी ख़ुदग़रज़ी।

**ख़ुलूस (शुद्धहृदयता) की जंत्री चल रही है**

हज़रत ईसा (अलै०) ने दो हज़ार वर्ष पहले ख़ुलूस के साथ जो इंसानों के साथ हमदर्दी की थी, आज उन्हीं की जंत्री चल रही है। आज उन्हीं का नाम लिया जा रहा है। ख़ुदा के पैग़म्बरों (संदेशवाहकों) ने हज़रत आदम से लेकर मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहि अलैहि व सल्लम तक उन्होंने निःस्वार्थ संसार की सेवा की। उन्होंने संसार को प्रेम संदेश दिया। उन्होंने संसार से लिया कुछ नहीं। इसी का नतीजा है कि सैकड़ों, हज़ारों वर्ष बीत जाने के बाद भी उन का नाम ज़िन्दा है। लोगों के दिलों में उनका प्रेम है चाहे कोई उनके पूरे रास्ते पर न चले लेकिन बड़ाई के साथ, सम्मान के साथ उनका नाम लेता है। इसलिए कि उन का काम बिल्कुल बेग़रज़ था।

तो एक रास्ता तो है बादशाहों का, राजनीतिज्ञों का, शासकों का, ताक़त रखने वालों का और स्वार्थी नेताओं का।

और दूसरा रास्ता प्रेम, क्षमादान का रास्ता, बेग़रज़ी और ख़ुलूस का रास्ता। आप देख रहे हैं कि ख़ुलूस वाले सूरज की तरह चमक रहे हैं और उनमें कोई अन्तर नहीं है ज़माने के इन्क़लाब का। ज़माना कितना बदल गया है, कितना आगे बढ़ गया है लेकिन अभी तक उनके भाग्य का सितारा बुलन्द है। और उनकी इज़्ज़त और शुहरत सर्वप्रियता का सूर्य उसी प्रकार चमक रहा है। एक रास्ता तो यह है कि बुराई का जवाब बुराई से दीजिए, नफ़रत का जवाब नफ़रत से दीजिए और एक रास्ता यह है कि नफ़रत का जवाब भी आप महब्बत से दीजिए। पहला रास्ता राजनीतिज्ञ लोगों स्वार्थी लोगों का है। पहला रास्ता ताक़त पर विश्वास रखने वालों का है और दूसरा रास्ता ख़ुदा के संदेश वाहकों और उनके उत्तराधिकारियों का है।

**जो दुश्मनी करे उससे दोस्ती कर :**

हमारे हिन्दुस्तान के एक बड़े बुजुर्ग सूफ़ी हज़रत ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया का एक वाक्य मैंने एक किताब में पढ़ा था। उन्होंने कहा कि लोगों का कहना है "सीधे के साथ सीधा और टेढ़े के साथ टेढ़ा परन्तु मैं कहता हूं कि सीधे के साथ सीधा और टेढ़े के साथ भी सीधा" उन्होंने इसका उदाहरहण दिया कि कांटे हों तो यदि तुम उसके ऊपर कांटा डालो तो कांटे ही कांटे होते चले जाएंगे, कांटों का ढेर हो जाएगा। नहीं, कांटों के मुक़ाबले में फूल। चुनानचः उन लोगों का तरीक़ा था कि जिन लोगों ने उनको कष्ट दिया जिन लोगों ने उनको अपमानित करने की कोशिश की उनके पीछे पड़े रहे, उनके साथ उन्होंने ऐसी हमदर्दी की, महब्बत की, कि मालूम होता है कि असल उपकारी यही थे। बल्कि बाज़ लोगों को जो कमज़ोर दिमाग़, कमज़ोर विश्वास के हैं, उनको ख़याल होता था कि भाई दुश्मनी में लाभ है। ऐसे लोगों के साथ दुश्मनी करनी चाहिए। इसमें अधिक लाभ है। दुश्मन पर अधिक दया की जाती है। उपकार करने वालों को यह भूल जाते हैं, अपनों को यह भूल जाते हैं। जब लाभ पहुंचाने का समय आता है तो दूसरें को याद करते हैं।

एक बुज़ुर्ग का मैंने शेर (पद्य) पढ़ा। वह कहते हैं। ऐ ख़ुदा जो हमारे रास्ते में कांटे डाले तू उसकी उम्र के बाग़ में फूल ही खिलाता रह। उसकी उम्र के बाग़ में जो फूल खिले वह सदा बहार रहे और जो हमारे साथ दुश्मनी करे तू हमेशा उसके साथ दोस्ती कर और कभी उसका बाल बीका न हो। और रातों को उठ–उठ कर दुश्मनों के लिए दुआएं करते थे। दुश्मनों के लिए उनकी दुआओं का जितना भाग वक़्फ़ (अर्पण) था मुझे संदेह है कि दोस्तों और मानने वालों के लिए उतना ही था या उससे कम था।

**बादशाहों ने गर्दन झुकालीं लेकिन दिल झुकाने में सफल न हुए :**

बादशाहों ने मुल्कों पर विजय प्राप्त की। अपने लिए गर्दनें झुकवालीं परन्तु उनके सामने दिल नहीं झुके। एक दिलको भी झुकाने पर वह सफल नहीं हुए। अगर कहा जाए कि पूरे–पूरे मुल्क में एक दिल भी उनके सामने झुका हुआ नहीं था, उनके लिए दुआ करने वाला नहीं था तो शायद ग़लत नहीं होगा और आज यह ज़माना व्यक्तिगत राज्यों का नहीं। एक दो चिराग़ जल रहे हैं, टिमटिमाते हुए, वह भी नहीं मालूम कि कितने दिन की उनकी ज़िन्दगी है। आज राजनीत का ज़माना है, राजनीतिक पार्टियों का युग है। क्या आप कह सकते हैं कि इन राजनीतिक पार्टियों के लिए, उनके नेताओं के लिए हमारे दिल में वह प्रेम है, वह विश्वास है, वह भरोसा है। हम उन के लिए जान क़ुर्बान करना, जान तो बड़ी चीज़ है हम उन के लिए किसी एक लाभ से वंचित रहने के लिए तैयार नहीं। सब तिजारत है, सौदागरी है, सौदागरी के सिवा कुछ नहीं कि हमें वोट दो और हम तुम्हारा काम करें। न वह वोट ख़ुलूस से है न उनका काम ख़ुलूस से है।

और वहां तो हाल यह था कि पलकों से लोग उन की जगह झाड़ते। उनके लिए रात–रात भर खड़े होकर पहरा देते और जागते कि उनको कष्ट न हो। शायद यह पानी मांग लें, शायद इनकी आँख खुले। आप देखिये लोगों को बुज़ुर्गों, सूफ़ी संतों और फ़क़ीरों के साथ कैसा ख़ुलूस निःस्वार्थता है।

एक रास्ता तो है स्वार्थ का लाभ प्राप्त करने का सौदागरी का, देने लेने का, तुम हमें यह दो उसके बदले में हम तुम्हें यह देंगे। वह रास्ता आप आज़मा रहे हैं। ख़ुलूस ग़ाइब होता चला जा रहा है। किसी को किसी के साथ ख़ुलूस नहीं इसलिए कि ख़ुलूस का संबंध दिल से है और दिल से हम काम नहीं ले रहे हैं। सारा काम दिमाग़ से ले रहे हैं और ख़ुलूस दिमाग़ की चीज़ नहीं बल्कि दिल और आत्मा की चीज़ है और दिल में यह चिराग़ बुझ गया। यह चिराग़ आंधियों से कब का बुझ चुका है। इस ज्योति को जलाने वाला अब कोई नहीं रहा।

यह ख़ुदा के फ़क़ीर बन्दे जो सूफ़ी कहलाते थे, संत कहलाते थे, यह किसी उपकार के किसी मदद के कभी उम्मीदवार नहीं रहते थे। यह इनका काम था जो इनके पास आया वही ज्योति उन्होंने जला दी, वही चिन्गारी उन्होंने भड़का दी। उनके अन्दर ख़ुलूस पैदा कर दिया। उनकी दुकानें ख़ुलूस की दुकानें थीं। वहां ख़ुलूस का सौदा मिलता था। कहने वाले

बाक़ी पृष्ठ 12 पर

# आल इन्डिया मुस्लिम पर्सनल ला-बोर्ड

## के सोलहवें अधिवेशन के उद्घाटन भाषण का साराँश

(यह अधिवेशन हैदराबाद में हुआ)

*– मौलाना सय्यद मुहम्मद राबे हसनी नदवी*
*नाज़िम नदवतुल उलमा*

हज़रात ! हिन्दोस्तानी मुसलमानों को दीन और उसकी शरीअ़त की रक्षा का कर्तव्य पूरा करने वाला मुसलमानों का सहमतीय प्लेटफ़ार्म "आल इन्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड" अब से तीस वर्ष पूर्व दिसम्बर 1972 ई० में उस समय स्थापित हुआ था जब बहुसंख्यक ने आइली क़ानून अर्थात स्वीय विधि (Personal Law) तथा सांस्कृतिक प्रथाओं में समान सामाजिक विधान (Common Civil Code) की मांग तथा नाद बुलन्द किया था, जो भारतीय संविधान में अल्पसंख्यकों को दिये गये अधिकारों के विरुद्ध था, जिसके पहले अध्यक्ष दारुलउलूम देव बन्द के संचालक मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यिब क़ासिमी रह० हुए थे। दीन व शरीअ़त में उनका एक स्थान था। उन के साथ बोर्ड के जनरल सिक्रेट्री इमारते शरअ़ीया बिहार तथा उड़ीसा के नायक मौलाना मिन्नतुलाह रहमानी बने थे। बोर्ड को भारत के समस्त मुस्लिम वर्गों का सहयोग प्राप्त हुआ। बोर्ड के लिये यह शुभ शगुन था। अल्लाह तआ़ला की ओर से भारतीय इस्लामी मिल्लत के लिये यह बड़ा पुरस्कार था जो अब तक चालित है।

पर्सनल ला बोर्ड ने आरंभ ही से भारतीय मुसलमनों के पर्सनल ला की रक्षा का कार्य संवैधानिक तथा लोकतांत्रिक विधियों से किया। भारत जैसे सेकूलर देश में यही विधि अपनाना उचित थी। बोर्ड ने सर्व प्रथम भारत के मुसलमानों को इस सम्मिलित उद्देश्य में एक रहने और इसके महत्व से अवगत कराने की चेष्ठी की, फिर शासन के नीतिकारों को सौम्यता से बताया कि हम मुसलमान इस के अधिकारी हैं और गंभीरता पूर्वक समझाया कि मुसलमान अपने इस अधिकार को किसी प्रकार छोड़ नहीं सकते।

बोर्ड की इन कोशिशों से देश के कुछ ग़ैर मुस्लिम बुद्धिजीवियों ने भी समर्थन दिया परन्तु बहु संख्यक धर्म के अधिकांश जनों ने इसको उपेक्षित कर दिया यहां तक कि स० 1985 ई० में शाह बानो केस सामने आया और सुपरिम कोर्ट से तलाक़ पाई हुई शाह बानो के हक़ में उन के शौहर मुहम्मद अहमद के खिलाफ़ जो फ़ैसला दिया वह इस्लामी शरीअ़त के खिलाफ़ था।

इस फैसले ने सिद्ध कर दिया कि भारत में इस्लामी शरीअ़त ख़तरे में है। सुपरिम कोर्ट के विरुद्ध कहीं अपील भी तो नहीं हो सकती थी। अतः बोर्ड के कार्यकर्ताओं विशेषतः बोर्ड के उस समय के अध्यक्ष विश्व ख्याति प्राप्त मौलाना सय्यद अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी (रह०) और बोर्ड के जनरल सिक्रेट्री मौलाना मिन्नतुल्लाह रहमानी की कोशिशों से उस समय के प्रधानमंत्री राजिव गांधी ने इस केस में रुचि ली अतएव संसद में संशोधन प्रस्ताव लाये और सदस्यों के विरोध के होते हुए तलाक़ के इस्लामी क़ानून को वैधानिक स्थान दिलाने में सफल हो गये।

बोर्ड की यह ऐसी कीर्ति थी जिससे उस का मान सम्मान बहुत बढ़ गया। बोर्ड ने शरीअ़त की रक्षा का महत्वपूर्ण कार्य चालित रखा, इस बीच बोर्ड के यह दोनों महापुरुष आगे पीछे इस संसार से चले गये। सन 1991 ई० में मौलाना मिन्नतुल्लाह रह० के निधन पर मौलाना सय्यद निज़ामुद्दीन को बोर्ड का जनरल सिक्रेट्री चुना गया और सन 1999 ई० में मौलाना सय्यद अबुल हसन अ़ली हसनी नदवी के देहान्त पर मौलाना क़ाज़ी मुजाहिदुल इस्लाम को बोर्ड का अध्यक्ष चुना गया।

यह दोनों महा पुरुष बोर्ड के कार्यों को भली भांति चलाते रहे। मौलाना क़ाज़ी मुजाहिदुल इस्लाम इमारते शरअ़ीया के क़ाज़ियुल कुज़ात थे, वह इस्लामी क़ानून के ज्ञाता थे परन्तु उनको इस पद पर दो ही वर्ष का समय मिला वह भी बीमारियों और गंभीर रोगों के साथ अन्ततः एक लम्बी बीमारी के पश्चात् 4-4-2002 को उनका देहान्त हो गया।

मौलाना क़ाज़ी मुजाहिदुल इस्लाम का निधन ऐसे समय हुआ जब मुसलमानों के सामने अनेक समस्याएं थीं। इस समय भारतीय मुसलमानों को उन की बड़ी आवश्यकता थी। फिर भी उनके समय में महत्वपूर्ण कार्य हुए। उनके नेतृत्व में शरअ़ी क़ानून के संकलन का काम पूरा हुआ जो बड़ा काम था। अदालतों से मुसलमानों के जो फ़ैसले शरीअ़त के विरुद्ध हुए उन को चैलेंज करने का काम भी कुशलता पूर्वक हुआ, मुसलमानों के पारसपरिक झगड़ों के

निवारण के लिये दारुल कज़ा तथा इस्लामी अदलातें स्थापित हुईं, हम सब मरहूम सद्र की ख़िदमात को ख़िराजे अ़क़ीदत पेश करते हैं। अल्लाह तआ़ला उन को उनकी ख़िदमात का भरपूर बदला प्रदान करे।

हज़रात ! मुसलमानों की इस्लामी पहचान की रक्षा और इस्लामी शरीअ़त पर अ़मल यह ऐसी आवश्यकताएं हैं कि इन के बिना मुसलमान, मुसलमान नहीं रह सकते। अतः जिस प्रकार वह अपनी सांस्कृतिक तथा आर्थिक आवश्यकताओं के लिये चिंतित होते हैं चाहिये कि उसी प्राकर शरीअ़त की रक्षा और उस पर अ़मल की रुकावटों को दूर करने के लिये चिंतित हों बल्कि इस को परम कर्तव्य और अनिवार्य जानें और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिये बोर्ड को भरपूर समर्थन दें।

हज़रात ! अल्लाह तआ़ला के स्पष्ट आदेश पवित्र कुर्आन में मौजूद हैं। एक जगह फ़रमाया कि अल्लाह के उतारे हुए विधान के अनुसार फैसला न करने वाले कुफ़्र करने वाले हैं। (5:44) दूसरी जगह फ़रमाया ऐसे लोग अत्याचारी (ज़ालिम) हैं (5:45) तीसरे स्थान पर घोषित किया कि ऐसे लोग फ़ासिक़ (अवज्ञाकारी) हैं (5:47) और एक स्थान पर शपथ के साथ अपने नबी से फ़रमाया कि "जब तक यह लोग अपने झगड़ों का न्याय आप से करवा कर बिना किसी संकोच के उसे दिल से स्वीकार न करें ईमान वाले नहीं हो सकते" (4:65) एक जगह आदेश दिया कि हमारे रसूल तुम को जो भी आदेश आदि दें उसे स्वीकार करो और जिससे रोकें उससे रुक जाओ।" (59:7)

अतः मुसलमानों के लिये किसी प्रकार इस की छूट नहीं कि वह इलाही विधान को छोड़ कर किसी अन्य विधान को अपनाएं इसलिये वह हर दशा में यह चाहेंगे कि उनको विश्वास दिलाया जाय कि उन की शरीअ़त और उस पर चलने का अधिकार सुरक्षित रहेगा। आल इन्डिया मुस्लिम पर्सनल ला बोर्ड ने मुस्लिम पर्सनल ला की रक्षा की भरपूर कोशिश की।

भारतीय मुसलमानों ने यहां विभिन्न धर्म वालों की संगत में रह कर और उनसे प्रभावित होकर उनके रस्मों रिवाज़ अपना लिये साथ ही इस्लामी शरीअ़त में असावधान हो गये और वह खुद ही शरीअ़त छोड़ बैठा, बोर्ड ने इस को अनुभूत (महसूस) किया और इसके सुधार के लिये इस्लाहि मुआ़शरा (सामाजिक सुधार) आन्दोलन चला कर बड़ा काम किया। इस्लामी अदालतों और इस्लाहि मुआ़शरा यह दोनों कार्य बड़ा महत्व रखते हैं। जो बोर्ड के कर्तव्यों का भाग है। मुसलमानों का स्वयं शरीअ़त से दूर रहना बड़े दुख की बात है। हमारे कर्तव्य में हैं कि हम मुसलमानों को समझाएं कि शरीअ़त छोड़ने में जहां अल्लाह की नाराज़गी और उसके प्रकोप का ख़तरा है वहीं शरीअ़त की रक्षा की कोशिशों में रुकावट भी बन सकता है।

सम्भव है कि मुसलमान जो इस समय आपत्तियों में घिरा है उसका कारण शरीअ़त में असावधानी ही हो, कुर्आन में आया है कि "जो आपत्ति तुम को पहुंची है वह तुम्हारे ही हाथों की कमाई है" (42:30) अतः हमारे बोर्ड का जहां यह कर्तव्य है कि वह मुस्लिम पर्सनल ला को हर प्रकार के परिवर्तन से बचाए वहीं मुसलमानों को बुरे कर्मों से निकाल कर शरीअ़त का पाबन्द बनाए। बोर्ड ने अपनी तीस वर्षीय आयु में इन कार्यों को गिरोही पक्षपात से ऊपर होकर भली भांति पूरा किया है।

हज़रात ! बोर्ड का यह सोलहवां उमूमी इजलास (सार्वजनिक अधिवेशन) होने जा रहा है, इस के सामने सर्व प्रथम कार्य अध्यक्ष के रिक्त स्थान पर किसी सम्मानित तथा उचित व्यक्ति का चुनाव है ताकि बोर्ड अध्यक्ष तथा सिक्रेटी के नेतृत्व में अपना कार्य चालित रख सके। अल्लाह तआ़ला हमारी मदद फरमाए और सामर्थ्य तथा स्वीकृति प्रदान करे। आमीन! व आख़िरु दअ़वाना अनिल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल्आ़लमीन। ❑❑❑

पृष्ठ 10 का शेष...

ने कहा है – जो बेचते थे दवा–ए–दिल, वह दुकान अपनी बढ़ा गये। आज कहां वह दुकान है जहां दवा–ए–दिल मिलती है और जिस देश में, जिस संसार में सबकुछ मिलता हो, हर सौदा मिलता हो लेकिन दवा–ए–दिल न मिलती हो, वहां ज़िन्दगी में क्या लुत्फ़ है? मेरे भाइयो ! आप ज़िन्दगी का लुत्फ़ उठाना सीखिये। हमने इतनी ज़िन्दगी गुज़ार दी परन्तु ज़िन्दगी का लुत्फ़ नहीं उठाया।

**यह देश दूसरे देशों का पथ प्रदर्शक बन सकता है :**

मेरे भाइयो ! इस देश में अल्लाह ने सबकुछ दिया है। लम्बा चौड़ा देश, जैसा बताया मेरे भाई ने नव्वे करोड़ की आबादी और देश भी इतना चौड़ा। इसमें खुदा की दी हुई हर सुख सामग्री है। यदि हममें सलीक़ा हो तो किसी चीज़ के लिए कहीं जाने की ज़रूरत नहीं। हम दूसरों को दे सकते हैं लेकिन जो चीज़ कम होती जा रही है आपस का प्रेम है और एक दूसरे पर भरोसा करना, मिल कर जीवन व्यतीत करने का ढंग, साथ–साथ रहकर ज़िन्दगी गुज़ारने का सलीक़ा। भाई, भाई की तरह, शहरी, शहरी की तरह एक ख़ान्दान, एक कुटुम्ब के सदस्य की तरह रहना हम भूल गए हैं। इस देश में इसकी ज़रूरत है। यदि यह चीज़ इस देश में आ जाए तो आज न केवल यह कि यह देश मंज़िल पर पहुंच सकता है बल्कि दूसरे देशों का पथ प्रदर्शन कर सकता है।

(अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी)

❑❑❑

# सरापा रहमत

*– अल्लामा सय्यद सुलैमान नदवी*

तुमने दुश्मनों को प्यार करने का धर्मोपदेश सुना होगा, परन्तु इस की असली मिसाल नहीं देखी होगी। आओ मदीने के सरकार में मैं तुम को दिखाऊं। मक्के के हालात छोड़ता हूं कि मेरे नज़्दीक प्राधीनता, असहायता, बेबसी, क्षमा और दया के प्रायवाची नहीं है। हिजरत (मक्का से मदीने प्रस्थान) के समय कुरैश के रईस यह इशतिहार देते हैं कि जो मुहम्मद (सल्ल०) का सिर काट कर लाएगा उस को 100 ऊँट इनआम में दिये जाएंगे। सुराक़ा इब्न जअ़शम इस इनआम के लालच में हथियार बन्द होकर आप का पीछा करने के लिये घोड़ा डालता है। क़रीब पहुंच जाता है। हज़रत अबूबक्र (रज़ि०) घबरा जाते हैं। हुजूर दुआ करते हैं। तीन बार घोड़े के पाँव धंस जाते हैं। सुराक़ा तीर के पाँसे डाल कर फ़ाल देखता है। हर बार जवाब आता है कि पीछा न करो। मनोवैज्ञानिक (Psychological) रूप से सुराक़ा भयभीत हो जाता है। लौटने का निश्चय कर लेता है। हुजूर (सल्ल०) को आवाज़ देता है और अमान (श्रण) की प्रार्थना करता है कि जब हुजूर को कुरैश पर विजय प्राप्त हो तो मुझसे पूछताछ न की जाए। यह श्रण पत्र लिखवा कर आप (सल्ल०) उसके हवाले करते हैं। मक्का की विजय के बाद वह ईमान लाता है। आप उससे यह नहीं पूछते कि सुराक़ा तुम्हारे उस दिन की अब क्या सज़ा है।

अबू सुफ़यान कौन है, वह जो बद्र, उहद, खंदक़ आदि लड़ाइयों का सेनापति था जिसने कितने मुसलमानों को मौत के घाट उतार दिया, जिसने कितनी बार हुजूर सरवरे आ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को क़त्ल का फ़ैसला किया, जो हर क़दम पर इस्लाम का कठोर दुश्मन साबित हुआ। परन्तु मक्का विजय से पहले जब हज़रत अब्बास के साथ आप के सामने आता है तो रहमते आलम (संसार के दयावान) अबू सुफ़यान से कहते हैं डरने की बात नहीं है मुहम्मद रसूलुल्लाह बदले की भावना से परे हैं। फिर हुजूर (सल्ल०) न केवल क्षमादान देते हैं बल्कि फरमाते हैं जो अबू सुफ़यान के घर में पनाह लेगा उस को भी अमान है (श्रण प्रदान है)।

हिन्दा अबू सुफ़यान की बीवी जो उहद के मैदान में गा–गा कर कुरैश के सिपाहियों के दिल बढ़ाती है वह जो हुजूर के सबसे प्रिय चचा और इस्लाम के हीरो हज़रत हमज़ा (रज़ी०) की लाश के साथ बेअदबी करती है, उन के सीने को चाक करती है, उनके कान, नाक काट कर हार बनाती है, कलेजे को निकालकर चबाना चाहती है, वह मक्का विजय के दिन नक़ाब पहन कर सामने आती है और यहां भी गुस्ताख़ी से बाज़ नहीं आती लेकिन हुजूर फिर भी कोई आपत्ति नहीं जताते और यह भी नहीं पूछते कि तुमने यह क्यों किया। आम माफ़ी की यह चमत्कारी मिसाल देखकर वह पुकार उठती है 'ऐ मुहम्मद (सल्ल०)! आज से पहले तुम्हारे ख़ेमे से अधिक किसी ख़ेमे से नफ़रत नहीं थी लेकिन आज तुम्हारे ख़ेमे से अधिक किसी का ख़ेमा प्रिय नहीं है।'

वहशी हज़रत हमज़ा का क़ातिल ताइफ़ की विजय के बाद कहीं भाग कर चला जाता है और जब उस स्थान पर भी विजय प्राप्त हो जाती है तो कहीं और श्रण नहीं मिलती। लोग कहते हैं वहशी तुमने अभी मुहम्मद (सल्ल०) को नहीं पहचाना। तुम्हारे लिए मुहम्मद (सल्ल०) के आस्ताना (चौखट) से बढ़ कर कोई दूसरी अमन की जगह (श्रण स्थान) नहीं है। वहशी हाज़िर हो जाता है। हुजूर सल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम देखते हैं आँखें नीची कर लेते हैं। प्यारे चचा की शहादत का दृष्य सामने आ जाता है, आँखों से आँसू छलकने लगते हैं। क़ातिल सामने मौजूद है लेकिन केवल यह उपदेश फ़रमाते हैं वहशी जाओ मेरी आँखों के सामने न आया करो कि शहीद चचा की याद ताज़ा हो जाती है।

अकरमा (रज़ी०) इस्लाम, मुसलमानों और खुद, मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहिवसल्लम के सबसे बड़े दुश्मन अबू जेहल के बेटे थे जिसने आपको सबसे अधिक दुख पहुंचाया, वह खुद भी इस्लाम के ख़िलाफ़ लड़ाइयां लड़ चुके थे। मक्का जब फ़तह हुआ तो उनको अपने और अपने ख़ान्दान के तमाम जुर्म याद थे। वह भागकर यमन चले गए। उनकी बीवी मुसलमान हो चुकी थीं और मुहम्मद रसूलुल्लाह को पहचान चुकी थीं। वह खुद यमन गईं। अकरमा (रज़ी०) को तसल्ली दी और उनको लेकर मदीना आईं। हुजूर (सल्ल०) को उनके आने की ख़बर होती है तो उनके स्वागत के लिए इस तेज़ी से उठते हैं कि जिस्मेमुबारक पर चादर तक नहीं रहती। फिर प्रसन्नता के जोश में फ़रमाते हैं "सवार तुम्हारा आना मुबारक हो !" ग़ौर करो यह मुबारकबाद किस को दी जा रही है। यह

खुशी किस के आने पर है, यह क्षमादान किस को दिया जा रहा है। उसको जिसके बाप ने आपको मक्का में सबसे अधिक तकलीफ़ें पहुंचाईं, जिसने आपके जिस्मेमुबारक पर गंदगी डलवाई, जिसने नमाज़ की हालत में आप पर हमला करना चाहा, जिसने आपके गले में चादर डालकर फांसी देनी चाही, जिसने दारुननदवा (नदवा भवन) में आपको क़त्ल का प्रामर्श दिया, जिसने बद्र का मारका बरपा किया और हर प्रकार की सुल्ह के उपाय को रद किया। आज उसी के जिसमानी यादगार (बेटे) के आने पर प्रसन्नता और खुशी है।

हबार बिन अस्वद वह व्यक्ति है जो एक हैसियत से हुज़ूर की साहिबज़ादी (पुत्री) ज़ैनब (रज़ी०) का क़ातिल है और कई अपराधों में लिप्त है। मक्का विजय के औसर पर उसका खून बहाना जाइज़ किया जाता है। वह चाहता है कि भाग कर ईरान चला जाए। फिर कुछ सोच कर सीधा आप (सल्ल०) की चौखट पर हाज़िर होता है और कहता है या रसूलल्लाह ! मैं भाग कर ईरान चला जाना चाहता था परन्तु फिर मुझे हुज़ूर की दयालुता, रहम और क्षमा याद आई। मैं हाज़िर हूं। मेरे अपराधों की जो सूचनाएं आप को मिली हैं, वह सब सही हैं। इतना सुनते ही आप की रहमत (अनुकम्पा) का दर्वाज़ा खुल जाता है और दोस्त व दुश्मन का फ़र्क मिट जाता है।

सुफ़यान बिन उमय्या, वह रईस जिसने उमैर को आप के क़त्ल के लिए भेजा था और जिसने उमैर से वादा किया था कि यदि तुम इस अभियान में मारे गए तो तुम्हारे बाल–बच्चों की और क़र्ज़ का मैं जिम्मेदार हूं। मक्का विजय पर वह डरकर जद्दा भाग जाता है कि समुद्र के मार्ग से यमन चला जाए। वहीं उमैर नबी की सेवा में उपस्थित होकर प्रार्थना करते हैं कि या रसूलल्लाह सुफ़यान अपने कबीले का सरदार डर के कारण भाग गया है कि अपने को समुद्र में डाल दे। आदेश होता है उसको श्रण प्रदान की जाती है। उमैर निवेदन करते हैं इस अमान (श्रण) की कोई निशानी प्रदान की जाए कि उस को यक़ीन आए। आप अपना अ़मामा (पगड़ी) उठा कर दे देते हैं। उमैर यह अ़मामा लेकर सुफ़यान के पास पहुंचे हैं। सुफ़यान कहता है "मुझे मुहम्मद (सल्ल०) के पास जाने में जान का डर लगता है। वह उमैर जो ज़हर में तलवार बुझाकर मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्ल०) को मारने गए थे सुफ़यान से कहते हैं "ऐ सुफ़यान ! अभी तुम को मुहम्मद (सल्ल०) की दया और अनुकम्पा की जानकारी नहीं है। सुफ़यान नबी की चौखट पर हाज़िर होता है और कहता है कि मुझ से कहा गया है कि तुमने मुझे आमान दी है। क्या यह सच है? उत्तर मिलता है सच है। फिर कहता है लेकिन मैं तुम्हारा दीन अभी स्वीकार नहीं करूंगा। मुझे दो महीने की मुहलत दो। आप फ़रमाते हैं दो नहीं चार महीने की मुहलत है। लेकिन यह मुहलत समाप्त भी न होने पाई कि अचानक उसके दिल की दशा बदल जाती है और वह मुसलमान हो जाता है।

आप ख़ैबर जाते हैं जो यहूदी शक्ति का बहुत बड़ा केन्द्र है। लड़ाइयां होती हैं। शहर फ़तह होता है। एक यहूदिया (यहूदी औरत) दावत करती है। आप बिना असमंजस के स्वीकार करते हैं। यहूदिया जो गोश्त पेश करती है उसमें ज़हर मिला होता है। आप गोश्त का टुकड़ा मुंह में रखते हैं कि आप को मालूम हो जाता है। यहूदिया बुलाई जाती है। वह अपने अपराध को स्वीकार करती है लेकिन रहमतुल्लिलआलमीन (संसार के दयावान) से उसको कोई सज़ा नहीं मिलती, यद्यपि इस ज़हर का असर आप को इसके बाद उम्र भर महसूस होता रहा।

नज्द की जंग से वापसी के समय आप तनहा एक पेड़ के नीचे आराम फ़रमा रहे हैं। दोपहर का समय है, आपकी तलवार पेड़ से लटक रही है। सहाबा इधर उधर पेड़ों की छांव में लेटे हैं। कोई पास नहीं है। एक बद्दू ताक में रहता है। वह सीधा आपके पास आता है। पेड़ से आपकी तलवार उतारता है। फिर नियाम से बाहर खींचता है कि आपकी आँख खुल जाती है। वह तलवार हिला कर पूछता है। मुहम्मद ! बताओ अब कौन तुम को मुझसे बचा सकता है। एक विश्वासपूर्ण आवाज़ आती है कि "अल्लाह" इस अप्रत्याशित (उम्मीद के ख़िलाफ़) उत्तर सुन कर वह भयभीत हो जाता है। तलवार नियाम में रख लेता है। सहाबा (रज़ि०) आ जाते हैं। बद्दू बैठ जाता है और आप उससे कोई पूछताछ नहीं फ़रमाते हैं।

एक बार एक और इन्कारी बन्धक बनाकर लाया जाता है। वह क़त्ल के लिए आपकी घात में था। वह सामने पहुंचता है तो आपको देखकर डर जाता है। आप उस को तसल्ली देते हैं और फ़रमाते हैं यदि तुम क़त्ल करना चाहते तब भी न कर सकते थे। मक्का की जंग में अस्सी आदमियों की टुकड़ी गिरिफ़्तार हुई जो पहाड़ से उतर कर आप को क़त्ल करना चाहती थी। आप को ख़बर हुई तो आपने फ़रमाया इन को छोड़ दो।

दोस्तो ! ताएफ़ को जानते हो। वह ताएफ़ जिस ने मक्का के अत्याचार के ज़माने में आप को श्रण नहीं दी, जिस ने आपकी बात भी सुननी नहीं चाही, जहां के सरदार अब्दिया लैल के खान्दान ने आप की हंसी उड़ाई। बाज़ारियों को उकसाया कि आपकी हंसी उड़ाएं। शहर के आवारे लोग हर तरफ़ से टूट पड़े और दोनों ओर क़तार बना कर खड़े हो गये और जब आप बीच से गुज़रे तो दोनों तरफ़ से पत्थर बरसाए यहां तक कि आप का पाँव मुबारक ज़ख़मी हो गया। दोनों जूतियाँ खून से भर गईं। जब आप थक कर बैठ जाते तो यह शरीर आप को बाजू पकड़ कर उठा देते। जब आप चलने लगते तो फिर पत्थर बरसाते। आप सल्ल० को इतनी तकलीफ़ पहुंची थी कि नौ वर्षों के बाद जब हज़रत आएशा (रज़ि०) ने

एक दिन पूछा कि या रसूलल्लाह ! तमाम उम्र में आप पर सबसे अधिक कष्टदायक दिन कौन आया तो आपने इस ताएफ़ का हवाला दिया। आठ हिजरी में मुसलमानों की फ़ौज इसी ताएफ़ की घेरा बन्दी करती है। एक अवध तक घेराबंदी जारी रहती है। क़िला नहीं फ़तह होता है। बहुत से मुसलमान शहीद होते हैं मगर क्या फ़रमाते हैं –"खुदावन्दा ताएफ़ के लोगों को सदमार्ग दिखा उनको इस्लाम की चौख़ट पर झुका", दोस्तो यह किस नगर के बारे में दुआ–ए–ख़ैर (अच्छाई के लिए दुआ) है। वही शहर जिसने आप (सल्ल०) पर पत्थर बरसाए थे, आप (सल्ल०) को घायल किया था और आप को पनाह देने से इन्कार किया था।

उहद की जंग में दुश्मन हमला करते हैं। मुसलमानों के पैर उखड़ जाते हैं। आप (सल्ल०) दुश्मनों से घिर जाते हैं। आप पर पत्थर, तीर और तलवार के वार होते हैं। मुबारक दाँत शहीद होता है। कंवच की कड़ियां मुबारक सिर में गड़ जाती हैं। मुबारक चेहरे खून से रंगीन होता है। उस दशा में भी आपकी ज़बान पर यह शब्द आते हैं, "वह क़ौम कैसे निजात (मोक्ष) पाएगी जो अपनी पैग़म्बर के क़त्ल के पीछे पड़ी है। खुदावन्दा ! मेरी क़ौम का मार्गदर्शन कर कि वह जानती नहीं है।"

वही बिन अब्दिया लैल जिसके ख़ान्दान ने ताएफ़ में आपके साथ जुल्म किसा था, जब ताएफ़ का प्रतिनिधिमण्डल (वफ़द) लेकर मदीना आता है तो आप हज़रत (सल्ल०) उसको अपनी पवित्र मस्जिद में ख़ेमा गाड़ कर उतारते हैं। प्रतिदिन इशा की नमाज़ के बाद उसकी मुलाक़ात को जाते हैं और अपनी दुःख भरी मक्का की कहानी सुनाते हैं। किसको ? उस को जिसने आप पर पत्थर बरसाए थे और आपको कष्ट दिया था। यह है "तू अपने दुश्मन को प्यार कर और माफ़ कर।" का उदाहरण।

मक्का जब फ़तह हुआ तो हरम (काबा) के सहन में, किस हरम के सहन में ? जहां आप को गालियाँ दी गईं, आप (सल्ल०) पर गंदगी फेंकी गईं, आप के क़त्ल का प्रस्ताव पास हुआ। कुरैश के सभी सरदार प्राजित खड़े थे। उनमें वह भी थे जो इस्लाम को मिटाने में एड़ी चोटी का ज़ोर लगा चुके थे। वह भी थे जो आप को झुठलाया करते थे। वह भी थे जो आप की बुराई बयान करते थे। वह भी थे जो आप को गालियां दिया करते थे, वह भी थे जो इस पवित्र हस्ती के साथ अपमान जनक व्यवहार का साहस रखते थे। वह भी थे जिन्होंने आप (सल्ल०) के संबन्धियों का खून बहाया था, उनके सीने चाक किये थे और उनके दिल व जिगर के टुकड़े किये थे। वह भी थे जो ग़रीब और बेबस मुसलमानों को सताते थे, उनके सीनों पर अपनी अत्याचारी आग से दहकती मुहरें लगाते थे और उनको जलती हुई रेतों पर लिटाते थे, दहकते कोयलों से उनके जिस्म को दाग़ते थे, भालों की नोक से उनके बदन को छेदते थे। आज यह सब दोषी सिर झुकाए सामने खड़े थे। पीछे दस हज़ार खून बहाने वाली तलवारें मुहम्मद रसूलुल्लाह के एक एशारे की प्रतीक्षा में थीं। अचानक मुबारक ज़बान खुलती है। सवाल होता है – कुरैश बताओ मैं आज तुम्हारे साथ क्या सलूक करूं ? उत्तर मिलता है। मुहम्मद हमारा शरीफ़ भाई और शरीफ़ भतीजा है। आदेश होता है – आज मैं वही कहता हूं – जो यूसुफ़ ने अपने ज़ालिम भाइयों से कहा था कि आज के दिन तुम पर कोई इलज़ाम नहीं, जाओ तुम सब आज़ाद हो।

यह है दुश्मन को प्यार करना और माफ़ करना। यह इस्लाम के पैग़म्बर का अमली नमूना और अ़मली तालीम जो केवल मीठे बोल खुश करने वाले बयानों तक ही सीमित नहीं है बल्कि संसार में वास्तविकता और अ़मल बन कर ज़ाहिर हुई है।

*अनुवाद– हबीबुल्लाह आज़मी* ❑❑❑

पृष्ठ 27 का शेष...

तौर पर ही प्रयोग करना चाहिए क्योंकि सोयाबीन दूध में वह बहुमूल्य चीज़ें नहीं होतीं जो भैंस के दूध में है।

यह सत्य है कि अनुसन्धान द्वारा मालूम हो चुका है कि सब्ज़ियों वाला भोजन स्वास्थवर्धक होती है लेकिन गोश्त खाने वालों और सब्ज़ीख़ोरों में कई और तत्व हैं जो सब्ज़ियों को अधिक लाभदायक बनाते हैं जैसे सब्ज़ी खानेवाले गोश्त खाने वालों के मुक़ाबले सिग्रेट, पान, चाय आदि से दूर रहते हैं और बहुदा उनका वज़न कम होता है। मोटापा खुद सौ रोगों की जड़ है। यह भी मालूम हुआ है कि सब्ज़ियों, फलों पर निर्भर संतुलित आहार खाने वाले भी रोगों से सुरक्षित नहीं रहते। यूरोपियन माहिरीन (विशषज्ञ) ने खोज की है कि केवल सब्जी खाने वाले भी आंत, सीने और जिगर के कैंसर से पीड़ित हो सकते हैं।

आजकल यूरोपीय संसार में यह ख़बरें फैली हुई हैं कि पशु स्वास्थवर्धक चारा नहीं खा रहे हैं अतः उनके गोश्त से बीमारियां बढ़ रही हैं। इसी कारण अब अधिक से अधिक लोग सब्ज़ीख़ोर बन रहे हैं परन्तु समस्या यह है कि कहीं ऐसा न हो कि वह ऐसे रोगों का शिकार होने लगे जो केवल सब्ज़ियां खाने से जन्म लेते हैं।

❑❑❑


**विदिशा (म०प्र०) में "सच्चा राही" की एजेंसी**

*नीचे लिखे पते से सच्चा राही हासिल कर सकते हैं –*

**Hafiz Ayub Khan (Dewli)**
S/o Mr. Siraj Khan
At P.O. Laira, Jama Masjid Saeedia
Tahseel Korwai
Distt. Vidisha - 464224 (M.P.)

# आदर्श शासक

*— अ़ब्दुस्सलाम किदवई*

आज कल पूरे विश्व में लोकतंत्र तथा समानता का कोलाहल (शोर) है, परन्तु लोकतांत्रिक साम्राज्य के इस काल में सामान्य जनता पहले ही की भांति पशु समान है, शासक तथा शासित के बीच अभी वही अंतर स्थापित है। आज देखने में शासन जनमत से बनते हैं और प्रजा के वोट (मत) प्रजापति को शासन सिंघासन तक पहुंचाते हैं परन्तु वास्तविक स्वतंत्रा अभी कोसो दूर है। वास्तविक स्वतंत्रता का स्वाद तो जब ही मिलेगा जब सत्ता वास्तविक लोकतंत्र के हाथों में होगी और शासन का उद्देश्य जनसेवा के अतिरिक्त और कुछ न होगा।

हाँ इतिहास के पृष्ठों पर बहुत पीछे शासन के भेष में जनसेवा का एक दृष्टि दिखाई पड़ता है। यह शुभ काल सातवीं शताब्दी ईसवीं में आया था जब हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के दया के संदेश ने सामूहिक रूप धारण कर लिया था और उसके संयमी प्रतिनिधियों ने संसार को रब्बानी शासन के दर्शन दिखाए थे जिससे सहानुभूति तथा शुभेच्छा के सोते फूट निकले थे और मानवता का उद्यान लहलहा उठा था। सैकड़ों वर्ष हो गये जब संसार की आँखों ने यह सुहाना दृष्य (मंज़र) देखा था, उस समय वास्तव में समानता का युग था, शासन को प्रजा के समक्ष कोई विशेष छूट नहीं मिलती थी। शासक प्रजा के दुख दर्द में बराबर का साझी होता था। वही खाता था जो प्रजा खा सकती थी, वही पहनता था जो प्रजा पहन सकती थी।

उस समय एक मनुष्य दूसरे गिरोह पर शासन नहीं करता था अपितु खुदा का न्यायी शासन उसके बन्दों पर स्थापित था। शासक अपनी पार्टी के स्थान पर सर्वोच्च ज्ञानी, सर्वज्ञ, सर्वश्रोता, सर्वदृष्टा, परमात्मा के समक्ष उत्तरदायी थे, जिससे दिलों का कोई चोर और संकल्पों (नीयतों) का कोई खोट छुप नहीं सकता था, अल्लाह तआला की व्यापक निगाह की कल्पना (तसव्वुर) ने दिलों को ऐसा स्वच्छ कर दिया था कि उनके अंतरिम में सहानुभूति तथा शुभेक्षा के अतिरिक्त और कोई भावना बाकी न रह गयी थी। सत्ता से मन में बल मादकता नहीं आती थी अपितु उत्तरदायित्व की चेतना और सेवा की भावना पैदा होती थी, इस्लाम ने बताया कि शासन जनसेवा का नाम है और कौम का नायक कौम का सेवक होता है। उसने शासन के रूप में सेवा के ऐसे उदाहरण प्रस्तुत किये जो इतिहास में सदैव यादग़ार रहेंगे। उन आदर्श शासकों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं सम्भव है पथ भ्रष्टा की इन अंधेरी रातों में प्रकाश की यह किरणें मार्ग–दर्शन का कार्य कर सकें।

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मृत्यु के पश्चात हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हु पहले ख़लीफ़ा बनते हैं अर्थात इस्लामी शासन के शासक बनते हैं तो अपने पहले भाषण में कहते हैं:–

"लोगो! मैं तुम पर शासक नियत किया गया हूं हालांकि मैं तुमसे उत्तम नहीं हूं यदि मैं अच्छा कार्य करूं तो तुम मेरी सहायता करो और यदि मैं कुकर्म करूं तो मुझे ठीक करो अल्लाह ने चाहा तो तुम में का निर्बल बलवान होगा यहां तक कि मैं उसको उसका हक़ दिला दूं और तुममें का बलवान मेरी निगाह में निर्बल होगा यहां तक की उससे दूसरों का हक़ दिला दूं। जब मैं अल्लाह और उसके रसूल की अवज्ञा (नाफरमानी) करूं तो तुम पर मेरा अनुकरण अनिवार्य नहीं।"

शासन अधिकारियों को भी यही आदेश था कि : – "खुले छुपे अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह के बन्दों का भला चाहो शासन द्वारा अपने सम्बन्धियों को दूसरों से अधिक लाभ पहुंचाने की चेष्ठा न करो। अधीनों के दुख दर्द में सम्मिलित रहो। ऐसा न हो कि वह आपत्ति में हो और तुम मज़े उड़ा रहे हो।"

जन सेवा की यही भावना थी कि हज़रत अबू बक्र (रज़ि) ने अपने लिए वेतन (तनख़्वाह) लेना भी पसंद नहीं किया, जब लोगों ने बहुत कहा तो बहुत ही कम पैसे मंजूर किए। उनके और उनके बाल–बच्चों के लिए खाना–कपड़ा नियुक्त हो गया। उनको दो चादरें मिलती थीं जब वह बिल्कुल खराब हो जातीं तो उनको वापस करके दूसरी चादर ले लेते। खाना बहुत ही साधारण और कपड़े बहुत कम मूल्य के होते, मृत्यु पर कफ़न भी नया पसंद न किया, कहा :–

"ज़िन्दा मुर्दे के मुक़ाबले में नये कपड़ों का अधिक अधिकारी है, मेरे लिए यही पुराना काफ़ी है।"

मृत्यु के समय ख़िलाफ़त सम्बन्धित घर में जो सामग्री थी बैतुलमाल (इस्लामिक

शासन कोष) में जमा करवा दी और ख़िलाफ़त काल में जो तनख़्वाह (वेतन) लिया था वसीयत की कि मेरी निजी संमपत्ति बेच कर बैतुलमाल में दाख़िल कर दी जाये।

हज़रत उमर (रज़ि) का भी यही हाल था मोटा झोटा खाकर और फटा–पुराना लिबास पहनकर ज़िन्दगी गुज़ार दी। हमदर्दों ने बहुत चाहा कि कुछ आराम उठा लें मगर हमेशा यही जवाब दिया कि :–

"अल्लाह ने मुझे क़ौम का अमीन (विश्वसनीय) बनाया है, अमानत में ख़ियानत (विश्वासघात) जाइज़ (वैद्य) नहीं, यदि मैं सुख चैन उड़ाऊं और लोग दुख झेलते रहें तो मुझ से अधिक बुरा और कोई नहीं हो सकता, शासक को वही खाना चाहिए जो सब खा सकें और वही पहनना चाहिए जो सब पहन सकें।"

ख़िलाफ़त के पश्चात कुछ समय तक वेतन नहीं लिया लेकिन ख़िलाफ़त के कामों के पश्चात इतना समय नहीं मिलता था कि अपनी आवश्यकताओं के लिए कुछ काम कर सकें। इसलिए थोड़े पैसे लेना स्वीकार कर लिया अर्थात दो दिरहम (आधा रुपया) रोज़ाना, लेकिन मृत्यु के समय वसीयत की कि मेरा मकान और संपत्ति बेच कर जो कुछ मैंने वेतन के रूप में लिया है उसे बैतुलमाल में वापस किया जाए।

अधिकारियों को आदेश था कि वह अपने को जनता का सेवक समझें। नियुक्त के समय ताकीद करते कि सुख–चैन से दूर रहना और हर समय जनता के लिए अपना द्वार खुला रखना। अधिकारी की नियुक्ति के समय उसके धन सम्पत्ति की सूची तैयार कराके अपने पास सुरक्षित कर लेते फिर उसके हालात का ध्यानपूर्वक अध्ययन करते, यदि लगता कि अपने अधिपत्यकाल में अधिक धन एकत्र कर लिया है तो अधिक धन बैतुलमाल में जमा कराते।

जनता में अधिकारी के विषय में घोषणा होती कि :– "मैं इनको इसलिए नहीं भेज रहा हूं कि तुम्हें मारे और तुम्हारा माल लें, यदि कोई अधिकारी तुम्हारे साथ कुव्यवहार करे तो तुम मुझे सूचित करो मैं उससे बदला लूंगा।"

अपने कुटुम्ब के लोगों को जनसाधारण के मुकाबले में कभी भी ऊंचा नहीं होने दिया, कभी अपने संबंधी को कोई पद नहीं दिया। शासकीय दान प्रदान के समय अपने कुटुम्बियों को दूसरों से पीछे रखते। अपने सम्बन्धियों को चेतावनी देते कि यदि तुमने कुसूर किया तो तुमको दोहरा दण्ड मिलेगा।

एक समय आपकी पत्नी ने रोम की शहज़ादी को इत्र का उपहार भेजा, शहज़ादी ने उसके उत्तर में बहुमूल्य जवाहरात भेज दिये, हज़रत उमर ने एक बैठक बुलाई और लोगों से उन जवाहरात के विषय में लोगों का मत लिया। लोगों ने कहा यह तो उपहार के बदले उपहार है और आपकी पत्नी का हक़ है। हज़रते उमर ने कहा नहीं यह रोम की शहज़ादी ने यह उपहार इस्लामी शासक (अमीरुल मोमिनीन) की पत्नी को भेजा है अतः इन जवाहरात को बैतुलमाल में जमा करा दिया जाये।

आप जनता में स्वतंत्रता तथा समानता का भाव देखना चाहते थे। आप चाहते थे कि लोग सत्य मार्ग से न हटें पर दबकर नहीं समझ कर। आप अपने ऊपर लोगों की आलोचनाओं से प्रसन्न होते थे।

हज़रते उसमान (रज़ि) की भी जन सेवा में बड़ी रूचि थी, लोगों की आवश्यकताएं बड़ी उदारता से पूरी करते, सबके साथ मिल–जुल कर रहते, बड़ी ही सरलता का व्यवहार रखते ताकि किसी को अपनी बात कहने में कोई कठिनाई न आए, जनता की आवश्यकताओं के लिए दोपहर को मस्जिद में आराम करते और मस्जिद के फर्श पर लेट जाते, उठते तो पीठ पर पत्थर के कणों के निशान बन जाते, कोई कड़ी आवाज़ में बात करता तो भी जवाब में नरमी का भाव रहता। अपने कार्य स्वयं कर लेते किसी को कष्ट न देते, अधिकारियों को आदेश देते कि जनता के साथ प्यार–महब्बत का स्वभाव रखें और कहते कि वह केवल समाहर्त्ता (तहसीलदार) बन कर न रह जाएं बल्कि लोगों को आराम पहुंचाएं। जुमे के दिन खुतबे से पूर्व घोषणा करते कि किसी को कुछ कहना हो या किसी अधिकारी की शिकायत हो तो मुझसे कहे मैं सबल के मुकाबले में निर्बल का साथी हूँ।

हज़रते अली (रज़ि) के प्रजा पालन का भी यही हाल था, बैतुलमाल (सरकारी खज़ाना) की सारी आमदनी प्रजा पर खर्च कर देते थे, उनके एक पुराने साथ रहने वाले हज़रते ज़रार बिन ज़मरा का कथन है :–

"वह दो टूक बात करते थे, न्यायपूर्वक निर्णय (फैसला) करते थे, दुन्या की शान व शौकत (वैभव) से उनको घृणा थी, खुरदुरा मोटा लिबास पसंद था मोटा झोटा खाना पसंद था, वह हमी में के आदमी मालूम होते थे। हम सुवाल करते तो जवाब देते, हम बुलाते तो हमारे पास आ जाते, दीनदार का सम्मान करते थे। बलवान को उनकी ओर से कोई उम्मीद नहीं होती थी और निर्बल उनके न्याय से निराश नहीं होता था, मैंने उन्हें रोते और यह कहते हुए सुना है। "अरी दुन्या तू मुझे रिझाने आयी है? दूर हो दूर, तेरी उम्र थोड़ी है तेरा आनन्द तुच्छ है।"

अपने लिए लोगों से ख़िदमत लेना पसंद नहीं करते थे न्याय में भेदभाव न था उत्पीड़ित के न्याय दान के लिए हर समय तैयार रहते थे, शासन की आमदनी से पूर्णतया बचते और बैतुलमाल से अपने ऊपर कुछ न खर्च करते। ❐❐❐

# ख़राबियां कहां से आ रही हैं

*– मुहम्मदुल हसनी*

अच्छे आचरण और चरित्र की समस्या आज घर, मुहल्ले और मदरसों से लेकर समाज के हर स्तर पर एक अति कठिन समस्या बन चुकी है। हमें सोचना चाहिए कि वह क्या रूकावटें और बाधाएं हैं जिनकी वजह से यह समस्या किसी प्रकार काबू में नहीं आ पाती। यदि धार्मिक शिक्षा की ओर से लापरवाही इसका कारण है तो प्रश्न उठता है कि यह कमी या खराबी मदरसों या शिक्षा संस्थाओं में क्यों हैं। यदि माँ–बाप की गफलत और बेदीनी इसकी ज़िम्मेदार है, तो खराबी उन घरानों में कैसे है जहां धार्मिक और दीनी माहौल पाया जाता है और लड़कों की देखभाल और तरबियत (आचरण–सुधार प्रशिक्षण) का भी सही प्रबन्ध है।

यह सत्य है कि वर्तमान युग का ज़हरीला माहौल और प्रलोभन का वह संसार जिसमें हम रह रहे हैं, बड़ी हद तक इसका ज़िम्मेदार है। परन्तु यह कहकर हम अपनी ज़िम्मेदारियों से छुटकारा नहीं पा सकते इसलिए कि हमें जितना करना चाहिए उतना शायद हम नहीं कर रहे हैं और सम्भवतः इस समस्या का सिरा अभी तक हमारे हाथ नहीं आ सका है।

मदरसों और शिक्षा संस्थाओं की हद तक यह कहा जा सकता है कि ख़राबी जिधर से आ रही है उधर अब तक हमारा ध्यान नहीं जा सका है या यह कि हम सारी कोशिशें इसके विपरीत दिशा में कर रहे हैं।

मदरसों और शिक्षा संस्थाओं में मुख्यतः इसका कारण दअ़वती (अच्छे आचरण की ओर निमंत्रित) सोच के ढंग और जज़्बे की कमी है जो इन तमाम खराबियों के लिए ढाल का काम दे सकते थे। दुर्भाग्यवश दअ़वत और तालीम व तरबियत को दो अलग–अलग चीज़ें समझ लिया गया है। हम विद्यार्थियों को तो यह पढ़ाते हैं कि दीन के लिए कोशिश और प्रयास असत्यवादी लोगों का मुकाबला और उनको दीन की दअ़वत देना ईमान का तकाज़ा और इस्लामी कर्तव्य है, लेकिन यह कोशिश नहीं करते कि उनके अंदर दअ़वती जज़्बा पैदा हो। वह हालात का केवल तमाशाई बनकर न रहें बल्कि असत्य की शक्तियों और वर्तमान युग के फ़ितनों (उपद्रवों) से मुकाबला करने का साहस रखें। हम अपने विद्यार्थियों पर इस इच्छा को समय–समय पर प्रकट करते रहते हैं परन्तु इनके क्रियात्मक कार्यक्रम या टाइमटेबुल हमने ऐसे नहीं बनाए जिनसे उनके अंदर यह बात स्वतः पैदा हो सके।

> **एक टाइमटेबुल और अनुशासन अर्थात यह कि उनके दिन–रात का हर क्षण किसी लाभप्रद काम में व्यतीत हो सिवाय उन क्षणों के जो दीन और विचारों की ताज़गी के और विश्राम के लिए ज़रूरी है। दूसरे उनके विचारों की रहनुमाई और रूहानी प्रशिक्षण के लिए तरबियत कोर्स जिसमें विभिन्न विषयों पर प्रसिद्ध विचार को और आलिमों के लेक्चरों का प्रबन्ध हो और वह चीज़ें शामिल की जाएं जिनसे उनके दिलो–दिमाग को गिज़ा मिले।**

मनुष्य का स्वभाव है कि किसी को बुराई से रोकना उसके लिए आसान है। किसी गलत दृष्टकोण या जीवन शैली पर आलोचना और बड़े से बड़े चैलेंज का मुक़ाबला उसके लिए संभव है लेकिन ख़ामोश तमाशाई बनकर अपने को बचा ले जाना असंभव है।

यदि हम किसी को ग़लत काम से मना करते रहेंगे तो उसका करना हमारे लिए अवश्य कठिन होगा, अगर हम दिल से प्रभावित हों और ज़बान से उसको मना भी करें तो एक न एक दिन हम भी उसमें गिरफ़्तार हो सकते हैं।

दअ़वत स्वतः एक बहुत बड़ा घेरा (बुराईयों से बचने का) है। यह ऐसा घेरा है जिसके बाद न बहुत अधिक निगरानी की आवश्यकता बाक़ी रहती है और न पहरे चौकी की।

यूरोप और अमरीका में रहने वाले बहुत से ऐसे विद्यार्थियों से हम परिचित हैं जो माद्दियत (वस्तुवाद) के इस महा सागर में रहकर भी बुराईयों में लिप्त नहीं थे। यह वह लोग थे जिन्होंने चुप रहना पसंद नहीं किया। उन्होंने अपने जैसे विद्यार्थियों की एक संस्था बना ली और उस वस्तुवादी चैलेंज का सामना करने के लिए खड़े हो गए। उन्होंने खुल कर उसकी आलोचना की और उसकी गिरावट और नाकामी सिद्ध की और जो लोग वहां अच्छे आचरण के प्रचारक बन कर नहीं रहे वह अपने को इस भयानक सैलाब से चन्द दिन के लिए भी नहीं रोक सके। हम बहुत से ऐसे लोगों को जानते हैं जिन्हें अपनी दीनदारी और ज्ञान पर नाज़ था लेकिन उनके अंदर दअ़वत का जज़्बा और मुलसलमानों के दर्द का अभाव था, आज वह अपनी आचरण संबंधी दौलत से

हाथ धो चुके हैं। इसके विपरीत उनके वह साथी जो इस स्तर के न थे केवल इस दअ़वत की बदौलत बहुत इज़्ज़त और सम्मान का जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उनको देख–देख कर दूसरे लोगों का जीवन बदल रहा है।

हमारे मदरसे भी वस्तुवाद (भौतिकवाद) के सागर में एक द्वीप की तरह हैं। उनके लिए बचाव का एक ही रास्ता है वह यह कि उनका हर नवजवान दीन का प्रचारक हो। उनमें यह भावना हो कि हमें हर महाज़ पर पराजित करना है जो इस्लाम के खिलाफ मोर्चा बना रहे हैं।

इस दअ़वती जज़्बे के पैदा करने के लिए दो चीज़ें बहुत लाभप्रद और प्रभावशाली साबित हो सकती है। एक टाइमटेबुल और अनुशासन अर्थात यह कि उनके दिन–रात का हर क्षण किसी लाभप्रद काम में व्यतीत हो सिवाय उन क्षणों के जो दीन और विचारों की ताज़गी के और विश्राम के लिए ज़रूरी है। दूसरे उनके विचारों की रहनुमाई और रूहानी प्रशिक्षण के लिए तरबियत कोर्स जिसमें विभिन्न विषयों पर प्रसिद्ध विचार को और आलिमों के लेक्चरों का प्रबन्ध हो और वह चीज़ें शामिल की जाएं जिनसे उनके दिलो–दिमाग को गिज़ा मिले। अरबी मदरसे मिल्लत और दीन के लिए एक किला की हैसियत रखते हैं लेकिन यह ऐसा किला है जिसके अन्दर रहने वाले अपने खोल से बाहर निकलने के लिए बेताब हैं और बाहर वाले उसको तोड़ देने के लिए पीछे पड़े हैं। हवा का रूख बता रहा है कि अब हमें इन विद्यार्थियों को बाहरी शक्तियों और हमलों से बचा–बचा कर रखना चाहिए।

**अनुवाद : हबीबुल्लाह आज़मी**

❐❐❐

पृष्ठ 36 का शेष...

तो लकड़ी है जो नील में गिर गयी है। मलिका ने कहा कि नहीं वह तो संदूक़ ही है। बादशाह ने अपने नौकरों में से एक नौकर से उस संदूक़ को निकालकर लाने को कहा। संदूक़ लाया गया। उस को खोला तो उस में हंसता खेलता एक खुबसूरत लड़का था। सबको बड़ी हैरत हुई। हर एक उस को लेने और देखने लगा। फ़िरऔन को भी हैरत हुई। कुछ नौकर बोले कि यह बच्चा इस्राईली मालूम पड़ता है। बादशाह को तो इसे क़त्ल करा देना चाहिये।

मलिका ने अब उस बच्चे को देखा तो उसकी ममता दिल में पैदा हुई और महब्बत में उस को सीने से लगाया और उसको प्यार करने लगी। बादशाह से कहा कि इसको क़त्ल मत कीजिये। यह तो हमारे आप के लिये आंखों की ठंडक होगा। सम्भव है कि यह हमारे लिये लाभदायक हो या फिर हम इसको बेटा बना लें।

इस तरह मूसा–बिन इमरान फ़िरऔन के महल में पहुँच गये। फ़िरऔन और उसकी पुलिस की छत्रछाया में बढ़े और पले। कौओं की आँखें और चींटी की सूंघ होते हुए भी पुलिस मूसा तक न पहुँच सकी।

अल्लाह ने चाहा कि बच्चों के दुश्मन फ़िरऔन के हाथों मूसा की परवरिश (पालन–पोषण) हो जिसके हाथों इस की हुकूमत जानी है।

बेचारा फ़िरऔन मूसा के मामले में धोखा खा गया। उसके साथ उसके वज़ीर हामान और उसका लश्कर (सेना) भी धोखा खा गया। और (संदूक़ खोलने पर खूबसूरत दुधमुहें बच्चे को देखकर) फ़िरऔन की औरत (अपने पति से) बोली यह मेरी और तुम्हारी आँखों की ठंडक है। इसको मार मत डालो। आश्चर्य नहीं कि हमारे काम आये। या इसको हम अपना बेटा बना लें। उनको (भविष्य की) ख़बर न थी।

## बच्चे को दूध कौन पिलाये

यह नया और खूबसूरत बच्चा महल में सब का खिलौना था। हर आदमी उसको लेता और प्यार करता था। हर एक उसको चाहता और उसकी तारीफ़ (प्रशंसा) करता था इसलिये कि मलिका उस को बेहद चाहती और प्यार करती थी। मलिका के चाहने की वजह से हर एक इस खूबसूरत बच्चे को खिलाता और उसको प्यार करता था। बच्चे को दूध पिलाने के लिये मलिका ने दाई बुलाई, दाई आयी और दूध पिलाना चाहा तो वह बच्चा रोता और दूध नहीं पीता था। मलिका ने दूसरी दाई बुलाई। उसका भी बच्चे ने दूध नहीं पिया और रोता रहा। चार पाँच दाई बुलाई गईं लेकिन उसने किसी का दूध नहीं पिया और रोना भी बंद नहीं हुआ। सब को हैरत थी उस के दूध न पीने पर। सब परेशान थे कि बच्चा क्यों बराबर रो रहा है। हर दाई ने पूरी कोशिश की दूध पिलाने और मलिका को खुश करने की, इनआ़म (पुरस्कार) की लालच में। लेकिन अल्लाह ने हर दाई का दूध उन पर हराम कर दिया था, बच्चा महल में तथा लोगों के घरों में वार्तालाप (गुफ़तगू) का विषय बन गया। एक औरत दूसरी से पूछती, अरे तुमने उस नये बच्चे को देखा? जवाब मिलता हाँ देखा बड़ा सुन्दर बालक है, लेकिन वह तो अ़जीब बच्चा है किसी दाई का दूध नहीं पीता। कोई दाई जब उसको दूध पिलाना चाहती है तो दूध पीने से इन्कार करता और रोता है। बेचारा बिना दूध पिये कैसे जियेगा। उसने कहा हाँ कितने दिन गुज़र गये और बच्चे ने दूध नहीं पिया।

❐❐❐

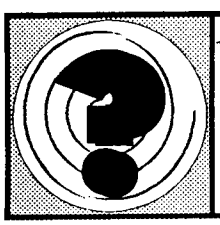

# आपकी समस्याएँ और उनका हल

– मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

**प्रश्न– 1. इल्म में किसी को शरीक करने का क्या मतलब है वज़ाहत फरमाएं।**

उत्तर– मतलब यह है कि किसी बुजुर्ग या पीर के साथ यह एतिकाद करना कि हमारे सब हाल की इसको हर वक़्त ख़बर है। नुजूमी या पण्डित आदि से भविष्य की बातें पूछना या किसी बुजुर्ग के कलाम से फाल देख कर उसको यकीनी समझना या किसी को दूर से पुकारना और यह समझना कि इसको खबर हो गयी है यह सब इल्मी शिर्क है।

**प्रश्न– 2. इबादत के शिर्क को कैसे समझेंगे? विस्तार पूर्वक लिखें?**

उत्तर– इबादत का शिर्क यह है जैसे किसी को सज्दः करना किसी के नाम का जानवर छोड़ना, चढ़ावा चढ़ाना, किसी के नाम की मन्नत मानना, किसी की क़ब्र या मकाम का तवाफ करना अल्लाह के हुक्म के मुकाबिले में किसी दूसरे क़ौल या रस्म को प्राथमिकता देना किसी के सामने झुकना या बिल्कुल सीधा दीवार की तरह खड़ा रहना, ताज़िया अलम आदि रखना, किसी आस्ताने पर बकरा चढ़ाना किसी के नाम जानवर ज़िब्हः करना, किसी की दुहाई देना किसी जगह को कअ़बः की तरह अदब से इज्ज़त देना या चक्कर लगाना।

इसी तरह किसी के नाम पर बच्चे के कान व नाक छेदना, बाली पहनाना, किसी के नाम का पैसा बाजू पर बांधना या गले में नाड़ा डालना, सेहरा बांधना, चोटी रखना, बद्धी पहनना, फकीर बनाना, अली बख़्श, हुसैन बख्श आदि नाम रखना, किसी चीज़ को अछूती समझना किसी जानवर पर किसी का नाम लगा कर उनका अदब करना, मुहर्रम के महीने में पान न खाना, लाल कपड़ा न पहनना, सितारों की दुन्या के कारोबार में तासीर समझना अच्छी बुरी तारीख मानना, शुगून लेना, किसी महीने को मनहूस समझना, किसी बुजुर्ग का नाम बतौर वज़ीफ़े के जपना या इस तरह कहना कि अल्लाह और रसूल चाहेगा तो फ़लां काम हो जाएगा या किसी के नाम की क़सम खाना, किसी को शहंशाह कहना किसी बुजुर्ग की तस्वीर बरकत के लिए रखना और उसकी ताज़ीम करना।

**प्रश्न– 3. मैं बराबर सुना करता हूं कि गुनाह कबीरा न करो, तो यह गुनाह कबीरा क्या होते हैं ?**

उत्तर– गुनाह कबीरा बड़े गुनाह को कहते हैं जैसे अल्लाह का साझीदार बनाना, खूने नाहक करना, माँ–बाप को तकलीफ देना औरत से ज़िना करना, यतीमों का माल खाना, किसी औरत को झूठी तोहमत ज़िना की लगाना, काफिरों के साथ जब जंग हो रही हो वहां से भागना, शराब पीना जुल्म करना, किसी के पीछे बदी से याद करना, किसी के हक़ में बदगुमानी करना, अपने को दूसरों से अफज़ल (अच्छा) समझना, अल्लाह से न डरना, अल्लाह की रहमत से नाउम्मीद होना, किसी से वादा कर के पूरा न करना, पड़ोसी की बहू–बेटियों पर नज़र बद डालना, किसी की अमानत में ख़ियानत करना, अल्लाह का कोई फर्ज़ हुक्म जैसे नमाज़, रोज़ः और ज़कात व हज छोड़ देना, कुर्आन शरीफ़ पढ़कर भुला देना, सच्ची गवाही छुपाना, झूठी गवाही देना, झूठ बोलना, अल्लाह के अलावा किसी के नाम की कसम खाना, अल्लाह के अलावा किसी और को सजदः करना, जुमा की नमाज़ छोड़ देना, मुसलमानों को काफ़िर कहना, चोरी करना, ज़ालिमों की खुशामद करना, ब्याज या रिश्वत लेना, झूठे मुक़दमें का फ़ैसला करना, सौदा लेने देने में कम तौलना मोल–भाव करने के बाद फिर आखिर में ज़बर्दस्ती से कम देना, लड़कों से बदफ़ेली करना, हैज़ की हालत में अपनी बीवी से सुहबत करना, अनाज के महंगा होने से खुश होना, किसी ग़ैर औरत के पास तन्हा बैठना, जानवरों से बदफ़ेली करना, जुआ खेलना, काफ़िरों की रस्में पसंद करना, नुजूमी की बातों को सच्चा जानना, अपनी इबादत पर गर्व करना, मुर्दों के पास चीख़–पुकार क़र रोना और अपने को पीटना, खाने को बुरा कहना, नाच देखना, लोगों को दिखाने के लिए इबादत करना, किसी के घर में बिना इजाज़त दाख़िल होना, कुदरत होने के बावजूद नसीहत न करना, किसी का ऐब ढूंढना आदि।

**प्रश्न– 4. हमारे यहां लोग बेटे की कसम खाते है या अपने जान की, इस तरह की क़सम खाना कैसा है।**

उत्तर– अल्लाह की क़सम के अलावा किसी दूसरे के नाम की क़सम खाना हराम है जैसे बेटे की, बाप की, या और किसी मख़लूक की हरगिज़ क़सम नहीं खाई जाएगी।

शेष पृष्ठ 34पर

महिलाओं के लिए

# माहौल की सुरक्षा के लिए घरेलू उपकरणों की देखभाल

— अब्दुर्रहमान
साइन्स टीचर

**घर में प्रयोग होने वाले उपकरणों की देख भाल सही ढंग से होने पर उपकरणों की ज़िंदगी बढ़ जाती है और इस प्रकार दुर्घटनाओं की संभावना नहीं रहती।**

आज हमारी रोज़मर्रह के जीवन में घर में प्रयोग होने वाले यंत्रों का बहुत बड़ा महत्व है क्यों कि उनके द्वारा हमारा जीवन आरामदेह हो गया है। जैसे खाना पकाने के लिए गैस, भोजन वस्तु सुरक्षित रखने के लिए तथा ठंडा पानी के लिए फ्रिज, बिजली पंखे, एयर कूलर, सिलाई मशीन, बिजली के सामान हीटर, गीज़र, कपड़े धोने की मशीन, बिजली की केतली, बल्ब एवं ट्यूब आदि। घर में प्रयोग होने वाले नये उपकरणों के ख़रीदने से अधिक आवश्यक यह है कि ऐसे तमाम उपकरणों की देख भाल सही ढंग से की जाए। उपकरणों को अनुचित ढंग से रखने से उनको हानि पहुंच सकती है और जल्दी में ग़लत ढंग से प्रयोग करने और टूटे पुर्ज़ों में बिजली के वोल्टेज के घटने बढ़ने से या स्पार्किंग से बिजली से चलने वाले सामान जल जाते हैं और इस तरह खराब उपकरणों से दुर्घटनाएं भी हो सकती हैं। अतः ज़रूरी है कि पाबन्दी के साथ उपकरणों के रख रखाव का ध्यान रखें ताकि यह अधिक दिनों तक उपयोगी रहें।

यदि हम घरों में प्रयोग होने वाले उपकरणों का जाइज़ा लें तो हम देखते हैं कि घरों में इस तरह के कई सामान बस किसी तरह काम कर रहे हैं लेकिन खरीदारी के समय यही उपकरण महंगे और खूब देख भाल कर ख़रीदे जाते हैं और कुछ दिनों तक उनकी सफ़ाई और रख रखाव का भी ध्यान रखा जाता है लेकिन थोड़े दिनों बाद उसे अनावश्यक समझ कर महिलाएं छोड़ देती हैं। जैसे गैस चूल्हे के स्टोव के सूराख को लीजिए जो बन्द हो गए हों और नीली लव के स्थान पर पीली लव बन रही है। फिर भी उसी हालत में आप उसे प्रयोग में ला रही हैं और कहती हैं कि काम तो चल रहा है। इसी प्रकार ट्यूब लाईट का चोक काफ़ी आवाज़ करता है तो उस पर हमारी नज़र नहीं जाती, ट्यूब आख़िर जल ही रही है। इसी प्रकार प्रेशर कुकर की मिसाल लीजिए कि यदि उसका रबर ख़राब हो गया है और भाप निकलती रहती है, सीटी प्लग अगर ख़राब है फिर भी हम उससे काम लेते रहते हैं। उससे खाना देर से पकताहै लेकन काम तो चल रहा है और दूसरी तरफ़ गैस अधिक ख़र्च हो रही है या भाप से प्रदूषण पैदा हो रहा है। हम कभी नहीं सोचते लेकिन इस प्रकार ज़बरदस्ती इस्तेमाली उपकरणों से काम लेने से खतरा बढ़ता है।

घर में प्रयोग होने वाले उपकरणों को अधिक उपयोग बनाए रखने के लिए कुछ बातों का ख़्याल रखना ज़रूरी है। सबसे पहले प्रसिद्ध और भरोसे वाली कम्पनी के ही यंत्र ख़रीदें। ख़रीदारी के समय कुछ क़ीमत कम होने से ख़राब क़िस्म के उपकरण जो मापदंड पर पूरे नहीं उतरते न ख़रीदें क्योंकि अच्छे प्रकार के घरेलू उपकरण ख़रीदने का एक बड़ा लाभ यह है कि बाद में उनके रख रखाव में कम ख़र्च आता है। इन उपकरणों के साथ कम्पनियां उनके प्रयोग के सही ढंग को समझने के लिए एक संक्षिप्त पुस्तिका भी देती हैं ताकि हम उसका प्रयोग करना अच्छी तरह समझ लें और बताई हुई बातों का ध्यान रखें और उसी रोशनी में उन उपकरणों का प्रयोग करें। इससे यह लाभ होगा कि उपकरण बुनियादी तौर पर सुरक्षित रहेंगे। वह उसी प्रकार चमकदार और सुन्दर नज़र आएंगे। इस बात का हमेशा ध्यान रखें कि इनमें किसी प्रकार का मोरचा न लगे और इसके लिए आप को प्रयोग के बाद पानी से बचाना होगा। कुछ उपकरणों में जहां ज़रूरत हो कभी कभी तेल डालते रहें। उपकरणों को ढक कर रखें, उसकी सफ़ाई का भी ख़ियाल रखें। नये उपकरणों के बारे में पहले से जानकारी प्राप्त कर लेना आवश्यक है।

यह भी सही है कि सभी प्रकार के उपकरण को एक ही जैसी देखभाल की ज़रूरत नहीं पड़ती है। जैसे कुछ उपकरण तो ऐसे होते हैं जिनकी देख भाल हर रोज़ करनी होती है लेकिन कुछ उपकरण ऐसे भी हैं जहां देख भाल के लिए अधिक मेहनत की आवश्यकता नहीं होती है। अतः ज़रूरी है कि बड़े उपकरणों की देख भाल पहले करें जैसे फ्रिज, कूलर, टी०वी०, गीज़र आदि जिससे घर के कामों पर असर पड़ सकता है, परन्तु लगातार सफ़ाई और देख भाल से उनकी कार्य क्षमता बढ

जाती है और वह अधिक दिनों तक उपयोगी बने रहते हैं। इस सिलसिले में अगर आप घर में प्रयोग होने वाले सभी उपकरणों की सफ़ाई और देख भाल के लिए एक स्मरण सूची बना लें जिसमें यह लिखें कि किस समय कौन सा काम करना है। उससे देख भाल में पाबन्दी होगी और भूलने की समस्या समाप्त हो जाएगी।

अनावश्यक तौर पर मशीनों को बार–बार साफ़ करने से भी मशीन ख़राब हो सकती है। उपकरणों को ऊपर से देख कर, उसे चलाकर या फिर उसके विभिन्न भागों को खोल कर देखें कि कहीं कोई पुर्ज़ा टूट तो नहीं गया है या वह काम के योग्य नहीं रहा है या कमज़ोर है तो उसे बदल दें। यंत्रों की देख भाल और उसकी सफ़ाई मशीन की ज़िंदगी को बढ़ाती है। बहुदा आपने महसूस किया होगा कि जिस पुर्ज़े की सफ़ाई नहीं होती वह अचानक ख़राब हो जाते हैं और उनके पुर्ज़े जल्द ही उनोपयोगी होकर रह जाते हैं। मशीनी पुर्ज़ों में आपस में फ्रिंक्शन पैदा होता है जिसे कम करने के लिए मशीन में तेल डालना बहुत ज़रूरी है इससे मशीन में मोरचा भी नहीं लगता। मशीनी तल के नीचे यदि कोई सख़्त कण आ गये हैं तो वह आसानी से निकल जाते हैं साथ ही गर्मी भी निकल जाती है। इसका एक बड़ा फ़ाइदा यह होता है कि अधिक रफ़्तार और अधिक ताप पर काम इन मशीनों से ठीक ढंग से लिया जा सकता है क्योंकि तेल या ग्रीस दो सतहों के बीच स्पांजी प्रभाव पैदा करती है और मशीनी झटके को भी किसी हद तक बर्दाश्त कर लेती हैं। अतः मिक्सी और ग्राइंडर में आवश्यकता के अनुसार तेल डालना बहुत ज़रूरी है। प्रयोग में आने वाले मशीनी यंत्रों को नमी, तेज़ाब, धुवें और तेल से बचाना चाहिये। यह चीज़ें ऐसी हैं जिनसे उनकी कार्य क्षमता में कमी हो जाती है। धुवां और गैस का निकलना घर में प्रदूषण (आलूदगी) का कारण होते हैं और प्रदूषण हमारे माहौल को प्रभावित करता है। इसी प्रकार किसी मशीन के द्वारा यदि ऐसी चीज़ें पैदा होती हैं तो उसे समाप्त करने की कोशिश करना चाहिये। उदाहरण के तौर पर बिजली के तार गल जाते हैं जिससे पूरे उपकरण में करेंट आ सकता है। अतः प्रयोग के बीच यह ध्यान रखें कि पुर्ज़ों का आकार या नाप तो नहीं बदल रही है। पुर्ज़े प्रयोग की अवध में गर्म तो नहीं हो जाते, यंत्रों में किसी प्रकार का झटका तो नहीं पैदा होता या थरथराहट अधिक तो नहीं है। स्विच आन करने पर मशीन काम करना तो नहीं छोड़ देती। मशीनी सतह पर कहीं मोरचा तो नहीं लगा है या कहीं जली हुई तो नहीं है। मशीन में कहीं दरारें तो नहीं बन गई हैं।

**कूलर :**

कूलर का टैंक हफ़्ते में एक बार ख़ाली करके साफ़ करना चाहिये। कूलर में बिजली की फ़िटिंग अच्छी तरह करना चाहिये अन्यथा थोड़ी सी ख़राबी ख़तरनाक सिद्ध हो सकती है।

मौसम समाप्त होने के बाद उसकी मोटर में तेल डाल देना चाहिये और उसे पैक करके रखना चाहिये। इसके इग्ज़ास्ट पंखे में भी तेल आदि डाल कर पैक करना चाहिये।

**बिजली के पंखे :**

मौसम के शुरू में पंखे की मशीन में तेल ज़रूर डालें। मौसम बदलते ही छत के पंखों के तीनों डैनों के पेच खोल कर अलग कर लें और मशीन पर कपड़े का खोल चढ़ा दें ताकि उसमें मिट्टी, गर्द व गुबार आदि न जाने पाएं। इसी प्रकार टेबुल फैन और दूसरे पंखों को कपड़े के थैले में लपेट कर रखें। पंखा बिना आवाज़ के चलना चाहिये यदि तनिक भी आवाज़ आती है तो तेल डालें फिर भी यदि ठीक काम नहीं करता तो मेकैनिक को दिखा लें।

**हीटर :**

गर्मी के दिनों में उन्हें लिफ़ाफ़े में ढक कर रखें। खाना पकाने वाले हीटर पर खाने का बर्तन नीचे से साफ़ करके रखें अन्यथा उस पर पानी गिरने से हीटर के तार टूट जाएंगे। खाना पकान वाले हीटर में इलिमेंट का तार बरतन से नहीं छूना चाहिये नहीं तो बिजली का झटका लग सकता ह। इलिमेंट के नीचे की चीलीप्लेट टूटी नहीं होनी चाहिए।

**पानी गर्म करने का राड :**

राड को पानी की बालटी में वहीं तक डुबाएं जहां तक कि निशान बना हुआ है। पानी लोहे की बालटी में गर्म करें। उसे पानी में डालने के बाद स्विच आन करें और आफ़ करने के बाद ही उसे पानी से निकालें क्योंकि सारे पानी में करेंट होता है और यह ख़तरे से ख़ाली नहीं है।

**फ़्यूज उड़ना :**

याद रहे एक ही सर्किट में एक ही समय में कई बिजली के उपकरण का प्रयोग होता है तो हलके तारों को शार्ट होने का डर रहता है। ऐसी हालत में पहले फ्यूज़ उड़ जाता है।

उस समय होशियारी के साथ देखना चाहिये। यदि बहने वाली बिजली के बहाव की मात्रा के अनुसार बिजली के उपकरणों में उपयुक्त तार का प्रयोग न करके पतले तार का प्रयोग किया गया है तो आग लगने का ख़तरा रहता है क्योंकि पतले तार में अधिक मात्रा में बिजली की लहरें बहने से वह गर्म हो जाता है और कई बार वह इतना अधिक गर्म हो सकता है कि आग लग सकती है। बिजली के कटे तारों के साथ इसका प्रयोग ख़तरे से

शेष पृष्ठ 24 पर

# स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतीय मुसलमानों की भूमिका

**(पहली क़िस्त)**

*— प्रो. शान्तिमय राय (कोलकता)*

आज़ादी की लड़ाई और आधुनिक भारत के निर्माण में भारत के सबसे बड़े अल्पसंख्यक समुदाय मुसलमानों के योगदान को घटाकर दिखाने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति उन लोगों के लिए चिन्ता का विषय बन गयी है जो देश की अखण्डता और एकता तथा उसकी खुशहाली और तरक्की के लिए चिन्तनशील हैं। इस वस्तुस्थिति की इतनी ज़िम्मेदारी मुसलमानों पर भी है कि उन्होंने विचारों के आदान–प्रदान के विभिन्न माध्यमों से अपने और अपनी कृतियों से बहुसंख्यक समुदाय को परिचित नहीं कराया। इस दिशा में सही जानकारी कराने का यह एक तुच्छ प्रयास है।

प्रस्तुत पुस्तक बंगाली विद्वान प्रोफेसर शान्तिमय राय की पुस्तक "रोल ऑफ इन्डिन मुस्लिम्स इन दी फ्रीडम मूवमेन्ट" का हिन्दी अनुवाद है। देश की वर्तमान परिस्थितियों में यह अनुवाद पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए आशा है कि इससे आज़ादी की लड़ाई में भारतीय मुसलमानों के त्याग और बलिदान की न केवल वास्तविक तस्वीर सामने आयेगी बल्कि इससे राष्ट्रीय एकता को भी बल मिलेगा। *अनुवादक*

## प्रस्तावना

प्रोफेसर शान्तिमय राय कलकत्ता के सार्वजनिक जीवन में अच्छी ख्याति रखते हैं। जब किसी अच्छे काम के लिए संघर्ष किया जा रहा हो आप उन्हें विस्मृत नहीं कर सकते हैं। राष्ट्रीय मुक्ति के लिए उनके जीवन पर्यन्त संघर्ष ने उन्हें भारतीय इतिहास के अध्ययन हेतु प्रेरित किया और अब वह इतिहास के एक शिक्षक हैं।

कतिपय "हिन्दू" इतिहासकारों द्वारा ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध मिलजुल कर लड़ी गयी लड़ाई में मुसलमानों के योगदान पर धूल डालने तथा उसकी ग़लत व्याख्या किये जाने के निरन्तर प्रयास ने शान्तिमय राय को सच्चाई को खोलकर रख देने हेतु प्रेरित किया। इसी का नतीजा यह "नोट" हैं। इन्हें पढ़ने वाले कह सकते हैं कि यह अत्यंत संक्षिप्त है और रूपरेखा मात्र प्रस्तुत करते हैं। परन्तु यह हमारी अज़ादी की लड़ाई में मुसलमानों की निष्क्रिय अथवा नकारात्मक भूमिका की मनगढ़त कहानी, जो जनसंघ की मुसलमानों के "भारतीयकरण" की अनर्गल मांग जिससे आपस में मारकाट होती है की बुनियाद है, को ढा देने के लिए काफी है।

प्रो. शान्तिमय राय ने एक प्रमाणिक ऐतिहासिक दस्तावेज़ प्रस्तुत किया है जो जनसंघ की मुसलमानों के विरुद्ध साम्प्रदायिक दंगों और उसकी पैशाचिक चाल के विरुद्ध एक अभियान छेड़ देने वाली पुस्तिका के अत्यंत उपयोगी उद्देश्य की पूर्ति करती है। इतिहास को तोड़–मरोड़ कर पेश करने से ग़लत उद्देश्य की पूर्ति होती है जबकि हमारी राष्ट्रीय विरासत की अच्छी बातों को लोकप्रिय बनाने से सही लक्ष्य की प्राप्ति होती है।

*22 दिसम्बर 1970 पी.सी. जोशी*

## लेखक की क्षमा याचना

इस विषय पर कुछ लिखने के लिए मुझे सबसे पहले मध्य अक्टूबर 1969 में अहमदाबाद के दंगाग्रस्त इलाकों के दौरे के समय विचार में आया। गवर्नमेंट हाउस में कुछ अध्यापकों और छात्रों से मेरी बात हो रही थी। मैंने देखा कि एक प्रोफेसर मुझे यह समझाने की कोशिश कर रहे हैं कि इस एक पक्षीय नरसंहार में बहुसंख्यकों के नकारात्मक दृष्टिकोण का मुख्य कारण स्वतंत्रता आंदोलन में अल्पसंख्यकों का विश्वासघात था और यह कि उन्होंने हमारी आजादी की लड़ाई में कोई योगदान नहीं दिया है। भारत–पाक युद्ध के दौरान मैंने पश्चिमी बंगाल के एक वरिष्ठ कांग्रेसी नेता को गंभीरतापूर्वक अपने छात्रों से यह कहते हुए सुना कि स्वतंत्रता आंदोलन में मुसलमानों की भूमिका नकारात्मक रही है। मैं देखता हूं कि स्कूल और कालेज के अध्यापकों में स्वतंत्रता आंदोलन में भारतीय मुसलमानों की भूमिका के प्रति एक सच्ची किन्तु भयावह अनभिज्ञता पायी जाती है। हमारी पूरी पीढ़ी के सामने विख्यात इतिहासकारों द्वारा इतिहास को मनगढ़त मिथ्याओं के रूप में तोड़–मरोड़ कर प्रस्तुत किया गया है। इतिहास को तोड़–मरोड़ कर प्रस्तुत करना एक पुरानी कला है जिसका प्रयोग मिथ्या और झूठ के गढ़ने वाले कुछ बुद्धिजीवियों ने वर्तमान समय में किया है और जिनकी "सेवाओं" का भरपूर लाभ उठाकर एक स्वच्छ ढांचे पर राष्ट्र निर्माण के किसी प्रयास को उभरने नहीं दिया गया है। यद्यपि मैं अपने को कोई बड़ा विद्वान नहीं गिनता (समाज सेवा कार्य में लीन एक अध्यापक) तथापि मुझे परिस्थितियों ने बाध्य किया कि मैं इतिहास के पन्नों से और अपने स्वयं के अनुभवों से ग्रीष्मावकाश में आयोजित इतिहास के अध्यापकों के शिविर में दिये जाने वाले लेक्चर के लिए राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन में भारतीय मुसलमानों के रोल पर कुछ नोट तैयार करूं।

जब पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस ने इन व्याख्यानों को प्रकाशित करने हेतु पहले मुझे लिखा तो मेरी इच्छा इसे प्रकाशित कराने की नहीं थी, केवल इस लिए कि यह नोट और अधिक विवेचना चाहते हैं। किन्तु अन्ततः जब मुझे बताया गया कि यह नोट नवजवान विद्यार्थियों को समस्या के और अधिक विस्तारपूर्वक अध्ययन हेतु उत्साहित करने तथा प्रजातांत्रिक शक्तियों को सहायता पहुंचाने में बड़ी हद तक इतिहास को झुठलाने वालों, जो भारतीयकरण के सिद्धांत को बढ़ावा दे रहे हैं, के विरुद्ध संघर्ष छेड़ने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं तो मुझे इनके प्रकाशन के लिए तैयार होना पड़ा।

मुझे आशा है कि यह नोट भारतीय मुसलमानों के स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान को उचित ढंग से समझने के लिए एक नई चेतना जागृत करेंगे। इस सम्बन्ध में पाठकों से मुझे जो सुझाव और सामग्री प्राप्त होगी वह स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास को एक ठोस और मज़बूत बुनियाद देने तथा सच्ची राष्ट्रीयता जागृत करने में सहायक सिद्ध होगी

*15 अगस्त, 1970* *शान्तिमय राय*

## समर्पण

"भारत और पाकिस्तान के उन शहीदों के नाम समर्पित जिन्होंने वर्ष 1965 में अल्पसंख्यकों की रक्षा करने में अपने प्राणों की आहुति दी।"

## मुसलमान तथा क्रान्तिकारी आन्दोलन

कुछ महीने पहले मुझे एक प्रसिद्ध इतिहासकार के भाषण सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके भाषण का मुख्य विषय यह था कि मुसलमानों ने हिन्दुस्तान की आज़ादी की लड़ाई में विश्वासघात किया जिसका आवश्यमभावी परिणाम भारत का बंटवारा था। यहां मेरा उद्देश्य भारत के बंटवारे के कारणों पर बात करने का नहीं है किन्तु इस प्रकार के दुर्भाग्यपूर्ण निष्कर्ष ने और मुसलमानों को देशद्रोही कहकर उन्हें बदनाम करने की कोशिश ने हमारी राष्ट्रीय एकता को प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से बुरी तरह हिलाकर रख दिया है। इस प्रकार के मिथ्यापूर्ण इतिहास ने भारतीय नागरिकों के मन–मस्तिष्क में अविश्वास की अभेद्य दीवार खड़ी करने में मदद दी है। इस बात ने मुझे मजबूर किया कि मैं अंग्रेजी शासक के विरुद्ध लड़ी गयी लड़ाई में मुसलमानों के गौरवपूर्ण योगदान की चर्चा का शुभारंभ करूं।

इतिहास के विद्यार्थी भली प्रकार जानते हैं कि अंग्रेजों के विरुद्ध सबसे पहले उन्नीसवीं शताब्दी के पहले दशक में संघर्ष प्रारम्भ हुआ था। रायबरेली के एक मुस्लिम संत सैय्यद अहमद के नेतृत्व में उत्तरी भारत के वहाबी विचारधारा के अनुयाइयों ने अंग्रेजी शासन के विरुद्ध गांवों से शहरों तक, पहाड़ों से मैदानों तक पच्चीस साल तक डटकर लड़ाई लड़ी। (क्रमशः)

**अनुवादक : मो. हसन अंसारी** ❑❑❑

पृष्ठ 22 का शेष .....

### माहौल की सुरक्षा के लिए घरेलू उपकरणों की देखभाल

हुए हाथ से बिजली के किसी यंत्र का प्रयोग नहीं करना चाहिये अन्यथा बिजली का झटका लग सकता है।

**फ़्रीजरेटर (फ़्रिज) :**

इसे बराबर वाली सतह पर ज़मीन पर रखें। हफ़्ते में एक बार साफ़ करें। दाग़ धब्बों को छुड़ाएं। इसका वोल्टेज कंट्रोल करने के लिए स्टेबलाइज़र ज़रूर लगाएं। फ्रेज का तार बीच में कटा हुआ नहीं होना चाहिए। यदि कटा हो तो उसे टेप लगाकर बन्द कर देना चाहिये ताकि करेंट का डर न रहे। फ़्रिज ठीक करने के लिए पहले स्विच बन्द करके पलग निकालें। पीछे से कंडेंसर को कपड़े या बुरुश से एक डेढ़ महीनें में ज़रूर साफ़ कर लेना चाहिये।

**कपड़े धोने की मशीन :**

हर बार कपड़ा धोने के बाद टैंक विम से साफ़ करना चाहिये और टैंक को कपड़े से शुष्क करना चाहिये। इसका अगला भाग घुमाने से खुल जाता है। उसे खोल कर कभी कभी उसमें मशीन का तेल डालना चाहिये।

**स्त्री (प्रेस) :**

स्वतः कार स्त्री उतना ही गर्म करना चाहिये जितनी ज़रूरत हो। आम स्त्री मशीन अधिक देर तक बराबर प्रयोग से उसका तार जल जाता है। स्त्री पलग और तार आदि की फ़िटिंग ठीक होनी चाहिये।

**बिजली का बल्ब और ट्यूब :**

बल्ब का होलडर ठीक तरह का होना चाहिये। बल्ब और ट्यूब अच्छी कम्पनी का होना चाहिये। ट्यूब यदि ऐसी जगह लगी हो जहां हवा के ठण्डे झोंके आते हों तो ट्यूब जल्दी ख़राब हो जाएगी। यदि ट्यूब में गहरी लाइनें आने लगें तो उसे पूरा घुमा कर फिर ट्यूब को लगाना चाहिये तो अक्सर वह ठीक से जलने लगता है। यदि ट्यूब के दोनों सिरों पर कालापन जाने लगे तो समझ लेना चाहिये कि वह फ्यूज़ होने वाला है।

इन सब यंत्रों के प्रयोग से घरों में प्रदूषण पैदा होता है और हम उस पर कोई ख़ास ध्यान नहीं देते हैं जबकि वातावरण (माहौल) को रोचक रखने के लिए इन यंत्रों को ऐसे प्रयोग किया जाए कि उन से प्रदूषण पैदा न हो।

*अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी*

❑❑❑

# क़रीन, हमज़ाद और भूत

— अबू मरय

क़रीन अरबी शब्द है, इसका अर्थ है "साथ रहने वाला" हमज़ाद फ़ारसी शब्द है, इसका अर्थ है "साथ पैदा होने वाला" भूत हिन्दी शब्द है इसके कई अर्थ हैं, यह प्रेत के अर्थ में भी बोला जाता है, प्रेत मृतात्मा को भी कहते हैं और मरने वाले के शव (लाश) को भी कहते हैं परन्तु जन साधारण भूत उस बुरी आत्मा को कहते हैं जो किसी व्यक्ति के अंतरिम में प्रवेश करके उसके मुख से स्वयं बोलती और उसको सताती है।

कुरआन मजीद में आया है :– "व मय्यअ़शु अ़न् ज़िक्रिर्रहमानि नुक़य्यिज़ लहू शैतानन फहुव लहू क़रीन (43:36) (और जो अल्लाह के ज़िक्र अर्थात कुर्आन से अन्धा बन जाता है यानी उससे मुंह फेर लेता है हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते हैं जो उसके साथ हर समय रहता है।)

कुरआन शरीफ़ से मुंह फेरने वाला न मोमिन न मुस्लिम उस पर एक शैतान मुक़र्रर कर दिया जाता है जो उसे गुनाहों पर उभारता रहता है कुरआन में उसको भी करीन कहा गया है लेकिन हदीस शरीफ़ में एक और क़रीन का वर्णन है जो काफिर तथा मोमिन सबके साथ रहता है।

सहीह मुस्लिम में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया कि तुममें से हर एक के लिए जिन्नों में से एक क़रीन और फ़िरिश्तों में से एक क़रीन मुक़र्रर (नियत) होता है। सहाबा ने प्रश्न किया क्या आपके लिए भी या रसूलल्लाह ? बताया मेरे लिए भी, लेकिन अल्लाह तआ़ला ने उस पर मेरी मदद फ़रमाई और वह मेरे अधीन हो गया, वह मुझे केवल भलाई के लिए कहता है। (मुसनद इमाम अहमद बिन हंबल में भी यह हदीस है)

सहीह मुस्लिम ही की एक और हदीस में भी इसका ज़िक्र है जो हज़रत आइशा (रज़ि) से बयान हुई है। हदीस के आख़िर में है कि हज़रत आइशा ने पूछा कि क्या हर इंसान के साथ एक शैतान है ? हुजूर सल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमायाः– हाँ, हज़रत आइशा ने पूछा क्या आपके साथ भी? फ़रमाया हाँ, लेकिन अल्लाह ने उस पर मेरी मदद की और वह मेरे अधीन हो गया।

एक कमज़ोर रिवायत में है कि अल्लाह तआ़ला ने इबलीस से फ़रमाया कि जब आदम को एक औलाद देता हूं तो तुझ को भी एक औलाद देता हूं। इन हदीसों से यह मालूम हुआ कि हर इंसान के साथ एक शैतान जिन्न रहता है, लेकिन इन्सान को पूरा अधिकार दिया गया है और सत्य तथा असत्य उस पर स्पष्ट कर दिया गया है, वह अपने अधिकार से सत्य अपनाएगा तो अल्लाह उससे खुश होगा और उसको जन्नत में स्थान देगा जहां वह भांति–भांति के पुरस्कारों से पुरस्कृत किया जाएगा परन्तु जो व्यक्ति जानबूझ कर बुरे काम करेगा यहां तक कि अल्लाह को नकार कर कुफ़्र करेगा या अल्लाह का साझी ठहराकर शिर्क करेगा तो परलोक में ऐसे व्यक्ति के लिए अल्लाह का प्रकोप और जहन्नम (नर्क) का दण्ड होगा।

उक्त वर्णन से स्पष्ट हुआ कि कुर्आन व हदीस से यह बात सिद्ध है कि
मनुष्य के साथ एक शैतान हर स
रहता है उसी को क़रीन कहते हैं
चूंकि वह मनुष्य के जन्म के साथ ज
लेता है अतः फ़ारसी वाले उसको हमज़
(एक साथ जन्म लेने वाला) कहते हैं।
भी कहा जाता कि उसका वही नाम
होता है जो नाम मनुष्य का होता है।
मनुष्य का हमज़ाद या क़रीन मनुष्य
जीवन भर हर समय उसके साथ रह
है, नमाज़ पढ़ें, तिलावत करें, किसी
सहायता करें या वह देखता है। कि
को मारें गाली दें, किसी के साथ बुरा व
करें सब उसके सामने रहता है। क
कोई चीज़ छुपा कर रखें वह भी उस
देखे रहता है।

जब इंसान का समय आ जाता है
उसका देहांत हो जाता है। अल्लाह
अंतिम सन्देष्टा मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलै
व सल्लम) की सूचनानुसार हमारा विश्व
है कि मरने के पश्चात जब इन्सान कब्र
दफ़्न कर दिया जाता है या मनुष्य प
में डूब गया, या आग में जल गया
किसी हिंसक पशु ने खा लिया, अथ
मनुष्य (इंसान) का देहांत हो गया तो
छोड़ने के पश्चात अल्लाह के दो
मुनकर और नकीर अल्लाह के आदेश
मरने वाले की आत्मा के पास आते हैं
उसकी आत्मा को ईश्वर (अल्लाह)
आदेशानुसार एक शरीर में जीवित क
उस से तीन प्रश्न करते हैं। तेरा
(स्वामी) कौन है? तेरा दीन (धर्म) क्या
तू इन (मुहम्मद) के विषय में क्या क
है? यदि यह मनुष्य ईमान लाया था

इस्लाम पर चला था तो तीनों प्रश्नों के उत्तर इस प्रकार देगा। मेरा रब अल्लाह है, मेरा दीन इस्लाम है और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह के आखिरी रसूल हैं और अगर मरने वाला ईमान न लाया होगा तो तीनों प्रश्नों के उत्तर में कहेगा – हाए, हाए मैं कुछ भी नहीं जानता। इसके पश्चात वह दूत (फ़िरिश्ते) अल्लाह के आदेश से सत्य उत्तर देने वाले की क़ब्र को खूब लम्बी चौड़ी दिखाएंगे और जो क़ब्र में दफ़न नहीं हुआ उसकी आत्मा को एक बड़ा स्थान देकर उस क़ब्र या स्थान को बड़ा ही सुखदायी बनाकर उसे सुला देंगे और वह क़ियामत तक आराम से सोएगा। कुछ आत्माएं जाग कर भी कुछ सुखद वस्तुओं से आनन्दित होंगी, परन्तु वह इस दुख और कष्ट भरे संसार में भ्रमण करने न आएंगी। मरने के पश्चात आत्माएं जिस आ़लम (लोक) में रखी जाती है। उस आ़लम को आलमे–बरज़ख़ कहते हैं और विशेष उस स्थान को जहां यह शुभ आत्माएं रहती हैं उसे इल्लीयीन कहते हैं या इल्लीयीन उस रजिस्टर का नाम है जिस में इन सदाचारी आत्माओं के नाम लिख कर उनको सुखद स्थान पर रखा जाता है। परन्तु जो बुरी आत्माएं हर प्रश्न के उत्तर में हाय–हाय करती हैं, अल्लाह के दूत उनको दुख देते हैं और उनके स्थान को दुखदायी बनाकर चले जाते हैं वह क़ियामत तक दुखद दण्ड भोगती रहेंगी वह एक प्रकार की बन्दी हैं उनको उस दण्ड से छूट नहीं कि वह गांव–गांव घूमें और हॉट बाज़ार में फिरें। फिर जब एकत्र किये जाने का दिन आएगा तो सारे इन्सान जीवित होंगे, उनके कर्मों की जांच–पड़ताल होगी फिर कोई जन्नत (स्वर्ग) में पुरस्कृत होगा तो कोई जहन्नम में दंडित होगा।

अब यहां प्रश्न होता है कि मनुष्य को उस हमज़ाद या क़रीन का क्या होगा जिस को अल्लाह ने उस मनुष्य के साथ पैदा किया था और जो उसके संग सदैव रहा था।

मेरी निगाह से किसी ऐसी हदीस नहीं गुज़री जिसमें यह हो कि जब मनुष्य मर जाता है तो उस का हमज़ाद भी मर जाता है न यही मिला कि वह जीवित रहता है। यूं तो कुर्आन से सिद्ध है कि हर जीव को मौत है, कोई बचपन में मरता है तो कोई जवानी में और कोई बूढ़ा होकर परन्तु मरना सबको है। मानव हो या जिन्नात मरना सब को है। यह बात भी कुर्आन से सिद्ध है कि शैतानों का पुर्खा इबलीस जिन था, उसको तो क़ियामत तक जीवित रहने और मानव को बहकाने की छूट दी गयी है। यह बात भी कुछ साधनों द्वारा कही गयी है कि जिन्नों की आयु बहुत ही लम्बी होती है। अतः संभव है कि किसी मरने वाले का हमज़ाद उसके साथ न मरे और कुछ समय तक जीवित रहे और चूंकि वह जिन्नो में से है अतः उसमें जिन्नों के गुण विद्यमान है।

जिन्नों के विशेष गुणों में से जहां यह है कि वे अपने वास्तुविक रूप में क़िसी को दिखते नहीं वहीं यह भी है कि वे किसी के मस्तिष्क में प्रवेश करके उसकी ज़बान से बोलते हैं, परन्तु यह हर व्यक्ति के साथ ऐसा नहीं कर सकते यह साधारण लोगों को साधारण आपत्ति में भी डाल सकते हैं।

अतः यदि कहीं इस प्रकार का केस मिले कि कोई किसी मृतक का नाम लेकर कहे कि मैं फुलां हूं और उसमें किसी मक्र व धोखे की संभावना न हो तो हो सकता है कि यह उस मृतक का हमज़ाद (सह जन्मा जिन्न) हो उसी को लोगों ने भूत का नाम दे दिया अब प्रश्न यह उठता है कि उसकी शरारत (उदण्डता) से कैसे बचा जाए ? तो यह कोई जटिल समस्या नहीं है। यदि उसकी ओर से निगाहें हटा ली जाएं तो अपना मान न देखकर स्वयं ही भाग खड़ा होगा परन्तु कभी यह भूत देर तक पीछा करते हैं। ऐसी दशा में कुछ लोग उस की मांगें पूरी करके उससे छुटकारा लेते हैं। गैर मुस्लिम लोग ऐसा कर सकते हैं मुसलमानों के यहां इसकी गुंजाइश नहीं इस लिये कि कभी तो उनकी मांग में कोई हराम वस्तु होती है और कभी तो वह शिर्क करने की मांग भी कर लेते हैं मुसलमान किसी प्रकार उनकी ऐसी मांगे पूरी नहीं कर सकता। कभी उस हमज़ाद भूत को भगाने के लिए उससे अधिक शक्ति वाले जिन्न को राज़ी करके उसके द्वारा इस को हटवाते हैं। मुसलमानों के यहां इसकी भी गुंजाइश नहीं। मुसलमान यदि इस्लाम पर चलता है नमाज़ पढ़ता है बुराईयों से बचता है तो कुर्आन–मजीद से आयतुल कुर्सी की तिलावत (पाठ) करे और पढ़कर पीड़ित पर फूंक मारे तो भूत अवश्य भाग जाएगा। यदि संयमी व्यक्ति के आयतुलकुर्सी पढ़ने से भूत नहीं भागा तो वह भूत कदापि नहीं है उसको चिकित्सक को दिखा कर उसका इलाज करे और अगर रोगी मक्र किये हों तो उसे वही ठीक कर सकता है जो मक्कार को पहचानता है।

यह उल्लेख हुआ हमज़ाद भूत के विषय में अब प्रश्न होता है कि क्या हमज़ाद के अतिरिक्त जिन्नात भी मानव को सताते और परेशान करते हैं ? इसकी जानकारी अगले अंक में पढ़िये।

❐❐❐

**हर प्रकार के जादू से बचने के लिये पवित्र कुर्आन की अंतिम दो सूरतें सूरतुल फ़लक और सूरतुन्नास रोज़ाना पढ़ें।**

# सब्ज़ी खाने वाले होशियार रहें !

## सब्ज़ी खाने वालों का भोजन संतुलित न हो तो वह भी गम्भीर रोग का शिकार बन सकते हैं।

*– अबूसारिम*

छियालीस वर्षीय शमीम पिछले बीस साल से शाकाहारी हैं। सब्ज़ी या तरकारियां उन का भोजन उस समय से बनीं जब उन्हें मालूम हुआ कि गोश्त उन के पाचन तंत्र के लिए हानिकारक है। परन्तु दो साल पहले उन्हें अनुभव हुआ कि वह बढ़ती हुई थकान, डिपरेशन, उदासी और आँत के कष्टदायक रोग का शिकार हैं। डाक्टर से जाँच करवाने के बाद मालूम हुआ कि वह भोजन इलरजी रोग से ग्रस्त है। वह एक माहिर डाक्टर के पास गयीं।

सवाल जवाब के बाद डाक्टर जान गया कि विभिन्न रोगों ने इनको क्यों घेर रखा है। उन्होंने शमीम साहिबा को बताया "आप का भोजन असंतुलित है जिसमें लोहा, ज़िंक, मैगनिशियम, और क्रोमियम तथा मैगनीज़ के अतिरिक्त विटामिन बी की बहुत कमी है।"

शमीम साहिबा कहती हैं "पिछले चन्द वर्षों से लापर्वाह हो गई थीं, ताज़ाफल, और सबज़ियां कम खाती थीं और अपने आहार पर ध्यान नहीं देती थीं। डाक्टर साहब ने ज़हर के प्रभाव दूर करने के लिए मुझे विशेश आहार भोजन प्रयोग करने की सलाह दी और मैंने अपने भोजन से मीठी और ख़मीरी चीज़ें और सूखे फल निकाल दिये जबकि दालें, फलियां, खनिज़ और विटामिन खाने लगी। कुछ समय लगा परन्तु धीरे–धीरे मेरे विभिन्न रोग दूर हो गए।

यह वास्तविकता है कि आदर्णी शमीम की तरह कई शाकाहारी (सबज़ीख़ोर) जब अपने आहार से गोश्त और मछली निकाल देते हैं तो एक ख़तरनाक जाल में फंस जाते हैं क्योंकि वह उन खनिज पदार्थों और विटामिन्स और ताक़त देने वाले आहार से वंचित हो जाते हैं जो गोश्त से प्राप्त होती है।

शाकाहारी बालिग़ लोगों के लिए संतुलित भोजन आवश्यक है ही परन्तु बच्चों के लिये बहुत ज़रूरी है। अनुसंधान द्वारा मालूम हुआ है कि उन्नति प्राप्त देशों में भी माओं की अस्सी फ़ीसदी संख्या यह समझती है कि कम चिकनाई और अधिक रेशे वाला आहार उनके बच्चों के लिए लाभदायक है क्योंकि चिकनाई और चरबी वाला भोजन स्वास्थ खराब कर सकता है। यही कारण है कि अब माएं दूध के साथ किसी प्रकार का अनाज मिलाकर अपने बच्चों को नहीं खिलातीं बल्कि कम चिकनाई वाली दही या फल और सबज़ियां खिलाती हैं।

हालांकि सच यह है कि अगर बच्चे भी विशेषकर लड़कियां गोश्त और मछली न खाएं तो उनका स्वास्थ अच्छा नहीं रहता। विशेषज्ञ कहते हैं कि बहुदा लड़कियों के आहार में लोहे की इतनी कमी होती है कि वह खून की कमी का शिकार हो जाती हैं। शायद बच्चियों की माओं को यह मालूम नहीं है कि यदि वह उन्हें गोश्त नहीं खिला रही हैं तो ऐसा आहार ज़रूर दें जिनसे गोश्त जैसी ग़िज़ाइयत, खनिज पदार्थ और विटेमिन मिल सके। सोने पर सोहागा यह होता है कि इस प्रकार की चीज़ें भोजन की सूची से बाहर होती हैं।

उन्नतिशील देशों के अतिरिक्त उन्नति प्राप्त देशों में भी यह भ्रम फैला हुआ है कि जो खाने डब्बे में बन्द होते हैं वह अधिक साफ़ और स्वस्थवर्धक होते हैं। आजकल सबज़ियां और फल भी डब्बों में बन्द मिलने लगे हैं क्योंकि उन्हें अधिक से अधिक मज़ेदार बनाने के लिए उनमें ऐसे रसायन डाले जाते हैं जिनसे उनकी ग़िज़ाइयत कम हो जाती है। कुछ संस्थाएं डब्बों में बन्द सबज़ियां या फल यह दावा करके बेचती हैं कि इन्हें खाने से गोश्त न खाने की कमी पूरी हो जाती है। यह दावा भी ग़लत है क्योंकि इस प्रकार के खानों में मसाले खासकर नमक बड़ी मात्रा में मिलाया जाता है ताकि खाना चटपटा बन जाए। ऐसे अधिकांश खाने गोश्त की तुलना में दुगनी चिकनाई और तीन गुना अधिक हानिकारक चिकनाई रखते हैं।

शाकाहारी आम तौर पर दूध या इस से बनी चीज़ों से भी परहेज़ करते हैं। यू बहुमूल्य विटामिन बी–12 और कैलशियम से वंचित रहते हैं। यदि विटामिन 'बी–12' शरीर में कम हो जाए तो उससे शरीर कमज़ोर हो जाता है। विशेषज्ञ सोयाबीन से बने दूध के बारे में भी बताते हैं कि उसमें दूध के सभी विटामिन्स नहीं होते डा० नामसेन्डर्स का कहना है कि बच्चे को दूध न देने से बेहतर है सोयाबीन क दूध मिल जाए परन्तु उसे अन्तिम हल वे

बाक़ी पृष्ठ 15 प

# माँ का दूध

– डा. एम.ए.आर. सिद्दीकी
बाल रोग विशेषज्ञ, बारांबकी

## खुराक भी दवा भी

माँ की महानता हर धर्म और हर क्ति ने जानी–पहचानी है। कहते हैं कि स्वर्ग के द्वार खोलती है और यह भी स्वर्ग मां के कदमों तले है।

माँ अपने आप में केवल एक विशाल क्ति ही नहीं बल्कि एक भक्ति का श्रोत है। वह अपने बच्चे को भी शक्ति दान करती है। माँ अपने बच्चे को दुन्या सबसे कामयाब व्यक्ति बनाने की ष्टा और मनोकामना करती है।

दो पत्ती वाले पौधों को भी एक विशाल क्ष बनने के लिए अच्छी खुराक, धूप और ा की ज़रूरत होती है और यह सब छ ईश्वर, जो बेहद मेहरबान और बड़ी क्ति वाला है, मां को प्रदान करता है। नव जीवन के संचार के लिए भी उसने को शक्ति प्रदान की है। उसके शरीर एक और शरीर की रचना कर उसको वन दिया और उस जीवन की रक्षा के ए मां को सक्षम बनाया। बच्चा जब मां पेट में था उसको उसने अपने खून से ंचा और शरीर के बाहर आने पर उसने पने दूध से उसकी परवरिश की। ईश्वर बेहतरीन तोहफ़े की भांति बच्चे के ए मां का दूध न केवल एक खुराक है ल्कि ईश्वर ने इस खुराक को बीमारियों बचाये रखने की क्षमता भी दी। हर णी अपने बच्चों की अपने ढंग से परवरिश रता है। स्तनधारी प्राणी जिसमें मानव ाति की भी गिनती होती है अपने दूध अपने बच्चों की परवरिश करता है। य, भैंस, बकरी, ऊँट, घोड़ा, गधा सब ने–अपने बच्चों को अपना दूध पिलाते सबका दूध अपने अन्दर कुछ विशेषताएं ता है। जो उनकी अपने जाति एवं रूरत के अनुकूल होता है। जानवरों को वर ने मानव जैसी अक्ल नहीं दी है। अतः जानवरों के दूध में मस्तिष्क के विशेष विकास के लिए कोई तत्व नहीं होते, यह केवल मानव दूध में ही ऐसी क्षमता है कि जीवन के प्रारम्भिक डेढ़–दो साल तक मां के दूध में मौजूद विशेष तत्व मस्तिष्क का विकास और पोषण करते हैं। इसी कारण मानव जाति का मस्तिष्क अन्य प्राणियों से उत्तम होता है।

ज़रा सोचिए! आज मानव, मानव जाति से पीड़ित है। कैसे–कैसे अत्याचार और अनाचार एक–दूसरे पर ढा रहे हैं यदि जानवर भी "दिमाग वाले" होते तो मानव जाति पर क्या गुज़रती।

आज आदमी अपने बच्चों की परवरिश के लिए जानवरों का सहारा लेता है कई मायें बच्चे को अपना दूध न पिलाकर जानवरों (बकरी–गाय, भैंस और कहीं–कहीं गधी भी) के दुध से पालन–पोषण करते हैं। डिब्बे का दूध भी इन्हीं जानवरों के दूध को सुखाकर बनता है जो सेवन के समय पानी डाल कर तरल बनाया जाता है। दूध को सुखाने, टीन के डिब्बे में भरने और डिब्बे की आकर्षक छपाई और पैकिंग की, सबकी कीमत दूध की कीमत के साथ चुकानी पड़ती है। साथ ही मशीनों, मज़दूरों, थोक एवं फुटकर विक्रेताओं का लाभांश भी क्रेता ही अपनी जेब से चुकाता है। इसके विपरीत मां का दूध बच्चे को अविलम्ब बिना कुछ किये सबसे सुरक्षित अवस्था में बिना क़ीमत चुकाये मुफ्त प्राप्त होता है।

मां का दूध बच्चे के लिए पांच–छः माह तक पूर्णतयः काफ़ी होता है। शरीर के विकास के लिए अन्य किसी आहार की आवश्यकता नहीं है और आरम्भ के तीन माह तक तो सामान्य स्थिति में अलग से पानी भी देने की आवश्यकता नहीं। मां के दूध में इतना पानी होता है जो शारीरिक विकास के लिए काफ़ी होता है। मां के दूध में हम ऊपर कह चुके हैं कि मस्तिष्क के विकास के लिए विशेष तत्व होता है जो अन्य किसी दूध में स्वाभाविक (नेचुरल) नहीं होते। इस के साथ जिस प्रकार हमारे खून के सफेदी वाले भाग (WBC) में कुछ कोशिकाएं रोगाणुओं को अपने अंदर समा कर नष्ट करने की क्षमता (Phagoeyusis) होती है इसी प्रकार मानव दूध में भी फोगोसाइट–रोगाणु नष्ट करने वाली कोशिकाएं होती हैं इस प्रकार मां का दूध बचाव करने वाली दवा की भांति भी काम करता है। यही कारण है कि केवल मां का दूध पीने वाले बच्चे उल्टी दस्त (डायरिया) से अन्य बच्चों (जो जानवर का दूध भी पीते हैं) की तुलना में तीस गुना अधिक सुरक्षित रहते हैं। अपने भारत के मध्य प्रदेश में तथा अफ्रीका के कुछ देशों में बच्चे की आँख उठने पर मां के दूध की चन्द बूंदे रोग के उपचार का सफल काम करती हैं। ऐसा संभवतः फाइगोसाइट्स के कारण होता है जो रोगाणुओं को अपने में समा कर नष्ट कर देते हैं।

दवा आम तौर पर दो प्रकार की होती है एक जो हमें बीमारी से ठीक करे या बचाये दूसरी जो हमको ताक़त दे अब देखिये मां के दूध (मानव दूध) में दोनों क्षमतायें हैं। दूध से बढ़कर कोई टॉनिक क्या हो सकती है जो प्रोटीन कार्बोहाइड्रेट और विटामिन देता है साथ ही दिमाग़ का टानिक भी जो अन्य दूध में नहीं। अतः एक समझदार माँ एवं परिवार वालों को निम्नवत बातों का ध्यान रखना चाहिए :–

(1) मां का दूध बच्चे के जन्म के आधे से एक घंटे के अंदर पिला देना चाहिए

और फिर पिलाते रहना चाहिए शुरू में मां से चन्द बूंद ही दूध मिल पाता है जिसकी एक बूंद भी अमृत कही जा सकती है और जो गाढ़ा होता है बाद में यह अधिक तरल होते–होते सामान्यता अधिक उपलब्ध होता है जिसको आमतौर पर दूध उतरना कहते हैं। इस पूरी क्रिया में कभी–कभी एक दो दिन भी लग जाते हैं इस समय बच्चे को कोई अन्य पेय न पिलाकर केवल मां की छाती से ही बार–बार लगाना चाहिए क्योंकि एक–दो बूंद गाढ़ा दूध, जो बच्चा पा जाता है, पोषण के लिए काफ़ी है, यहां यह बात ध्यान में रहे अगर बच्चे को दूध की बोतल से कुछ पिला दिया तो बच्चा मां की छाती से दूध पीना नहीं सीख पाएगा और आप एक और गुलामी दूध की बोतल को बच्चे को भेंट कर देंगे।

(2) तीन माह की आयु तक केवल दूध, दूध के सिवा पानी भी नहीं, भूख लगे तो प्यास लगे तो मां का दूध ही देना चाहिए। कई महिलाओं के सुन्दर स्वस्थ बच्चे देखकर जिज्ञासा स्वरूप पूछा तो पता चला 6-6 माह तक बिना पानी के अपने दूध पर पाला है।

ईश्वर भी कितना दयालु है बच्चे का भी ध्यान रखता है मां का भी ध्यान रखता है। बच्चे को 6 माह तक दांत नहीं देता है। छह माह के बाद जब बच्चे को अधिक खुराक की ज़रूरत होती है तब उसका दांत निकलता है।

(3) छह माह के बाद, दाल का पानी, हरी सब्ज़ियों का सूप, फलों का रस, केला, आलू दूध में मिलाकर खीर जैसा बनाकर दिया जा सकता है परन्तु यह ध्यान में रहे कि ऊपर की अन्य खाद्य पदार्थों के अलावा मां का दूध दो साल तक अवश्य दें। इस बात का परामर्श विश्व के सभी बाल रोग विशेषज्ञ देते हैं और वह भी जो इन सब विशेषज्ञों से ऊपर है सबसे बड़ा और सबसे दयालु, सबका पोषक और सबका पालनहार।

**"और माएं अपने बच्चों को पूरे दो साल दूध पिलाया करें यह समय उसके लिये है जो दूध पिलाने का समय पूरा करना चाहें।"**

*पवित्र कुर्आन (2:233)*

❐❐❐

# इस्लाम तलवार से नहीं आचार से फैला है

**–सय्यिदा फ़रीदा नुज़हत**

कुछ लोग अपनी अपरिचिता के कारण हम मुसलमानों को अत्याचारी समझ बैठे हैं। यदि वह अत्याचार तथा भ्रष्टाचार को बुरा जानते हैं तो यह तो बड़ी अच्छी बात है। हम उनको बताते हैं कि अत्याचार का इस्लाम और मुसलमानों से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है। वह दोष देते हैं कि मुसलमानों ने इस्लाम तलवार से फैलाया है। यह सच है कि संसार के राजा–महाराजा तथा बादशाह परिस्थितियों के अनुसार लड़ाईयां लड़ते रहे तथा उनके राज्य घटते–बढ़ते रहे परन्तु बादशाहों से कभी भी इस्लाम नहीं फैला, इस्लाम तो अपनी सत्य नीतियों और मुसलमानों के उच्च आचरण और सद्व्यवहार से फैला है। संसार को इस्लाम पहुंचाने वाले अल्लाह के अन्तिम सन्देशटा हज़रत मुहम्मद (स०) के सद्व्यवहार तथा उनकी करुणा को शत्रु भी मानते रहे। कुर्आन ने हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को उच्चतर आचरण वाला बताया है। स्वयं अल्लाह के रसूल (स०) ने बताया कि "मैं तो सदाचरण की पूर्ति ही के लिए भेजा गया हूं।

मैं कुछ हुज़ूर (स०) के आचरण की घटनाएं सुनाती हूं : –

इस्लामी शासन स्थापित हो चुका था। अदी बिन हातिम नबी (स०) की मजलिस में उपस्थित हुए जो ईसाई थे। एक साधारण बुढ़िया आयी और उसने नबी (स०) से कहा कि मैं आपसे अलग कुछ कहना चाहती हूं, आपने तुरन्त उठकर तन्हाई (एकांत) में बुढ़िया की बात सुनी, अदी बिन हातिम ने यह देखकर कहा कि यह व्यक्ति सांसारिक शासक नहीं। यह तो अवश्य ही अल्लाह का सन्देशटा है और वह इस्लाम ले आए।

आपने (स०) फ़रमाया कि हया व शर्म ईमान के भाग हैं जिसमें नर्मी नहीं वह हर प्रकार की भलाई से वंचित है। मुसलमान न बुरी बात कहता है न गाली बकता है।

एक यहूदी से आप (स०) ने क़र्ज़ लिया। यहूदी तकाज़े पर आया, और बुरा–भला कहने लगा, हज़रत उमर वहां मौजूद थे उनको बुरा लगा और कहा कि इस महफ़िल में न होते तो मैं तुम्हारी गर्दन क़लम (काट) कर देता। आपने (स०) हज़रत उमर से कहाकि तुमको चाहिए था कि मुझसे उसका कर्ज़ दिलवाते तुमने उल्टा यहूदी को डांटा। अच्छा जाओ इसका कर्ज़ चुकाओ और डांटने के बदले में उतना ही और दो। यहूदी बोला हुज़ूर मैं तो आपकी परीक्षा को आया था, हमारी तौरात में लिखा है कि अन्तिम सन्देष्टा नर्म चरित्र के होंगे कोई उन पर सख़्ती करेगा तो वह नर्मी करेंगे। निःसंदेह आप अल्लाह के अन्तिम नबी हैं मैं आप पर ईमान लाता हूं। यह थे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम के उच्च आचार, यही आचार उनके मानने वालों ने संसार के सामने प्रस्तुत किये जिनसे प्रभावित होकर सहस्त्रों द्वीपों और देशों के लोग इस्लाम स्वीकार करते गये और जिसने भी इस सत्य को जान बूझ कर ठुकराया उसने इस संसार में भी अच्छा न देखा परलोक का दण्ड तो बहुत ही कठिन है। जो मनुष्य इस्लाम का विरोध करता है उसने इस्लाम को पहचाना ही नहीं है। इस्लाम एक सत्य है और कोई बुद्धिमान सत्य का विरोध नहीं कर सकता।

❐❐❐

# "सूज़ान"

## एक अमरीकन नव मुस्लिमा

– *मुहम्मद जावेद अशरफ नदवी मेरठी*
'मदीना मुनव्वरा'

सूज़ान एक अमरीकन क्रिश्चिन महिला थी, उसने एक अ़ब्दुल क़ादिर नामी बर्मा के रहने वाले व्यक्ति से विवाह किया। दोनों मेरीलैंड राज्य में रहते थे। अब्दुल कादिर जूतों की एक कंपनी में प्रबन्धक थे। वह अधिकतर लोरएल मस्जिद में रविवार के दिन जुह्र की नमाज़ के लिए आते। एक दिन उन्होंने मुझसे अपनी समस्याओं का इस प्रकार वर्णन किया कि मैंने एक क्रिश्चियन महिला से विवाह किया ईश्वर (अल्लाह तआ़ला) ने हमें दो जुड़वा पुत्रियाँ प्रदान कीं, मैं इन पुत्रियों के भविष्य के विषय में चिन्तित हूं। मैंने हर प्रकार प्रयत्न किया कि अपनी पत्नी को मस्जिद लाऊं परन्तु मुझे अभी तक सफलता नहीं मिली, आप मुझे सलाह दें कि मैं क्या करूं। मैंने उन्हें सलाह दी कि आप अपनी पत्नी को हमारे घर भोजन पर लाइए। वह मेरी पत्नी से भेंट करेगी तो इस प्रकार उनकी झिझक दूर होगी तथा वह मुसलमान महिलाओं से भेंट करने में कठिनाई या झिझक अनुभूत न करेंगी। ये विधि बहुत उपयोगी सिद्ध हुई।

सूज़ान मस्जिद आने लगी तथा कुर्आने–पाक की व्याख्या के मंडल में भी उपस्थित होने लगी। कुछ हफ्ते बड़े शान्ति से व्यतीत हुए एक दिन रविवार को मैंने व्याख्या का सबक समाप्त किया तथा प्रस्तुत लोगों से प्रश्न पूछे, सूज़ान ने एक प्रश्न पूछा इससे पहले कि मैं प्रश्न का उत्तर देता प्रस्तुत लोगों में से एक और श्रीमान ने तुरंत उसका उत्तर दे दिया, उत्तर सुनते ही सूज़ान बहुत अधिक रोने लगी, पूरे समारोह के लोग आश्चर्यचकित रह गये कि हुआ क्या है, सूज़ान का रोना बंद न हुआ तो उसके पति अब्दुल क़ादिर उसे घर ले गए तत्पश्चात मैंने अब्दुल क़ादिर से सूज़ान के रोने का कारण पूछा, अ़ब्दुल क़ादिर ने कहा कि सूज़ान का विचार है कि उसके प्रश्न ने उत्तर देने वाले को अप्रसन्न कर दिया क्योंकि उत्तर देने वाले का चेहरा बहुत गंभीर था। सूज़ान एक शरीफ स्वभाव की महिला है तथा पूरा प्रयत्न करती है कि किसी को अप्रसन्न न करे, मैंने अब्दुल क़ादिर से कहा कि निःसंदेह वह श्रीमान सूज़ान से अप्रसन्न न थे तथा उनके चेहरे की गंभीरता भी प्राकृतिक थी, सत्य तो यह है कि पाकिस्तान व भारत के अधिकांश मित्रगण के चेहरे प्रत्येक समय गंभीर रहते हैं। आप यह बात किसी एयरपोर्ट, बस स्टाप अथवा बाज़ार में देख सकते हैं, यह हमारी सामाजिक कमज़ोरी है, आप अत्यन्त शांति से सूज़ान को यह भेद समझाएं, धीरे–धीरे ये बात सूज़ान की समझ में आ गयी तथा वह चन्द हफ्तों के पश्चात वापस मस्जिद में आई, व्याख्या के मंडल में अब वह बढ़–चढ़ कर भाग लेने लगी तथा उसे उस तरह के प्रश्न व उत्तर की विधि बहुत पसंद आयी। इससे उसको इस्लाम धर्म को समझने में बहुत सहायता मिली। उसको ये बात भी भली लगी कि इस्लाम में सवाल–जवाब की अनुमति है क्योंकि अधिकतर धर्म में सवाल करने की अनुमति नहीं होती, तो जवाब की दशा ही नहीं आती। सूज़ान ने मस्जिद में प्रस्तुत अन्य महिलाओं से मित्रता कर ली तथा वह एक–दूसरे से अत्यंत मान व प्रेम से मिलतीं।

सूज़ान का चिंतन सर्वथा इस्लामी हो गया तथा उसे यह नए विचार बहुत भले लगे, सूज़ान ने कहा कि वह भी मुसलमान हो जाए। ये हम सबके लिए अत्यंत प्रसन्नता की बात थी तथा यह मेरा अहोभाग्य था कि मैंने उसको शहादत का कलिमः समझाया तथा पढ़ाया। अब सूज़ान हम सबकी मुसलमान बहन बन गयी। उस रोज़ मैंने अब्दुल कादिर तथा सूज़ान का इस्लामी रीति–रिवाज (विधि) से विवाह किया। मस्जिद में ही विवाह हो गया तथा सबके दिलों में प्रसन्नता की लहरें उमड़ पड़ीं। सूज़ान ने अपना नया नाम सईदा चुना वह इसलिए क्योंकि वह अत्यंत सुशील महिला थी तथा प्रत्येक के साथ बहुत भली प्रकार से मिलती थी।

ध्यान रहे कि सूज़ान ने पहले इस्लामी शिक्षा प्राप्त की तथा अपने सारे संदेह व भ्रम दूर किए तथा फिर खूब विचार करने के पश्चात अत्यंत गंभीरता तथा दिल के साथ इस्लाम स्वीकार किया, इस्लाम स्वीकार करने के बाद उसने खुद इस्लामी वस्त्र पहनने शुरू कर दिए तथा पड़ोसी, रिश्तेदारों तथा दूसरे मिलने वालों की तनिक भी चिंता न की, उसे अपने इस नये जीवन पर बहुत गर्व था, उसकी दोनों जुड़वां पुत्रियां उस समय प्राइमरी स्कूल में शिक्षा प्राप्त कर रही थीं सूज़ान ने उनको भी स्कार्फ पहनने की शिक्षा दी। अमरीकी माहौल में यह एक नया दृश्य था। सूज़ान अधिकतर जन्मजात (पैदायशी) मुसलमान महिलाओं को मस्जिद में गैर इस्लामी वेश–भूषा में देखती तो वह शरीफ स्वभाव होने के कारण मुंह से

कुछ न कहती परन्तु उन महिलाओं तथा उन के पतियों को बहुत आश्चर्य से देखती सूज़ान को उर्दू शेर तो कहने नहीं आते थे परन्तु वह स्मरण में अकबर इलाहाबादी को रखती :–

"बे पर्दा कल जो आईं नज़र चन्द बीबियां।
अकबर ज़मीं में ग़ैरते क़ौमी से गड़ गया।।
पूछा जो उनसे आपका पर्दा वह क्या हुआ।
कहने लगीं कि अक़्ल पर मर्दों की पड़ गया।।
निकलो न तुम बेनकाब ज़माना खराब है।
और उस पर यह शबाब ज़माना खराब है।।

कमसिन बच्चियों का स्कार्फ पहन कर स्कूल जाना उन के हम उम्र बच्चों के लिए एक आश्चर्यजनक बात थी, उम्र के तकाज़े हैं कि दूसरे बच्चे उन बच्चियों को सताते भी थे, परन्तु दोनों बच्चियां अत्यंत सख्ती से गंभीरता के साथ प्रत्येक समस्याओं का सामना करती रहीं, मुझे इस बात का ज्ञान हुआ तो मैंने अब्दुल क़ाकिर की प्रस्तुति में सूज़ान से कहा कि इन कमसिन बच्चियों को इस उम्र में वाद–विवाद में डालने की आवश्यकता नहीं इस पर सूज़ान ने हम दोनों को संबोधित करके कहा, बच्चियों को इसी उम्र से ही सही राह पर चलना है यदि वह अब इस पर सफल न हो पाई तो भविष्य में उनके कार्य में बोदीपन आ सकता है, हम दोनों सूज़ान के विश्वास की इस प्रकार दृढ़ता तथा निःस्वार्थ पर खुद से लज्जित हो गए। अब्दुल कादिर ने ज़ोर का कहकहा लगाया तथा कहने लगा हम जन्मजात मुसलमानों की दृष्टि में इस्लाम का सही आदर सम्मान नहीं हमें इस्लाम वैसे ही मृतक सम्पत्ति में मिल गया। मेरी पत्नी तथा कई नव मुस्लिम हमसे अधिक बेहतर हैं, अब्दुल क़ादिर तथा सूज़ान माशाअल्लाह एक पूर्ण सुखी जीवन व्यतीत कर रहे हैं।

❐❐❐

## आपकी समस्यायें और उनका हल

पृष्ठ 20 का शेष.....

**प्रश्न– 5. अगर किसी ने गुस्से में ऐसी कसम खाई कि मैं अपनी माँ से बात नहीं करूंगा तो वह क्या करे ?**

उत्तर– अगर कोई कसम शरीअत के खिलाफ हो जैसे मां से न बोलने की कसम तो ऐसी कसम को तोड़ दें और उसका कफ़्फ़ारा दें और यह न सोचे कि कसम तोड़ने से गुनाह होगा क्योंकि न तोड़ने से ज़्यादा गुनाह होगा।

**प्रश्न–6. एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर क्या हुकूक हैं ?**

उत्तर– एक मुसलमान के दूसरे मुसलमान पर यह चन्द अहम हुकूक हैं (1) जब मुलाकात हो तो सलाम करे (2) जब बुलाए तो जवाब दे (3) जब दाअवत करे तो कुबूल करे (4) और छीके तो "यरहमुकल्लाह" कहे, जबकि उसने अल्हम्दुलिल्लाहि कहा हो (5) बीमार हो तो देखने जाए (6) मर जाए तो उसके जनाज़े के साथ जाए (7) और जो अपने लिए पसंद करे वही उसके लिए पसंद करे।

**प्रश्न–7. सलाम के आदाब क्या हैं ?**

उत्तर– सलाम सबको करना चाहिए, चाहे जान–पहचान हो या न हो और सवार को चाहिए कि पैदल चलने वाले को सलाम करे और चलने वाला बैठने वाले को और थोड़े आदमी ज्यादा आदमियों को और कम उम्र वाले ज्यादा उम्र वालों को, पहले सलाम करने वाले को ज़्यादा सवाब मिलता है और अगर कई लोग हों और उनमें से किसी एक ने सलाम किया हो तो सबकी तरफ़ से काफ़ी है इसी तरह बहुत से लोगों में से एक ही आदमी अगर सलाम का जवाब दे दें तो सबकी तरफ से काफी होगा। ❐❐❐

## अपने पाठकों से

- हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं।
- हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम लिखने वालों से अनुरोध करते हैं कि वह अपने मूल्यवान निबन्धों से हमारा सहयोग करें।
- आप हिन्दी भाषियों को "सच्चा राही" पढ़ने का मशवरा दें।
- आप "सच्चा राही" के ग्राहक बनाकर "सच्चा राही" को सहयोग दें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके हल लिखकर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।

*– सम्पादक*

## आदमी की चेष्टाएं

प्रकृति
हमारे संरक्षण के लिए
सतत प्रयत्नशील है
लेकिन हम उसके –
क्रम को तोड़ते हैं,
उपवन को मरुवन बनाते हैं
और उसे
ईंधन–सा जलाते जा रहे हैं !
तभी तो इस प्रकृति का
प्रलंयकर रूप बार–बार
उजागर होता है
कभी बाढ़ –
कभी भूकम्प बन –
संसृति पर कहर बरपाता है !
क्या करें ?
हमने उपकारों को बोझ
बोझ समझकर उतार दिया है !

*डा० सूरज मृदुल*

# ईमान प्यारा या जान प्यारी

*– अमीनुद्दीन शुजाउद्दीन*

ईमान और धर्म प्रचार के इतिहास का हम ध्यान पूर्वक समीक्षा करें तो हमें विभिन्न अवसरों पर विभिन्न परिणाम व नतीजे देखने को मिलेंगे। उदाहरण स्वरूप क़ौमेनूह, क़ौमे हूद, क़ौमे शोऐब, क़ौमे लूत आदि अपनी अवज्ञाकारी के कारण बुरे परिणाम से दो चार हुईं जबकि दूसरी तरफ़ मोमिनों की छोटी सी टोली पर अल्लाह की रहमत और फ़तह की छाया रही और वह अत्याचारियों के ज़ुल्म से छुटकारा पा गईं। कहने का तात्पर्य यह है कि ईमान और धर्म प्रचार के इतिहास में ऐसी भी मिसालें हैं कि जब अल्लाह तआ़ला ने आज्ञा न मानने वाले ज़ालिमों पर ऐसा प्रकोप डाला कि उनकी कहानी दूसरों के लिए सीख बन गई और उसी के साथ ऐसी मिसालें भी हैं कि मज़लूम ईमान वालों के साथ अल्लाह की सहायता और मदद आई और उन्हें सफलता और विजय मिली।

लेकिन बात इस पर बस नहीं हो जाती बल्कि ईमान व धर्म प्रचार के इस इतिहास में ऐसी मिसालें भी मिलती हैं कि ज़ालिमों और अवज्ञाकारियों (सरकशों) पर न तो अल्लाह का क़हर (प्रकोप) टूटा और न ईमान वालों को प्रत्यक्ष रूप से अल्लाह की मदद का कोई अनुभव हुआ। सच्चे मार्ग पर चलने वालों के सामने यह सारी मिसालें पेश कर दी गईं ताकि तमाम दशाएं उनके सामने रहें और किसी प्रकार की सूरत पेश आ जाने पर वह किसी संकोच में न पड़ें और सब्र और दृढ़ इरादे का सबूत देने से न हिचकिचाएं।

सच्ची बात यह है कि इस्लाम स्वीकार करने और दीन के प्रचार की राह बहुत कठिन है। यह कांटों भरा रास्ता है। यहां पग पग पर बलाएं और इम्तिहान है। इस मार्ग में केवल माल लुटाने की नहीं, जान गंवाने की भी नौबतें आती हैं। चुनान्चः ईमान लाने वालों और सत्य का प्रचार करने वालों के सामने कुर्आन पाक में असहाबे उख़दूद (सूरः बरुज) की घटना भी साफ़ शब्दों में बयान कर दी गई है अर्थात् एक ऐसे गिरोह की घटना जो अपने रब पर ईमान लाया। अपने ईमान का उसने खुले आम एलान किया फिर तत्कालीन बादशाह ने उन्हें केवल इस जुर्म में आग के गड्ढे में झोंक दिया कि वह अल्लाह पर ईमान लाया था। कुर्आन पाक के शब्दों में (अनुवाद) "और उन्हें बस यह बात बुरी लगी कि वह अल्लाह पर ईमान रखें जो शक्ति और सत्ता का मालिक और प्रशंसनीय है। (सूरः बुरुज)

सूरः बरुज में उख़दूद के क़िस्से का अध्ययन बताता है किस तरह ज़ालिमों ने मोमिनों को आग में झोंका था और आग के पास बैठ कर तमाशा भी देखा था और उसका मज़ा भी उठाया था किस तरह आग मोमिनों को झुलसाती, तड़पाती और उनको राख का ढेर भी बना देती है। कुर्आन उनके इस भयानक ज़ुल्म और बरबरता की गवाही देता है। – "नास हो खाई वालोंका, ईंधन भरी आग वालों का, जब वह इस पर बैठे हुए थे और जो कुछ ईमानवालों के साथ कर रहे थे, उसे देख रहे थे।" *(सूरः बुरुज)*

तो ईमान स्वीकार करने वालों और इस्लाम का प्रसार–प्रचार करने वालों के सामने यह नज़ीर भी पेश कर दी गई कि इस कठिन राह में कभी ऐसी भी नौबत आएगी कि देखने में यह महसूस होगा कि भौतिक (मादी) लिहाज़ से और ज़ाहिरी तौर से कुफ़्र ईमान पर (असत्य सत्य) पर हावी हो रहा है और ईमान वाले बेबसी और बेकसी का शिकार बने हुए हैं। ऐसी घटना परीक्षा की घड़ी होती है और परीक्षा भी बड़ी कठोर और जान लेने वाली ! ऐसी घटना ईमान की सलामती के लिए अल्लाह की सुरक्षा, शांति और उसकी शरण मांगने की मंज़िल होती है। इस मुश्किल का मुक़ाबला और सामना करना सच्चे मार्ग पर चलने वालों के ऐसे मुसाफ़िरों के ही बस का हो सकता है जिनके दिल व दिमाग़ में यह बात बैठ चुकी हो कि करने वाली ज़ात अल्लाह की है। सारा मामला अल्लाह के बस में है। उनका काम तो बस यह है कि वह अपनी ज़िम्मेदारी और कर्तव्यों को निबाहते रहें और अल्लाह से डरते रहें। साथ ही यह बात भी उनके दिल की गहराइयों में उतर चुकी हो कि केवल ज़ाहिरी और म़ादी (भौतिक) मदद ही अल्लाह की मदद नहीं है बल्कि उसकी एक शकल यह भी है कि अल्लाह ऐसे नाज़ुक और कठिन हालात में अपने मोमिन बन्दे को ईमान की ऐसी दृढ़ता और पुख़्तगी दे कि ज़ालिम के हाथों ईमान के "जुर्म" में उसे भड़कती आग के शोलों में भेंट चढ़ा दिये जाने पर वह 'अहद, अहद (अल्लाह एक है) पुकारते रहे। शोले उसके शरीर को भस्म कर दें मगर उसके सीने में मौजूद ईमान पर आँच न आए। सख़्त आज़माइशों में घिर

जाने के बावजूद ईमान की सलामती की नीयत और उसका जज़्बा निःसन्देह अल्लाह की मदद व सहायता की एक सूरत है। अल्लाह की मदद और सहायता और उसकी सामर्थ और समर्थन के बिना हरगिज़ हरगिज सम्भव नहीं कि मुसलमान जान गंवाना स्वीकार कर ले लेकिन ईमान का सौदा उसे मंजूर न हो। जिस्म के राख बन जाने पर राज़ी हो जाए लेकिन ईमान की चिनगारी को बुझने न दे। इस प्रकार भौतिक आग पर इश्क की आग ग़लिब आ जाए (विजयी हो जाए)। शरीर प्रास्त हो जाए पर आत्मा विजयी रहे और उसकी सम्पन्न आत्मा (रुह) अल्लाह के हुजूर इस हाल में पहुंचे कि वह मोमिन हो! ईमान वाला हो ! ऐसा मोमिन जिसने आज़माइशों पर सब्र किया और आपत्ति का दृढ़ता के साथ मुकाबला किया। मौत से किसी को छुटकारा नहीं लेकिन ईमान की सलामती के साथ इस शान से मौत को गले लगाए जिसका बयान क़िस्स–ए–उख़्दूद (सूरः बुरुज) में आया है। निःसन्देह यह उत्कृष्ट व विशिष्ट मौत है।

हम मुसलमान परलोक (आख़िरत) पर पूरा विश्वास रखते हैं। ज़रूरी नहीं कि हमारे हर कर्म का नतीजा इस भौतिक संसार में ज़ाहिर हो। असल मैदान तो आख़िरत का मैदान है। वहां जो सिक्का चलेगा वह ईमान का सिक्का होगा। ज़ालिम और प्रत्यक्षदर्शियों ने उख़्दूद के किस्से के ईमान वालों को लुटता–पुटता और तबाह हाल समझा होगा लेकिन वह अपने साथ ईमान की ऐसी दौलत और पूंजी ले गए जो उन्हें परलोक में काम आएगी। दयावान रब उन्हें इनाम से नवाज़ रहा होगा। खुदा की प्रसन्नता उन्हें प्राप्त हो रही होगी, फ़रिश्तों की महफ़िलों में वह याद किये जा रहे होंगे, फ़रिश्तों की दुआओं में उनका हिस्सा लग रहा होगा। सूरः बुरुज और उख़दूद वालों की रोशनी में ग़ौर कीजिए कि अन्ततः कौन जीता कौन हारा? आग में झोकने वाले या ईमान की सलामती के साथ आग में भस्म हो जाने वाले ? उत्तर साफ़ है – विश्वास ज़िन्दगी पर विजयी हुआ। ईमान जान पर ग़ालिब आया ! रूह जिस्म पर फ़तहयाब हुई। इस प्रकार विजय विश्वास की हुई, जीत ईमान की हुई।

सब्र और अडिग विश्वास की यही वह तालीम थी जिसकी अमली तर्बियत (व्यवहारिक प्रशिक्षण) की मिसाले इंसानियत के शिक्षक मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र जीवन में दिखाई देती है। मसलन दयालू व कृपालू मुहम्मद (सल्ल०) की आंखें देखती हैं कि हज़रत अम्मार (रज़ि०) हज़रत यासिर (रज़ि०) और हज़रत समीया (रज़ि०) पर मक्का की घाटियों में ज़ुल्म के पहाड़ ज़ालिम तोड़ रहे हैं मगर उस समय आप (सल्ल०) बस यही फ़रमा रहे होते हैं "यासिर की अवलादों ! सब्र करो तुम्हारा ठिकाना जन्नत है।"

हज़रत ख़ब्बाब इब्ने अरत फरमाते हैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम कअ़बः के साये में चादर का तकिया बनाए आराम फ़रमा रहे थे। हम ने फ़र्याद की "आप (सल्ल०) हमारे लिए दुआ नहीं करते ?" आप (सल्ल०) ने फ़रमाया तुम से पहले तो यह होता था कि गडढा खोद कर आदमी को गाड़ दिया जाता! सिर पर आरा रख कर चीर दिया जाता था ! लोहे की कंघियां की जातीं जिन से गोश्त खुरज जाता ! फिर भी दीन को वह सीने से लगाए रखता! अल्लाह की क़सम ! यह दीन क़ाइम होकर रहेगा यहां तक कि एक सवार यमन से हज़रमूत (स्थान का नाम) चला जाएगा रास्ते में उसे अल्लाह के सिवा किसी का डर न होगा। डर होगा तो बस भेड़िये का भेड़ों के सिलसिले में। मगर अफ़सोस तुम लोग जल्दी मचाते हो ! *(सहीह़ बुख़ारी)*

**ईमान का नूर एक ऐसे चिराग़ के समान है जिसकी लव मद्धिम तो पड़ सकती है लेकिन बुझ नहीं सकती बल्कि अगर उसे बुझाने की कोशिश होती है तो ईमान की यह चिंगारी अग्नि ज्वाला बन जाती है और एक मुसलमान के दिल व दिमाग़ को अचानक प्रकाशवान और उसकी अन्तरात्मा (ज़मीर) को जागृत और रौशन कर देती है।** कोताहियों और गुनाहों की मैल की मोटी तहों के कारण हो सकता है कि ईमान का जज़्बा दब जाए लेकिन वह मिटता हरग़िज नहीं।

काश ! कि संसार को हम यह बावर करा सकें कि फूंकों से ईमान के चिराग़ को बुझाने के बजाय अच्छा हो कि वह खुद इस चिराग़ से प्रकाश हासिल करें। इसलिए कि अंधकार का इलाज उजाला और नूर ही है।

❑❑❑

# छींक

ट्रेन में यात्रा करते हुए एक सज्जन बहुत देर से छींक रोकने की चेष्टा कर रहे थे। छींक आती तो मुंह बनाकर रोक देते। दूसरे सज्जन ने पूछा आख़िर आप छींक क्यों रोक रहे हैं? उन्होंने उत्तर दिया कि मेरी पत्नी का कहना है कि जब भी छींक आये तो समझ लो कि मैंने आप को याद किया है और आपको मेरे पास आ जाना चाहिये। साथी ने पूछा कि आपकी पत्नी कहां है? उन्होंने जवाब दिया क़ब्र में।

❑❑❑

# सैलानी की डायरी से

*– मोहम्मद हसन अंसारी*

**18 मई, 2002 :** बस रूकी तो दो सज्जन जो जैसा कि बाद में पता चला, किसी पालीटेक्निक के लेक्चरर थे दाखिल हुए और आगे–पीछे बैठ गये। उनके आगे एक सज्जन अपने कुत्ते के साथ आकर बैठे। कुत्ते के बस के अंदर आने से लोग तनिक घबराये लेकिन वह पालतू जानवर अपने मालिक की हिदायत पर उसके बगल वाली सीट पर आकर बैठ गया। बस चली। कुत्ते के मालिक ने अपने पीछे बैठे सज्जन को दो पचास–पचास के नये नोट देते हुए दो टिकट लखनऊ के लेने के लिए कहा। उन सज्जन ने नोट और हिदायत अपने साथी को पास आन कर दिया जिन्होंने दोनों नोट अपनी जेब में रखे और जेब से सौ का नोट निकाल कर कंडक्टर को दिया, उसने दो टिकट दे दिये एक उन सज्जन का दूसरे उनके कुत्ते का। लेक्चरर साहब लगभग दस मिनट तक जेब से पचास–पचास के दोनों नये नोट निकालकर उलट–पलट कर देखते रहे और अंततः कंडक्टर से कहा, "यह नोट समझ में नहीं आ रहे हैं, उन्हें आप रख लें और मेरा सौ वाला नोट मुझे वापस दे दें। उसने दे दिया। उन सज्जन ने रख लिया। बस चलती रही। आदमी कितना सेल्फिश और स्वार्थी हो गया है।

आज इंसान को इंसान पर भरोसा नहीं रहा। ऐतबार उठ गया। इंसान को जानवर पर भरोसा है पर इंसान पर नहीं। कुत्ता अपने मालिक का फरमाबरदार है लेकिन इंसान ने फरमाबरदारी छोड़ दी। आज दुनिया दहशतगर्दी (आतंकवाद) और उस से पैदा होने वाले मसायल (समस्याओं) का हल ढूंढ रही है मगर वह यह भूल जाती है कि उसका कोई मालिक भी है, जग का कोई स्वामी भी है और जो हमारे दिलों की हर बात को जानता है। सुनता है। देखता है, बदले के दिन का मालिक है।

**30 मई, 2002 :** अपनी वर्दी में सिपाही ने दुकानदार से कहा, "भाई साहब! आप ने मोज़ा और रूमाल के पैसे कम लिए हैं, मैंने पन्द्रह रुपए वाला मोज़ा लिया है दस वाला नहीं।"

दुकानदारः "हां, भूल हो गयी। आप पांच रुपए और दे दीजिए।"

दबंगई, दादागिरी, बेईमानी और लूट–खसोट से ग्रसित व पीड़ित आज के समाज को ऐसे "सिपाही" की ज़रूरत है।

❐❐❐

## आँखें खुलीं न, वक़्त ने आगाह भी किया

*– डा० श्रीहरि*

हम पैदा हुए साथ, बड़े साथ ही हुये,
कुदरत ने साथ–साथ संवारा हमें–तुम्हें।
गेहूं हमें दिया, तुम्हें पिस्तौल थमा दी,
शीशे में साथ–साथ उतारा हमें तुम्हें।
अपनी जहालतों ने खड़ा भी कहाँ किया,
मिलता कहीं न कोई किनारा हमें तुम्हें।
ऐसे सुना कि जैसे सुना ही नहीं कभी,
मिल्लत ने रोज़–रोज़ पुकारा हमें–तुम्हें।
टुकड़े किए वजूद के रखा जुदा–जुदा,
यारों ने मिलके, अब के भी मारा हमें–तुम्हें।
की भूल तवारीख़ ने, अब तो सही करो,
करता रहा ज़मीर इशारा हमें–तुम्हें।
यारों की इनायत, कि ज़लालत बहुत बड़ी,
हर्गिज़ ये ज़लालत न गवारा हमें–तुम्हें।
ये दहशतें, अ़वाम की फ़िक्रें, तबाहियां,
है रोज़ देखता ये नज़ारा हमें–तुम्हें।
आँखें खुली न, वक़्त ने आगाह भी किया,
काटेगा वक़्त का ये दुधारा हमें–तुम्हें।
क्या–क्या हवा ने डाल दिया, क्या उड़ा लिया,
आँधी ने साथ–साथ बुहारा हमें–तुम्हें।

❐❐❐

विद्यार्थियों के लिये

# याक़ूब अलैहिस्सलाम के बाद

— अहमद अली नदवी

कुछ दिनों बाद याक़ूब अ० का इन्तिक़ाल (निधन) हो गया। उनके मरने (निधन) पर मिस्र वालों को बड़ा दुःख और सदमा पहुँचा बड़े ग़म के साथ उनको दफ़नाया और यह समझा मानों उनका बाप मर गया है।

उनके मरने के कुछ समय बाद यूसुफ़ अ० का इन्तिक़ाल (निधन) हो गया। उनके निधन पर पूरे मिस्र ने दुःख मनाया। ग़म का पहाड़ उन पर टूट पड़ा और वह बहुत रोये।

यूसुफ़ की ताज़ियत (पुर्से) में मिस्र वाले उनके भाईयों के पास जाते तो उनके एहसानों का ज़िक्र करते और रो–रो कर उनसे कहते थे कि आप का भाई नहीं मरा। हमारा भी चाहने प्यार करने वाला भाई हमसे बिछड़ गया है। आज हमने न्याय करने वाला बादशाह खो दिया है। उसने अपने समय साफ़ सुथरा शासन दिया, हमें बड़ी परेशानियों से निकाला हमारे आराम का उसने पूरा ख़याल रखा। उसने जुल्म, अत्याचार समाप्त किया और कमज़ोरों की सदैव सहायता की है। जब भूख से हमारे पड़ोसी देश के लोग मर रहे थे उसने हमें खाना दिया, हमारी सहायता की और हमें भूख से मरने नहीं दिया। हम गुमराह थे उसने हमें सही मार्ग दर्शाया। हम अल्लाह को नहीं पहचानते थे उसने अल्लाह का परिचय कराया। हमारा आख़िरत (परलोक) पर विश्वास और यक़ीन नहीं था, उसकी शिक्षा से हम आख़िरत पर यक़ीन करने लगे। ऐसी विशेषताएँ रखने वाले व्यक्ति को हम कैसे भुला दें। आप उनके परिवार के हैं। आप हमारे लिये वैसे ही इज़्ज़त के हक़दार हैं जैसे वह हमारे लिये थे। यह शहर आप का और हम आपके हैं। आप हमारे लिये वैसे ही रहेंगे जैसे आप अपने भाई के ज़माने में रहे।

बनी इस्राईल में यह बात कुछ दिन तक बाक़ी रही। वह अपनी बातों पर क़ायम भी रहे उन्होंने कनआनियों के एहसानों को माना और उनको इज़्ज़त भी दी। लेकिन उनमें और उनके विचारों में तबदीली (परिवर्तन) आने लगी। उनके कर्म ख़राब हो गये। वह अल्लाह की शिक्षा भुला बैठे, अल्लाह की तरफ़ बुलाना छोड़ दिया और वह दुन्या में पड़ गये। लोग भी उनके लिये बदल गये, अब उनको वह अच्छी नज़र से नहीं देखते थे। यह भी भूल बैठे कि इनके बाप दादा क्या थे। बनी इस्राईल के कर्म बिगड़ गये। अब उनमें नसल (वंश) के सिवा कोई बात नहीं थी जिस पर वह गर्व करते।

लोगों में ईर्ष्या जलन पैदा हो गई। किसी को खुश और धनवान देख नहीं सकते थे। ग़रीबों को ज़लील समझना, उनको छोटा समझना उनकी आदत बन गयी थी।

कनआनियों को विदेशी कहने लगे और कहने लगे कि मिस्र तो मिस्रियों का है। कनआनी मिस्री नहीं हैं। वह तो कनआन से आये थे। यूसुफ़ को तो मिस्र के बादशाह ने ख़रीदा था। उनका मिस्र का प्यार उन का प्रेम उनके एहसानात जो उन्होंने इन पर किये थे बिल्कुल भुला दिये थे।

### मिस्र का फ़िरऔन

अब मिस्र पर फ़िरऔन बादशाहों की हुकूमत आ गई। यह बनी इस्राईल से बेहद कीना (शत्रुता) रखते थे और उनसे नाराज़ रहते थे।

एक सख़्त और ज़ालिम बादशाह मिस्र पर हुकूमत करने आया। वह यह नहीं समझता था कि बनी इस्राईल नबियों की औलादों में से है। यूसुफ़ के घर के हैं और यूसुफ़ के मिस्र और मिस्रियों पर बड़े एहसानात हैं। इसका बदला यह होना चाहिये था कि इनके साथ न्याय होता और इनको वह स्थान दिया जाता जिसके यह मुस्तहिक़ (योग्य) हैं।

लेकिन वह बनी इस्राईल के मुक़ाबले क़िबतियों को आदर देता। वह बनी इस्राईल को एक क़ौम और क़िबतियों को एक दूसरी क़ौम समझता था। वह समझता था कि क़िबती बादशाहों के ख़ानदान से सम्बन्ध रखते हैं और बनी इस्राईल गुलामों की क़ौमों में से हैं। फ़िरऔन बनी इस्राईल से सेवकों और गुलामों का सा मामला करता। उनको ख़िदमत करने वाला जानवर समझता था और कहता जैसे जानवरों को रोज़ का रोज़ खाने को दिया जाता है वैसे ही इनको भी मिलना चाहिए। फ़िरऔन बड़ा ज़ालिम बादशाह था। उसको बड़ा घमण्ड था। वह अपने सिवा किसी को कुछ नहीं समझता था। वह अपने को खुदा (भगवान) समझता था। उसके बड़े–बड़े महल थे उसके नीचे बहने वाली

नहरें थी और उसको उन पर बड़ा घमण्ड था। वह कहा करता कि यह सब चीज़ें मेरे लिये हैं, मेरे आराम के लिये हैं।

वह चाहता था उसके देश के वासी उसको भगवान जानें, उसकी पूजा करें तथा उसे सजदा करें। वह अपने को बाबुल शहर के बादशाह नमरूद का जानशीन समझता था। वह किसी को अपने से बढ़ते देखता तो उसको क्रोध और गुस्स आता। बनी इस्राईल के दिल में ईमान और अल्लाह पर यक़ीन था। वह अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत तथा किसी के सामने अपने सर को झुकाना स्वीकार नहीं कर सकते थे। इसलिये उन्होंने फ़िरऔन के आगे सर झुकाने से साफ़ इन्कार कर दिया। उनके इन्कार से फ़िरऔन का गुस्सा और क्रोध और बढ़ गया।

### बच्चों का क़त्ल

एक ज्योतिषी क़िबती ने फ़िरऔन से आकर कहा कि बनी इस्राइल में ऐसा एक लड़का पैदा होगा जो तुम्हारी बादशाहत व सल्तनत की समाप्ति का कारण बनेगा। इस ख़बर ने फ़िरऔन को पागल कर दिया।

उसने उसी समय अपनी पुलिस को यह आदेश दिया कि वह शहर में पता लगाये और जैसे ही बनी इस्राईल में किसी लड़के की सूचना मिले, शीघ्र वहाँ जाये और उस बच्चे को मार डाले वह मूर्ख समझता था कि वह भगवान है। उसको इख़्तियार है जिसको चाहे मारे और जिसको चाहे छोड़ दे। हज़ारों बच्चों को उनके माता–पिता के सामने क़त्ल कर दिया। बनी इस्राईल में जिस दिन किसी बच्चे का जन्म होता उस दिन उन पर ग़म के पहाड़ टूट पड़ते और रोना–पीटना मच जाता। हर आदमी एक दूसरे से तअ़ज़ियत करता। एक एक दिन में सैकड़ों बच्चे ज़ब्ह कर दिये जाते। फ़िरऔन ने बड़ा अंधेर मचा रखा था। एक क़बीले के लोगों को कमज़ोर करता। उनके बच्चों को क़त्ल करवाता और उनकी औरतों को ज़िन्दा छोड़ देता था। बड़ा फ़साद (झगड़ा) फैलाने वालों में से था।

### मूसा अलैहिस्सलाम का जन्म

अल्लाह ने चाहा था कि वह बात होकर रहे जिससे फ़िरऔन डरता और जिससे वह बचना चाहता है।

उस बच्चे का जन्म हुआ जिसके ज़रिये अल्लाह ने बनी इस्राईल की ख़लासी लिख दी थी।

उस का जन्म हुआ जिसके ज़रिये अल्लाह ने फ़िरऔनी शासन की समाप्ति लिख दी थी।

उस का जन्म हुआ जिसके ज़रिये अल्लाह ने लोगों को अंधकार से रोशनी में लाना लिख दिया था।

फ़िरऔन और उसकी फ़ौज के न चाहते हुए भी मूसा बिन इमरान का जन्म हुआ।

पुलिस के न चाहते हुए भी उन्हीं के आस–पास मूसा ने तीन माह गुज़ार दिये और उनको इसकी भनक भी नहीं लगी।

### नील में

पुलिस की खोज और फिर उनका पता चल जाने के भय से मूसा की माँ बड़ी परेशान थीं और डर रही थीं कि यह प्यारा सा बच्चा उनके हत्थे न चढ़ जाये। ऐसी हालत (स्थिति) में उनका ऐसा सोचना स्वाभाविक था। उनको चिन्ता थी कि इस बच्चे को कहाँ और कैसे बचायें।

पुलिस सूंघती फिर रही है, उसको पता चल गया तो क्या होगा ? यह सोचकर वह डर जाया करती थी।

अल्लाह ने मूसा की माँ के दिल में यह डाल दिया कि मूसा को एक संदूक में रखकर नील में डाल दें। एक मां के लिये बच्चे को नील में डाल देने की बड़ी परीक्षा थी। वह सोचने लगी कि संदूक़ पता नहीं कहां जाये। संदूक में बच्चा भूखा–प्यासा रहेगा, कौन उसको दूध पिलायेगा और कैसे वह संदूक़ में सांस लेगा। ऐसा न हो कि संदूक़ ही में मर जाये। इस प्रकार की बातें उनके दिमाग़ में आती रहीं हर मां अपने बच्चे के लिये ऐसा ही सोचती है।

उन्होंने अल्लाह पर भरोसा किया और सोच लिया कि संदूक़ में घर से ज़ियादा सुरक्षित रहेगा। यहाँ तो पुलिस पीछे पड़ी है। वह तो बच्चों की दुश्मन है। मूसा की मां ने वही किया जिसको करने का अल्लाह ने उनको आदेश दिया था। उन्होंने मूसा को संदूक़ में रखा और संदूक़ नील में डाल दिया। मूसा को नील में डालते समय थोड़ी परेशानी हुई लेकिन अल्लाह पर पूरा भरोसा किया और सब्र किया।

हमने मूसा की मां को वहीय् की कि "मूसा को दूध पिलाती रहे, पालती रहे और जब डर महसूस करें निश्चिंत होकर उसको दरिया में डाल दे। तुम डरना और ग़मग़ीन न होना। हम इनको फिर तुम्हारे पास लौटा देंगे और इनको हम रसूल बना देंगे।

### फ़िरऔन के महल में

फ़िरऔन के समुद्र के किनारे बहुत से महल थे। हर एक में वह बारी–बारी से तफ़रीह के लिये जाता था। एक दिन वह साहिल (नदी तट) पर तफ़रीह कर रहा था। उसके साथ उसकी मलिका (रानी) भी थी। दोनों तफ़रीह कर रहे थे। अचानक उन दोनों की नज़र संदूक़ पर पड़ी। मौजें उससे खेल रही थीं मानो उस को प्यार कर रही हैं। मलिका ने फ़िरऔन से कहा कि आप वह संदूक़ देख रहे हैं ? फ़िरऔन ने कहा कि नील में संदूक़ कहां है? वह

शेष पृष्ठ 19 पर

हिन्दी जानने वालों के लिये (पहला पाठ)

# आओ उर्दू सीखें

— इदा

**भूमिका** : भाषा का अस्तित्व पहले है। अपने मन की बात दूसरे को बताने के लिये भाषा आविष्कृत (ईजाद) हुई, जो शब्द या शब्दों का समूह है, फिर भाषित बातों को सुरक्षित रखने एवं अनुपस्थित व्यक्ति तक इसे पहुंचाने हेतु भाषा की लिपी का आविष्कार हुआ जिसके वर्तमान रूप तक पहुंचने की लम्बी तथा रोचक कहानी है अब नियम यह है कि कोई भी भाषा सीखने में उसकी लिपी ही से उसका पाठ आरंभ किया जाता है अतः हम भी उर्दू लिपी से इस पाठ का आरंभ करते हैं। भाषाओं का ज्ञान रखने वाले जानते हैं कि हर भाषा के अक्षरों का आधार उस भाषा में पैदा होने वाली ध्वनियों पर है और चूँकि उर्दू भाषा कई भारतीय भाषाओं के मेल से उत्पन्न हुई है अतः उर्दू भाषा की लिपी में जहाँ अ़रबी की विशेष ध्वनियों के लिये अक्षर हैं वहीं फ़ारसी, और हिन्दी भाषा की विशेष ध्वनियों तथा उनके लिये अक्षर विद्यमान हैं।

उर्दू लिपी के अक्षर फ़ारसी से लिये गये हैं, फ़ारसी तथा अरबी अक्षरों में को अधिक अंतर नहीं है अतः उर्दू लिपी प लेने वाला तनिक ध्यान दे तो चाहे अर्थ जाने परन्तु, फ़ारसी तथा अरबी दोनों प सकता है। यही कारण है कि उर्दू वा थोड़े से पथ प्रदर्शन पर कुर्आन का पा सरलता पूर्वक कर सकता है।

हम हिन्दी द्वारा उर्दू सीखने के पा चलाएंगे अतः डाइरेक्ट मैथड न अप कर पहले हिन्दी लिखेंगे फिर उस समस्वर उर्दू लायेंगे।

## हिन्दी उर्दू व्यंजन अक्षरों के रूप

(जिन अक्षरों की उर्दू में आवश्यकता नहीं उनको छोड़कर)

| हिन्दी | उर्दू | हिन्दी | उर्दू | हिन्दी | उर्दू | हिन्दी | उर्दू | हिन्दी | उर्दू |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| अ | ا | छ | چھ | ढ | ڈھ | प | پ | र | ر |
| क | ک | ज | ج | त | ت | फ | پھ | ल | ل |
| ख | کھ | झ | جھ | थ | تھ | ब | ب | व | و |
| ग | گ | ट | ٹ | द | د | भ | بھ | श | ش |
| घ | گھ | ठ | ٹھ | ध | دھ | म | م | स | س |
| च | چ | ड | ڈ | न | ن | य | ی | ह | ہ ھ |

## उर्दू के विशेष अक्षर और उनकी हिन्दी

| उर्दू | हिन्दी | उर्दू | हिन्दी | उर्दू | हिन्दी | उर्दू | हिन्दी | उर्दू | हिन्दी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| ث | स | ح | ह़ | خ | ख़ | ذ | ज़ | ظ | ज़ |
| ص | स | ض | ज़ | ط | त | ز | ज़ | ع | अ़ |
| غ | ग़ | ف | फ़ | ق | क़ | | | | |

हिन्दी भाषा में जब कोई उर्दू शब्द उक्त अक्षरों वाला आ जाता है तो उक्त रूप में ही लिखने का चलन है, परन्तु जब अर भाषा हिन्दी में लिखनी हो तो शून्य द्वारा सामान्य रूप में विभिन्नता लाएंगे जैसा कि आरम्भ के अंकों में बताया जा चुका है अं भविष्य में भी बताया जाएगा।

❑❑❑

# नारी का कर्तव्य

*– मुसअ़ब उसमान क़ुरैशी*

समाज केवल जनसंख्या का नाम नहीं बल्कि मानवीय सम्बन्धों के खण्डित ़प से संगठित होने की दशा में जो ़थति सामने आती है उसका नाम वास्तव समाज है और एक संपूर्ण पवित्र समाज ़सी समय कहलाएगा जब उसमें पुरुष व ़्री के सम्बंध की नीव भी पवित्रता पर ़खी गई हो।

जिस प्रकार यह सम्भव नहीं कि एक ़र्ण समाज की कल्पना स्त्री के बिना कर ़कें उसी प्रकार हम यह भी नहीं सोच ़कते कि समाज के कल्याण और उत्थान स्त्री को कोई महत्व न दें। क्योंकि यह ़ात न्याय और वास्तविकता के विरुद्ध ़। जिस प्रकार यह असम्भव है कि पुरुष ़ौर स्त्री के बिना दुन्या बढ़ सकती है ़सी प्रकार यह भी असम्भव है कि समाज ़ उत्थान से नारी को अलग कर दिया ़ाय और यह समझा जाए कि समाज ़पने उत्थान के राजमार्ग पर चलता ़हेगा। वास्तव में यह एक सपने से ज़्यादा नहीं। स्त्री हमारे समाज के लिये ़क अटूट अंग के प्रकार है। इस लिए ़ावश्यकता है इस बात की कि हमारी ़ारियाँ अपनी इस महत्ता के मद्दे नज़र ़पने कर्तव्य का पूरा पूरा और भली भांति ़म्भीरता के साथ ध्यान रखें और उसका ़र्णतः पालन करने का प्रयास करें ताकि ़क उज्जवल समाज सामने आ सके।

एक नारी के कान्धों पर केवल इतनी ़ी ज़िम्मेदारी नहीं है कि वह मानव समाज ़ो मानव दे बल्कि उसका यह भी कर्तव्य ़ कि वह उनका उचित स्वभाव बनाने में ़पना पूर्ण योगदान दे तथा उनको भला ़ानुस बनाकर अपने समाज को अर्पित करे। जहां तक आदम की औलाद के बढ़ने का प्रश्न है तथा उसके बाक़ी रहने का तो वास्तव में हर मनुष्य इस बात का इच्छुक नज़र आता है कि उसका नाम चले। उसका ख़ानदान बाक़ी रहे तथा उसमें बढ़ौत्री हो। इस से उसका कोई सम्बन्ध नहीं कि उसका वास्तविकता में दृष्टिकोण क्या है। और इस महत्वपूर्ण कार्य को दुन्या का प्रत्येक मनुष्य पूरा कर रहा है। परन्तु एक मुस्लिम घराना और एक मुस्लिम नारी का जहां तक इस कार्य से सम्बन्ध है उसका मस्तिष्क उसके विचार और उसकी नियत सब कुछ बिल्कुल प्रथक है। अगर नहीं है तो उसको अपने कर्तव्य के प्रति सबसे प्रथक होना चाहिए। केवल किसी खानदान को चलाने और किसी नाम को शेष रखने की जिम्मेदारी ही उसको नहीं सौंपी गई है बल्कि उसका यह भी कर्तव्य है कि वह अपनी गोद में पलने वाली संतान की ऐसी देखरेख करे कि वह बड़ी होकर अपने समाज के प्रति पवित्र मन हों। पुन्य और पुन्यकार्यों की ओर उनका झुकाव हो। पाप और दुष्ट कार्यों से उनको घृणा हो। उनका विनाश उसका लक्ष्य हो। वह अपने से अधिक आयु वालों का आदर करने वाला और अपने से कम आयु वालों के प्रति अच्छे स्वभाव वाला हो। वह अपनी तर्बियत से उसके अन्दर सहानुभूति, व प्रेम के ऐसे भाव भर दे जो किसी भी समय पर और किसी के साथ भी घृणा व रंजिश का व्यवहार न कर सके। उसके हाथ अत्याचार करने के लिए नहीं बल्कि अत्याचार को जड़ से समाप्त करने के लिए उठे। वह किसी का अधिकार हड़पने वाला नहीं बल्कि बढ़कर अधिकार देने वाला हो। मानवाधिकार का रखवाला हो। बुलन्द हिम्मत और कठिन परिश्रम उसकी पहचान हो। वह वास्तव में केवल अपने घर के लिए ही नहीं बल्कि अपने समाज के लिए वह मशीन के कलपुर्जे समान हों जिसके बिना समाज एक कदम भी आगे की ओर बढ़ ही न सके।

एक नारी के लिये अपनी संतान में यह खूबियां पैदा करना कोई कठिन कार्य नहीं है यदि वह अपने कर्तव्य को गम्भीरता से समझे।

एक बात यह भी अनिवार्य है कि लड़के और लड़की की देखरेख में कोई अंतर न किया जाय। यह सोचना कि लड़की पराया घर बसायेगी उसको हर प्रकार से दूसरे घर के योग्य बनाया जाये और इसके विपरीत लड़का अपने ही घर में रहेगा उसको बिल्कुल आवारा छोड़ देना कि इससे इज़्ज़त को कोई ख़तरा नहीं है, यह बात संतान के साथ अन्याय, समाज के साथ धोखा और अपने कर्तव्य के प्रति अति अनुचित व अयोग्य होगी।

❐❐❐

## अल्लाह से बारिश मांगने की दुआ

अल्लाहुम्म असक़िना ग़ैसन मुग़ीसन मरीअन नाफ़िअ़न ग़ैर ज़ार्रिन आ़जिलन ग़ैर आजिलिन।

ऐ अल्लाह हमको ऐसी बारिश दे जो ख़ूब बरसने वाली और हमारी आवश्यकताएं पूरी करने वाली हो, रुचिकर लाभदायक हो, हानिकारक न हो, जल्दी आए देर से न आए।

❐❐❐

# भ्रष्टाचार एक कलंक

*– मुहम्मद अली जौहर*

आज के युग में संसार अनेक विकास कर चुका है और समाज अपनी सर्वोत्तम श्रेणी पर पहुँच चुका है। समाज में जहाँ अनेक अच्छाईयों, प्रेम, भाईचारे, न्याय और अहिंसा आदि का पाठ पढ़ाया जाता है और समाज उन्नति की ओर गतिमान है वहीं पर कुछ बातें ऐसी पाई जाती हैं जो मानवता की नींव को खोखला और मानवता के नाम पर एक कलंक की भांति उजागर होती हैं इनमें सबसे महत्वपूर्ण भूमिका भ्रष्टाचार ने निभायी है जिससे ऐसी बुराईयां फैली हैं कि समाज ने उनकी कभी कल्पना भी नहीं की थी। बिना परिश्रम किये हुए विश्रामपूर्वक जीवन व्यतीत करने और धन–दौलत के लोभ में आज मानव भ्रष्टाचार के दलदल में जा फंसा है भ्रष्टाचार आम मनुष्यों में ही नहीं बल्कि रक्षकों, कर्मचारियों और अधिकारियों आदि में भी फैल चुका है जो रिश्वत, सूद ब्याज व्याभिचार और हत्या आदि के रूप में उजागर होता है जिसका उदाहरण आप अपने आस–पास दृष्टि दौड़ा कर देख सकते हैं यदि आप अपने किसी रोगी को किसी सरकारी चिकित्सालय में लेकर जायें तो वहां के कर्मचारियों की आप जब तक जेबें गर्म नहीं कर देंगे वे आपके रोगी पर ध्यान नहीं देंगे। अगर आप किसी बड़े अधिकारी अथवा आफीसर से मिलना चाहते हैं तो अधिकतर ऐसा होता है कि उसका द्वारपाल या सेक्रेटरी इस प्रकार के बहाने बना कर आपको टालने की चेष्टा करते हैं कि साहब घर पर नहीं हैं या साहब थोड़ी देर पहले निकल गये हैं परन्तु अगर आप उसकी चाय काफी का प्रबन्ध कर दें तो वही द्वारपाल या सेक्रेटरी उस अधिकारी से मिलने में आपकी सहायता करता है और आगे के लिए भी आमंत्रित करता है अधिकारी अपना फ़र्ज सही अदा नहीं करते और रक्षक देश की दशा से वाक़िफ़ नहीं हैं अगर एक भाई दूसरे भाई के शव को पोस्टमार्टम के पश्चात जल्दी प्राप्त करना चाहता है ताकि अन्तिम क्रिया की जा सके तो अब और देर होती है और यहाँ भी घूस देना पड़ता है। आज भ्रष्टाचार समाज में अपनी जड़ें मज़बूत कर रहा है और समाज में से कोई आवाज़ कोई क्रान्ति इसके खिलाफ़ नहीं उठती समाज में एक पाप पनप रहा है। इस्लाम धर्म के प्रचारक व अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मधुर वाणी में इस पाप के करने वाले के विषय में ये कहा जा सकता है कि "रिश्वत लेने वाला और देने वाला दोनों नरक में हैं।" इस्लाम धर्म में निर्णय हो चुका है रिश्वत लेने वाला और देने वाला दोनों दोज़ख़ में जायेंगे। इसी प्रकार सूद के बारे में कुरआ़ने करीम में आया है –

अनुवाद : "अल्लाह तबारक व तआ़ला ने बैअ़ (व्यापार) को हलाल किया है और सूद को हराम किया है" और एक हदीस शरीफ़ में आया है कि जो सूद खाते हैं वो अपने पेट में अग्नि भरते हैं। इसी प्रकार हत्या करने से रोका गया है और उसका दण्ड भी बड़ा कठिन बताया है। एक हदीस का तात्पर्य यह है कि अगर कोई मनुष्य किसी मनुष्य की नाहक़ हत्या कर दे तो उस मानव को दण्डित रूप में क़ियामत अर्थात महाप्रलय तक इसी प्रकार क़त्ल किया जाता रहेगा और एक हदीस शरीफ़ में आया है कि –

अनुवाद : "जिसने किसी की जान बूझ कर नाहक़ हत्या की तो उसने कुफ्र किया" और कुरआने करीम में आया है कि –

अनुवाद : "ज़मीन में इस्लाह के पश्चात फ़साद (भ्रष्टाचार) न फैलाओ आज के युग में इस नासूर रोग को समाप्त करना अत्यन्त आवश्यक है आप एक क्षण के लिए सोचिए कि सरकारी चिकित्सालय के डाक्टरों, कर्मचारियों, अधिकारियों और द्वारपाल की क्या ज़िम्मेदारी है क्या इनकी ज़िम्मेदारी यह है कि समय पर कार्य न करें? क्या द्वारपाल को चाहिए कि वह अपने मालिक के मिलने वालों को वापिस लौटा दे? क्या पोस्टमार्टम वालों को चाहिए कि वह ऐसे कार्य करें जिनसे समाज कठिनाई में पड़ जाये और मनुष्यों को अपना जीवन अभिशाप नज़र आने लगे।

आइये आज हम सब प्रण करें कि आने वाली पीढ़ी और समाज के सुधार और उद्धार के लिए कुरआन व हदीस से ज्योति लेकर इस भ्रष्टाचार के वृक्ष को जला कर भस्म कर देंगे और समाज को एक बार फिर पहले जैसा बनाने की चेष्टा करेंगे – अल्लाह तआ़ला तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाये । (आमीन)

❑❑❑

***बड़े से बड़ा वली जो सहाबी न हो कम से कम दर्जे के सहाबी के बराबर नहीं हो सकता।***

# अंतर्राष्ट्रीय समाचार

*मुईद अशरफ़ नदवी*

● **पा**किस्तान के भूतपूर्व क्रिकेट ब्तान और तहरीके इंसाफ़ के संचालक ुहम्मद इमरान खाँ ने कहा है कि हम ेश से पुरानी शासन व्यवस्था समाप्त रना चाहते हैं। देश में अव्यवस्था, अन्याय ूर्व शासकों की पैदा की हुई है। उन्होंने हा कि हमारी तमाम पालिसीयां दूसरे ेशों के आधीन हो चुकी हैं। जब तक ेश से शोषणकारी व्यवस्था समाप्त नहीं ोगी, ग़रीबी, महंगाई, बेरोज़गारी दूर नहीं ो सकती। उन्होंने कहा कि हमारे भाग्य े फ़ैसले इस्लामाबाद के बजाए वाशिंगटन ं होते हैं। जिन लोगों ने क़ौम के अरबों पये हड़प लिये, वह आज बाहर घूम रहे ं और छोटे जुर्म करने वाले निर्धन लोगों ो जेलों में बन्द रखा गया है।

● बी०बी०सी० लन्दन के समाचार उद्घोषक आसिफ़ जीलानी ने अहंकारी इसराईल के सामने अमरीका बेबस क्यों है। इस सवाल के जवाब में बताया कि अमरीका में यहूदी वोट शक्तिशाली अमरीकी लाबी है। पूरे संसार में जितने यहूदी रहते हैं उनकी आधी संख्या अमरीका में आबाद है। अमरीका में 28 करोड़ की कुल आबादी में यहूदियों की संख्या 60 लाख है। उसी प्रकार ब्रिटेन में कुल यहूदियों की जनसंख्या चार लाख बताई जाती है और पिछले तीस साल से यह संख्या सुनने में आ रही है, परन्तु इसके बावजूद स्थानीय काउंसलरों और पार्लियामेन्ट के सदस्यों में यहूदियों की संख्या बराबर बढ़ रही है। इस में भी यहूदियों की एक साज़िश है ताकि दुश्मन सही संख्या का जानकार न रहे।

आसिफ़ जीलानी अमरीका की पक्षपात वाली पालिसी को दर्शाते हुए कहते हैं कि अमरीका और इसराईल के बीच विशेष संबंधों का आरम्भ द्वितीय महायुद्ध के बाद से हुआ जब अमरीकी राष्ट्रपति ट्रूमैन ने 1945 में फ़िलिस्तीन के विभाजन की योजना प्रस्तुत की जिसमें फ़िलिस्तीन के एक बड़े भाग पर इसराईल देश की स्थापना का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया था और योरोशलम को संयुक्त राष्ट्र की निगरानी में देने की बात कही गयी थी। अमरीका द्वितीय महायुद्ध के बीच यूरोप में जो यहूदी बेघर हो गये थे उन में से एक लाख यहूदियों को फ़िलिस्तीन में बसाना चाहता था। ब्रिटेन ने जिसके आधीन फ़िलिस्तीन था इसका कुछ विरोध किया था परन्तु यहूदियों ने जब यक्तर्फा तौर पर इसराईल देश की स्थपना की घोषणा की और इसके आधे घंटे के पश्चात अमरीका ने इस देश को मान्यता दे दी, उस समय ब्रिटेन बल्कि सारा संसार चकित रह गया। इसके दो वर्ष बाद अमरीका के दबाव में संयुक्त राष्ट्र के प्रस्ताव के अनुसार फ़िलिस्तीन का विभाजन हुआ और इसराईल देश स्थापित हो गया। यही वह कारण है कि अमरीकी राष्ट्रपति ट्रूमैन से लेकर हर अमरीकी राष्ट्रपति उसको अपन राज्य समझता है और पिछले पचास वर्षों में अमरीका ने इसराईल को दो खरब डालर से भी अधिक की सहायता दे चुका है। एक समाचार के अनुसार इसराईल की आधी से अधिक जनसंख्या अमरीकी नागरिकता रखती है।

● लखनऊ से प्रकाशित होने वाले हिन्दी समाचार पत्र राष्ट्रीय सहारा के एक समाचार के अनुसार राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आर०एस०एस०) ने इस महीने देश का अगला राष्ट्रपति बनने की प्रतीक्षा कर रहे विख्यात वैज्ञानिक ए.पी.जे. अब्दुल कलाम की जमकर तारीफ की। आर०एस०एस० के वरिष्ठ नेता मोहन राव भागवत ने अपने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि अब्दुल कलाम 'मुस्लिम हिन्दू' और 'राष्ट्रवादी मुस्लिम' हैं, क्योंकि वे अपने भाषणों में हिन्दू धर्मग्रंथों का उल्लेख करते हैं। भागवत ने कहा कि अब्दुल कलाम एक असली राष्ट्रवादी मुस्लिम हैं। वह हर रोज पांच बार नामज पढ़ते हैं, लेकिन वे अपने भाषणों में 'भगवत्गीता' और 'महाभारत' का भी उल्लेख करते हैं। उन्होंने कहा कि अब्दुल कलाम अपने आपको 'मोहम्मदी' (मुस्लिम) हिन्दू बताते हैं ओर आर० एस० एस० इससे सहमत है कि भारत को अब्दुल कलाम जैसे राष्ट्रवादी मुस्लिमों की आवश्यकता है। ❐❐❐

> मुसलमान वह है कि जिस से एक बार भेंट करे तो मन दोबारा भेंट करने की मांग करे।